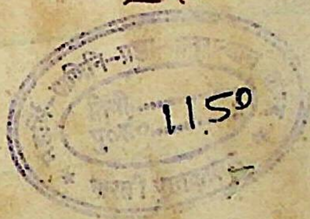
७५

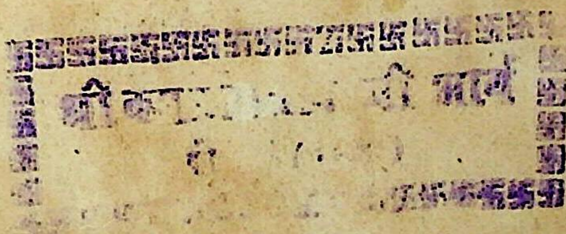
कं

ठिनीयम्

पु. सं. ६
व्या. ६

२५८३७





ओ३म्

अष्टकं पाणिनीयम्

(अष्टाध्यायी)

श्रीमन्महर्षिपाणिनिमुनिप्रणीतम्

नानाग्रन्थेभ्यः संशोध्य

अजमेरस्थ-वैदिकयन्त्रालये

मुद्रितम्.

पञ्चमावृत्तौ ५०००	संवत् १९७१ श्रावण	मूल्य =)॥ डाकव्यय)॥



॥ ओ३म् ॥

अथाष्टाध्यायी मूल प्रारम्भः

अथ शब्दानुशासनम् ॥

अइउण् ॥ १ ॥ ऋऌक् ॥ २ ॥ एओङ् ॥ ३ ॥
ऐऔच् ॥ ४ ॥ हयवरट् ॥ ५ ॥ लण् ॥ ६ ॥
ञमङणनम् ॥ ७ ॥ झभञ् ॥ ८ ॥ घढधष् ॥ ९ ॥
जबगडदश् ॥ १० ॥ खफछठथचटतव् ॥ ११ ॥
कपय् ॥ १२ ॥ शषसर् ॥ १३ ॥ हल् ॥ १४ ॥

इत्यक्षरसमाम्नायः ॥

अथ प्रथमाध्यायारम्भः ॥

तत्र प्रथमपादारम्भः ॥

वृद्धिरादैच् ॥ १ ॥ अदेङ् गुणः ॥ २ ॥ इको गुणवृद्धी ॥ ३ ॥ न धातुलोप आर्द्धधातुके ॥ ४ ॥ क्ङिति च ॥ ५ ॥ दीधीवेवीटाम् ॥ ६ ॥ हलोनन्तराः संयोगः ॥ ७ ॥ मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः ॥ ८ ॥ तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम् ॥ ९ ॥ नाज्झलौ ॥ १० ॥ ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम् ॥ ११ ॥ अदसो मात् ॥ १२ ॥ शे ॥ १३ ॥ निपात एकाजनाङ् ॥ १४ ॥ ओत् ॥ १५ ॥

सम्बुद्धौ शाकल्यस्येतावनार्षे ॥ १६ ॥ उञः ॥ १७ ॥ ऊँ ॥ १८ ॥ ईदूतौ च सप्तम्यर्थे ॥ १९ ॥ दाधाघ्वदाप् ॥ २० ॥ आद्यन्तवदेकस्मिन् ॥ २१ ॥ तरप्तमपौ घः ॥ २२ ॥ बहुगणवतुडति सङ्ख्या ॥ २३ ॥ ष्णान्ता षट् ॥ २४ ॥ डति च ॥ २५ ॥ क्तक्तवतू निष्ठा ॥ २६ ॥ सर्वादीनि सर्वनामानि ॥ २७ ॥ विभाषा दिक्समासे बहुव्रीहौ ॥ २८ ॥ न बहुव्रीहौ ॥ २९ ॥ तृतीयासमासे ॥ ३० ॥ द्वन्द्वे च ॥ ३१ ॥ विभाषा जसि ॥ ३२ ॥ प्रथमचरमतयाल्पार्द्धकतिपयनेमाश्च ॥ ३३ ॥ पूर्वपरावरदक्षिणोत्तरापराधराणि व्यवस्थायामसंज्ञायाम् ॥ ३४ ॥ स्वमज्ञातिधनाख्यायाम् ॥ ३५ ॥ अन्तरं बहिर्योगोपसंव्यानयोः ॥ ३६ ॥ स्वरादिनिपातमव्ययम् ॥ ३७ ॥ तद्धितश्चासर्वविभक्तिः ॥ ३८ ॥ कृन्मेजन्तः ॥ ३९ ॥ क्त्वातोसुन्कसुनः ॥ ४० ॥ अव्ययीभावश्च ॥ ४१ ॥ शि सर्वनामस्थानम् ॥ ४२ ॥ सुडनपुंसकस्य ॥ ४३ ॥ नवेति विभाषा ॥ ४४ ॥ इग्यणः सम्प्रसारणम् ॥ ४५ ॥ आद्यन्तौ टकितौ ॥ ४६ ॥ मिदचोन्त्यात्परः ॥ ४७ ॥ एच इग्घ्रस्वादेशे ॥ ४८ ॥ षष्ठी स्थानेयोगा ॥ ४९ ॥ स्थानेन्तरतमः ॥ ५० ॥ उरण् रपरः ॥ ५१ ॥ अलोन्त्यस्य ॥ ५२ ॥ ङिच्च ॥ ५३ ॥ आदेः परस्य ॥ ५४ ॥ अनेकाल्शित्सर्वस्य ॥ ५५ ॥ स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ ॥ ५६ ॥ अचः परस्मिन्पूर्वविधौ ॥ ५७ ॥ न पदान्तद्विर्वचनवरेयलोपस्वरसवर्णानुस्वारदीर्घजश्चर्विधिषु ॥ ५८ ॥ द्विर्वचनेऽचि ॥ ५९ ॥ अदर्शनं लोपः ॥ ६० ॥ प्रत्ययस्य लुक्श्लुलुपः ॥ ६१ ॥ प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम् ॥ ६२ ॥ न लुमताङ्गस्य ॥ ६३ ॥ अचोन्त्यादिटि ॥ ६४ ॥ अलोन्त्यात्पूर्व उपधा ॥ ६५ ॥ तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य ॥ ६६ ॥ तस्मादित्युत्तरस्य ॥ ६७ ॥ स्वं रूपं शब्दस्याशब्दसंज्ञा ॥ ६८ ॥ अणुदित्सवर्णस्य चाप्रत्ययः ॥ ६९ ॥ तपरस्तत्कालस्य ॥ ७० ॥ आदिरन्त्येन सहेता ॥ ७१ ॥ येन विधिस्तदन्तस्य ॥ ७२ ॥ वृद्धिर्यस्याचामादिस्तद् वृद्धम् ॥ ७३ ॥ त्यदादीनि च ॥ ७४ ॥ एङ् प्राचां देशे ॥ ७५ ॥ *

इति प्रथमाध्यायस्य प्रथमः पादः ॥ १ ॥

* अथदीर्घासर्वादीनिमित्तस्मान्नव ॥

द्वितीयपादारम्भः ॥

गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित् ॥ १ ॥ विज इट् ॥ २ ॥ विभाषोर्णोः ॥ ३ ॥ सार्वधातुकमपित् ॥ ४ ॥ असंयोगाल्लिट् कित् ॥ ५ ॥ इन्धिभवतिभ्याञ्च ॥ ६ ॥ मृडमृदगुधकुषक्लिशवदवसः क्त्वा ॥ ७ ॥ रुदविदमुषग्रहिस्वपिप्रच्छः सँश्च ॥ ८ ॥ इको झल् ॥ ९ ॥ हलन्ताच्च ॥ १० ॥ लिङ्सिचावात्मनेपदेषु ॥ ११ ॥ उश्च ॥ १२ ॥ वा गमः ॥ १३ ॥ हनः सिच् ॥ १४ ॥ यमो गन्धने ॥ १५ ॥ विभाषोपयमने ॥ १६ ॥ स्थाघ्वोरिच्च ॥ १७ ॥ न क्त्वा सेट् ॥ १८ ॥ निष्ठा शीङ्स्विदिमिदिक्ष्विदिधृषः ॥ १९ ॥ मृषस्तितिक्षायाम् ॥ २० ॥ उदुपधाद्भावादिकर्मणोरन्यतरस्याम् ॥ २१ ॥ पूङः क्त्वा च ॥ २२ ॥ नोपधात्थफान्ताद्वा ॥ २३ ॥ वञ्चिलुञ्च्यृतश्च ॥ २४ ॥ तृषिमृषिकृशेः काश्यपस्य ॥ २५ ॥ रलो व्युपधाद्धलादेः सँश्च ॥ २६ ॥ ऊकालोऽज्झ्रस्वदीर्घप्लुतः ॥ २७ ॥ अचश्च ॥ २८ ॥ उच्चैरुदात्तः ॥ २९ ॥ नीचैरनुदात्तः ॥ ३० ॥ समाहारः स्वरितः ॥ ३१ ॥ तस्यादित उदात्तमर्द्धह्रस्वम् ॥ ३२ ॥ एकश्रुति दूरात्सम्बुद्धौ ॥ ३३ ॥ यज्ञकर्मण्यजपन्यूङ्खसामसु ॥ ३४ ॥ उच्चैस्तरां वा वषट्कारः ॥ ३५ ॥ विभाषा छन्दसि ॥ ३६ ॥ न सुब्रह्मण्यायां स्वरितस्य तूदात्तः ॥ ३७ ॥ देवब्रह्मणोरनुदात्तः ॥ ३८ ॥ स्वरितात्संहितायामनुदात्तानाम् ॥ ३९ ॥ उदात्तस्वरितपरस्य सन्नतरः ॥ ४० ॥ अपृक्त एकाल् प्रत्ययः ॥ ४१ ॥ तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः ॥ ४२ ॥ प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्ज्जनम् ॥ ४३ ॥ एकविभक्ति चापूर्वनिपाते ॥ ४४ ॥ अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् ॥ ४५ ॥ कृत्तद्धितसमासाश्च ॥ ४६ ॥ ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य ॥ ४७ ॥ गोस्त्रियोरुपसर्ज्जनस्य ॥ ४८ ॥ लुक्तद्धितलुकि ॥ ४९ ॥ इद्गोण्याः ॥ ५० ॥ लुपि युक्तवद्व्यक्तिवचने ॥ ५१ ॥ विशेषणानाञ्चाजातेः ॥ ५२ ॥ तदशिष्यं संज्ञाप्रमाणत्वात् ॥ ५३ ॥ लुब्योगाऽप्रख्यानात् ॥ ५४ ॥ योगप्रमाणे च तदभावे दर्शनं स्यात् ॥ ५५ ॥ प्रधानप्रत्ययार्थवचनमर्थस्यान्यप्रमाणत्वात् ॥ ५६ ॥ कालोपसर्जने च तुल्यम् ॥ ५७ ॥ जात्याख्यायामेकस्मिन्बहुवचनमन्यतरस्याम्

॥ ५८ ॥ अस्मदो द्वयोश्च ॥ ५९ ॥ फल्गुनीप्रोष्ठपदानां च नक्षत्रे ॥ ६० ॥ छन्दसि पुनर्वस्वोरेकवचनम् ॥ ६१ ॥ विशाखयोश्च ॥ ६२ ॥ तिष्यपुनर्वस्वोर्नक्षत्रद्वन्द्वे बहुवचनस्य द्विवचनं नित्यम् ॥ ६३ ॥ सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ ॥ ६४ ॥ वृद्धो यूना तल्लक्षणश्चेदेव विशेषः ॥ ६५ ॥ स्त्री पुंवच्च ॥ ६६ ॥ पुमान् स्त्रिया ॥ ६७ ॥ भ्रातृपुत्रौ स्वसृदुहितृभ्याम् ॥ ६८ ॥ नपुंसकमनपुंसकेनैकवच्चास्यान्यतरस्याम् ॥ ६९ ॥ पिता मात्रा ॥ ७० ॥ श्वशुरः श्वश्र्वा ॥ ७१ ॥ त्यदादीनि सर्वैर्नित्यम् ॥ ७२ ॥ ग्राम्यपशुसंघेष्वतरुणेषु स्त्री ॥ ७३ ॥ *

इति प्रथमाध्यायस्य द्वितीयः पादः ॥ २ ॥

तृतीयपादारम्भः ॥

भूवादयो धातवः ॥ १ ॥ उपदेशेऽजनुनासिक इत् ॥ २ ॥ हलन्त्यम् ॥ ३ ॥ न विभक्तौ तुस्माः ॥ ४ ॥ आदिर्ञिटुडवः ॥ ५ ॥ षः प्रत्ययस्य ॥ ६ ॥ चुटू ॥ ७ ॥ लशक्वतद्धिते ॥ ८ ॥ तस्य लोपः ॥ ९ ॥ यथासङ्ख्यमनुदेशः समानाम् ॥ १० ॥ स्वरितेनाधिकारः ॥ ११ ॥ अनुदात्तङित आत्मनेपदम् ॥ १२ ॥ भावकर्मणोः ॥ १३ ॥ कर्त्तरि कर्मव्यतिहारे ॥ १४ ॥ न गतिहिंसार्थेभ्यः ॥ १५ ॥ इतरेतरान्योन्योपपदाच्च ॥ १६ ॥ नेर्विशः ॥ १७ ॥ परिव्यवेभ्यः क्रियः ॥ १८ ॥ विपराभ्यां जेः ॥ १९ ॥ आङो दोऽनास्यविहरणे ॥ २० ॥ क्रीडोऽनुसंपरिभ्यश्च ॥ २१ ॥ समवप्रविभ्यः स्थः ॥ २२ ॥ प्रकाशनस्थेयाख्ययोश्च ॥ २३ ॥ उदोऽनूर्ध्वकर्मणि ॥ २४ ॥ उपान्मन्त्रकरणे ॥ २५ ॥ अकर्मकाच्च ॥ २६ ॥ उद्विभ्यां तपः ॥ २७ ॥ आङो यमहनः ॥ २८ ॥ समो गम्यृच्छिभ्याम् ॥ २९ ॥ निसमुपविभ्यो ह्वः ॥ ३० ॥ स्पर्द्धायामाङः ॥ ३१ ॥ गन्धनावक्षेपणसेवनसाहसिक्यप्रतियत्नप्रकथनोपयोगेषु कृञः ॥ ३२ ॥ अधेः प्रसहने ॥ ३३ ॥ वेः शब्दकर्मणः ॥ ३४ ॥ अकर्मकाच्च ॥ ३५ ॥ संमाननोत्संजनाचार्यकरणज्ञानभृतिविगणनव्ययेषु नियः ॥ ३६ ॥ कर्तृस्थे चाशरीरे कर्मणि ॥ ३७ ॥ वृत्तिसर्गता-

* गाङ्कुटादिसूत्रादुपधादप्रकृत्तश्छन्दसि त्रयोदश ॥

यनेषु क्रमः ॥ ३८ ॥ उपपराभ्याम् ॥ ३९ ॥ आङ उद्गमने ॥ ४० ॥ वेः पादविहरणे ॥ ४१ ॥ प्रोपाभ्यां समर्थाभ्याम् ॥ ४२ ॥ अनुपसर्गाद्वा ॥ ४३ ॥ अपह्नवे ज्ञः ॥ ४४ ॥ अकर्मकाच्च ॥ ४५ ॥ संप्रतिभ्यामनाध्याने ॥ ४६ ॥ भासनोपसंभाषाज्ञानयत्नविमत्युपमन्त्रणेषु वदः ॥ ४७ ॥ व्यक्तवाचां समुच्चारणे ॥ ४८ ॥ अनोरकर्मकात् ॥ ४९ ॥ विभाषा विप्रलापे ॥ ५० ॥ अवाद्ग्रः ॥ ५१ ॥ समः प्रतिज्ञाने ॥ ५२ ॥ उदश्चरः सकर्मकात् ॥ ५३ ॥ समस्तृतीयायुक्तात् ॥ ५४ ॥ दाणश्च सा चेच्चतुर्थ्यर्थे ॥ ५५ ॥ उपाद्यमः स्वकरणे ॥ ५६ ॥ ज्ञाश्रुस्मृदृशां सनः ॥ ५७ ॥ नानोर्ज्ञः ॥ ५८ ॥ प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः ॥ ५९ ॥ शदेः शितः ॥ ६० ॥ म्रियतेर्लुङ्लिङोश्च ॥ ६१ ॥ पूर्ववत्सनः ॥ ६२ ॥ आम्प्रत्ययवत्कृञोऽनुप्रयोगस्य ॥ ६३ ॥ प्रोपाभ्यां युजेरयज्ञपात्रेषु ॥ ६४ ॥ समः क्ष्णुवः ॥ ६५ ॥ भुजोऽनवने ॥ ६६ ॥ णेरणौ यत्कर्म णौ चेत्स कर्त्ताऽनाध्याने ॥ ६७ ॥ भीस्म्योर्हेतुभये ॥ ६८ ॥ गृधिवञ्च्योः प्रलम्भने ॥ ६९ ॥ लियः संमाननशालीनीकरणयोश्च ॥ ७० ॥ मिथ्योपपदात्कृञोऽभ्यासे ॥ ७१ ॥ स्वरितञितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले ॥ ७२ ॥ अपाद्वदः ॥ ७३ ॥ णिचश्च ॥ ७४ ॥ समुदाङ्भ्यो यमोऽग्रन्थे ॥ ७५ ॥ अनुपसर्गाज्ज्ञः ॥ ७६ ॥ विभाषोपपदेन प्रतीयमाने ॥ ७७ ॥ शेषात्कर्त्तरि परस्मैपदम् ॥ ७८ ॥ अनुपराभ्यां कृञः ॥ ७९ ॥ अभिप्रत्यतिभ्यः क्षिपः ॥ ८० ॥ प्राद्वहः ॥ ८१ ॥ परेर्मृषः ॥ ८२ ॥ व्याङ्परिभ्यो रमः ॥ ८३ ॥ उपाच्च ॥ ८४ ॥ विभाषाऽकर्मकात् ॥ ८५ ॥ बुधयुधनशजनेङ्प्रुद्रुस्रुभ्यो णेः ॥ ८६ ॥ निगरणचलनार्थेभ्यश्च ॥ ८७ ॥ अणावकर्मकाच्चित्तवत्कर्त्तृकात् ॥ ८८ ॥ न पादम्याङ्यमाङ्यसपरिमुहरुचिनृतिवदवसः ॥ ८९ ॥ वा क्यषः ॥ ९० ॥ द्युद्भ्यो लुङि ॥ ९१ ॥ वृद्भ्यः स्यसनोः ॥ ९२ ॥ लुटि च क्लृपः ॥ ९३ ॥ *

इति प्रथमाध्यायस्य तृतीयः पादः ॥ ३ ॥

---

* भूवादयः क्रीडोनुवेःपादम्रियते प्राद्वहस्त्रयोदश ॥

चतुर्थपादारम्भः ॥

आकडारादेका संज्ञा ॥ १ ॥ विप्रतिषेधे परं कार्यम् ॥ २ ॥ यूस्त्र्याख्यौ नदी ॥ ३ ॥ नेयङुवङ्स्थानावस्त्री ॥ ४ ॥ वामि ॥ ५ ॥ ङिति ह्रस्वश्च ॥ ६ ॥ शेषो घ्यसखि ॥ ७ ॥ पतिः समास एव ॥ ८ ॥ षष्ठीयुक्तश्छन्दसि वा ॥ ९ ॥ ह्रस्वं लघु ॥ १० ॥ संयोगे गुरु ॥ ११ ॥ दीर्घश्च ॥ १२ ॥ यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादिप्रत्ययेऽङ्गम् ॥ १३ ॥ सुप्तिङन्तम्पदम् ॥ १४ ॥ नः क्ये ॥ १५ ॥ सिति च ॥ १६ ॥ स्वादिष्वसर्वनामस्थाने ॥ १७ ॥ यचि भम् ॥ १८ ॥ तसौ मत्वर्थे ॥ १९ ॥ अयस्मयादीनि छन्दसि ॥ २० ॥ बहुषु बहुवचनम् ॥ २१ ॥ द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने ॥ २२ ॥ कारके ॥ २३ ॥ ध्रुवमपायेऽपादानम् ॥ २४ ॥ भीत्रार्थानां भयहेतुः ॥ २५ ॥ पराजेरसोढः ॥ २६ ॥ वारणार्थानामीप्सितः ॥ २७ ॥ अन्तर्द्धौ येनादर्शनमिच्छति ॥ २८ ॥ आख्यातोपयोगे ॥ २९ ॥ जनिकर्तुः प्रकृतिः ॥ ३० ॥ भुवः प्रभवः ॥ ३१ ॥ कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् ॥ ३२ ॥ रुच्यर्थानां प्रीयमाणः ॥ ३३ ॥ श्लाघह्नुङ्स्थाशपां ज्ञीप्स्यमानः ॥ ३४ ॥ धारेरुत्तमर्णः ॥ ३५ ॥ स्पृहेरीप्सितः ॥ ३६ ॥ क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः ॥ ३७ ॥ क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म ॥ ३८ ॥ राधीक्ष्योर्यस्य विप्रश्नः ॥ ३९ ॥ प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः पूर्वस्य कर्त्ता ॥ ४० ॥ अनुप्रतिगृणश्च ॥ ४१ ॥ साधकतमङ्करणम् ॥ ४२ ॥ दिवः कर्म च ॥ ४३ ॥ परिक्रयणे सम्प्रदानमन्यतरस्याम् ॥ ४४ ॥ आधारोऽधिकरणम् ॥ ४५ ॥ अधिशीङ्स्थासाङ्कर्म ॥ ४६ ॥ अभिनिविशश्च ॥ ४७ ॥ उपान्वध्याङ्वसः ॥ ४८ ॥ कर्त्तुरीप्सिततमङ्कर्म ॥ ४९ ॥ तथायुक्तं चानीप्सितम् ॥ ५० ॥ अकथितञ्च ॥ ५१ ॥ गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थशब्दकर्माकर्मकाणामणिकर्त्ता स णौ ॥ ५२ ॥ हृक्रोरन्यतरस्याम् ॥ ५३ ॥ स्वतन्त्रः कर्त्ता ॥ ५४ ॥ तत्प्रयोजको हेतुश्च ॥ ५५ ॥ प्राग्रीश्वरान्निपाताः ॥ ५६ ॥ चादयोऽसत्त्वे ॥ ५७ ॥ प्रादयः ॥ ५८ ॥ उपसर्गाः क्रियायोगे ॥ ५९ ॥ गतिश्च ॥ ६० ॥ ऊर्य्यादिच्विडाचश्च ॥ ६१ ॥ अनुकरणञ्चानितिपरम् ॥ ६२ ॥ आदरानादरयोस्सदसती ॥ ६३ ॥ भूषणेऽलम् ॥ ६४ ॥ अन्तरपरिग्रहे ॥ ६५ ॥ कणेमनसी श्रद्धाप्रतीघाते ॥ ६६ ॥

पुरोऽव्ययम् ॥६७॥ अस्तञ्च ॥६८॥ अच्छगत्यर्थवदेषु ॥६९॥ अदोऽनुपदेशे ॥ ७० ॥ तिरोऽन्तर्द्धौ ॥ ७१ ॥ विभाषा कृञि ॥७२॥ उपाजेऽन्वाजे ॥७३॥ साक्षात्प्रभृतीनि च ॥ ७४ ॥ अनत्याधान उरसिमनसी ॥ ७५ ॥ मध्ये पदे निवचने च ॥ ७६ ॥ नित्यं हस्तेपाणावुपयमने ॥ ७७ ॥ प्राध्वं बन्धने ॥७८॥ जीविकोपनिषदावौपम्ये ॥ ७९ ॥ ते प्राग् धातोः ॥ ८० ॥ छन्दसि परेऽपि ॥ ८१ ॥ व्यवहिताश्च ॥ ८२ ॥ कर्मप्रवचनीयाः ॥ ८३ ॥ अनुर्लक्षणे ॥८४॥ तृतीयार्थे ॥ ८५ ॥ हीने ॥८६॥ उपोधिके च ॥८७॥ अपपरी वर्जने ॥ ८८ ॥ आङ्मर्यादावचने ॥ ८९ ॥ लक्षणेत्थम्भूताख्यानभागवीप्सासु प्रतिपर्यनवः ॥ ९० ॥ अभिरभागे ॥ ९१ ॥ प्रतिः प्रतिनिधिप्रतिदानयोः ॥ ९२ ॥ अधिपरी अनर्थकौ ॥ ९३ ॥ सुः पूजायाम् ॥ ९४ ॥ अतिरतिक्रमणे च ॥ ९५ ॥ अपिः पदार्थसम्भावनान्ववसर्गगर्हासमुच्चयेषु ॥ ९६ ॥ अधिरीश्वरे ॥ ९७ ॥ विभाषा कृञि ॥ ९८ ॥ लः परस्मैपदम् ॥ ९९ ॥ तङानावात्मनेपदम् ॥ १०० ॥ तिङ्स्त्रीणि त्रीणि प्रथममध्यमोत्तमाः ॥ १०१ ॥ तान्येकवचनद्विवचनबहुवचनान्येकशः ॥ १०२ ॥ सुपः ॥ १०३ ॥ विभक्तिश्च ॥ १०४ ॥ युष्मद्युपपदे समानाधिकरणे स्थानिन्यपि मध्यमः ॥ १०५ ॥ प्रहासे च मन्योपपदे मन्यतेरुत्तम एकवच्च ॥ १०६ ॥ अस्मद्युत्तमः ॥ १०७ ॥ शेषे प्रथमः ॥ १०८ ॥ परस्सन्निकर्षः संहिता ॥ १०९ ॥ विरामोऽवसानम् ॥ ११० ॥ *

इति प्रथमाध्यायस्य चतुर्थः पादः ॥ ४ ॥

प्रथमाध्यायः समाप्तः ॥ १ ॥

---

* आकडारादेका संज्ञेति सूत्राद्बहुष्वनुप्रतिगणोनुकरणं व्यवहिताश्च तानि नव ॥

अथ द्वितीयाऽध्यायारम्भः ॥

तत्र प्रथमपादारम्भः ॥

समर्थः पदविधिः ॥ १ ॥ सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे ॥ २ ॥ प्राक्कडारात्समासः ॥ ३ ॥ सह सुपा ॥ ४ ॥ अव्ययीभावः ॥ ५ ॥ अव्ययं विभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासम्प्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानुपूर्व्ययौगपद्यसादृश्यसम्पत्तिसाकल्यान्तवचनेषु ॥ ६ ॥ यथासादृश्ये ॥ ७ ॥ यावदवधारणे ॥ ८ ॥ सुप् प्रतिना मात्रार्थे ॥ ९ ॥ अक्षशलाकासंख्याः परिणा ॥ १० ॥ विभाषाऽपपरिबहिरञ्चवः पञ्चम्यां ॥ ११ ॥ आङ्मर्यादाभिविध्योः ॥ १२ ॥ लक्षणेनाभिप्रती आभिमुख्ये ॥ १३ ॥ अनुर्यत्समया ॥ १४ ॥ यस्य चायामः ॥ १५ ॥ तिष्ठद्गु प्रभृतीनि च ॥ १६ ॥ पारेमध्ये षष्ठ्या वा ॥ १७ ॥ संख्या वंश्येन ॥ १८ ॥ नदीभिश्च ॥ १९ ॥ अन्यपदार्थे च संज्ञायाम् ॥ २० ॥ तत्पुरुषः ॥ २१ ॥ द्विगुश्च ॥ २२ ॥ द्वितीयाश्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः ॥ २३ ॥ स्वयं क्तेन ॥ २४ ॥ खट्वा क्षेपे ॥ २५ ॥ सामि ॥ २६ ॥ कालाः ॥ २७ ॥ अत्यन्तसंयोगे च ॥ २८ ॥ तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन ॥ २९ ॥ पूर्वसदृशसमोनार्थकलहनिपुणमिश्रश्लक्ष्णैः ॥ ३० ॥ कर्तृकरणे कृता बहुलम् ॥ ३१ ॥ कृत्यैरधिकार्थवचने ॥ ३२ ॥ अन्नेन व्यञ्जनम् ॥ ३३ ॥ भक्ष्येण मिश्रीकरणम् ॥ ३४ ॥ चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः ॥ ३५ ॥ पञ्चमी भयेन ॥ ३६ ॥ अपेतापोढमुक्तपतितापत्रस्तैरल्पशः ॥ ३७ ॥ स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन ॥ ३८ ॥ सप्तमी शौण्डैः ॥ ३९ ॥ सिद्धशुष्कपक्वबन्धैश्च ॥ ४० ॥ ध्वाङ्क्षेण क्षेपे ॥ ४१ ॥ कृत्यैर्ऋणे ॥ ४२ ॥ संज्ञायाम् ॥ ४३ ॥ क्तेनाहोरात्रावयवाः ॥ ४४ ॥ तत्र ॥ ४५ ॥ क्षेपे ॥ ४६ ॥ पात्रे सम्मितादयश्च ॥ ४७ ॥ पूर्वकालैकसर्वजरत्पुराणनवकेवलाः समानाधिकरणेन ॥ ४८ ॥ दिक्सङ्ख्ये संज्ञायाम् ॥ ४९ ॥ तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च ॥ ५० ॥ सङ्ख्यापूर्वो द्विगुः ॥ ५१ ॥ कुत्सितानि कुत्सनैः ॥ ५२ ॥ पापाणके कुत्सितैः ॥ ५३ ॥ उपमानानि सामान्यवचनैः ॥ ५४ ॥ उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्याप्रयोगे ॥ ५५ ॥

विशेषणं विशेष्येण बहुलम् ॥ ५६ ॥ पूर्वापरप्रथमचरमजघन्यसमानमध्यमध्यमवीराश्च ॥ ५७ ॥ श्रेण्यादयः कृतादिभिः ॥ ५८ ॥ क्तेन नञ्विशिष्टेनानञ् ॥ ५६ ॥ सन्महत्परमोत्तमोत्कृष्टाः पूज्यमानैः ॥ ६० ॥ वृन्दारकनागकुञ्जरैः पूज्यमानम् ॥ ६१ ॥ कतरकतमौ जातिपरिप्रश्ने ॥ ६२ ॥ किं क्षेपे ॥ ६३ ॥ पोटायुवतिस्तोककतिपयगृष्टिधेनुवशावेहद्बष्कयणीप्रवक्तृश्रोत्रियाध्यापकधूर्तैर्जातिः ॥ ६४ ॥ प्रशंसावचनैश्च ॥ ६५ ॥ युवा खलतिपलितवलिनजरतीभिः ॥ ६६ ॥ कृत्यतुल्याख्या अजात्या ॥ ६७ ॥ वर्णो वर्णेन ॥ ६८ ॥ कुमारः श्रमणादिभिः ॥ ६९ ॥ चतुष्पादो गर्भिण्या ॥ ७० ॥ मयूरव्यंसकादयश्च ॥ ७१ ॥ *

इति द्वितीयाध्यायस्य प्रथमः पादः ॥

द्वितीयपादारम्भः ॥

पूर्वापराधरोत्तरमेकदेशिनैकाधिकरणे ॥ १ ॥ अर्द्धं नपुंसकम् ॥ २ ॥ द्वितीयतृतीयचतुर्थतुर्याण्यन्यतरस्याम् ॥ ३ ॥ प्राप्तापन्ने च द्वितीयया ॥ ४ ॥ कालाः परिमाणिना ॥ ५ ॥ नञ् ॥ ६ ॥ ईषदकृता ॥ ७ ॥ षष्ठी ॥ ८ ॥ याजकादिभिश्च ॥ ९ ॥ न निर्द्धारणे ॥ १० ॥ पूरणगुणसुहितार्थसदव्ययतव्यसमानाधिकरणेन ॥ ११ ॥ क्तेन च पूजायाम् ॥ १२ ॥ अधिकरणवाचिना च ॥ १३ ॥ कर्मणि च ॥ १४ ॥ तृजकाभ्यां कर्त्तरि ॥ १५ ॥ कर्त्तरि च ॥ १६ ॥ नित्यं क्रीडाजीविकयोः ॥ १७ ॥ कुगतिप्रादयः ॥ १८ ॥ उपपदमतिङ् ॥ १९ ॥ अमैवाव्ययेन ॥ २० ॥ तृतीयाप्रभृतीन्यन्यतरस्याम् ॥ २१ ॥ क्त्वा च ॥ २२ ॥ शेषो बहुव्रीहिः ॥ २३ ॥ अनेकमन्यपदार्थे ॥ २४ ॥ सङ्ख्ययाव्ययासन्नादूराधिकसङ्ख्याः सङ्ख्येये ॥ २५ ॥ दिङ्नामान्यन्तराले ॥ २६ ॥ तत्र तेनेदमिति सरूपे ॥ २७ ॥ तेन सहेति तुल्ययोगे ॥ २८ ॥ चार्थे द्वन्द्वः ॥ २९ ॥ उपसर्जनं पूर्वम् ॥ ३० ॥ राजदन्तादिषु परम् ॥ ३१ ॥ द्वन्द्वे घि ॥ ३२ ॥ अजाद्यदन्तम् ॥ ३३ ॥ अल्पाच्तरम् ॥ ३४ ॥ सप्तमी विशेषणे बहुव्रीहौ ॥ ३५ ॥

---

* समर्थोऽन्य पदार्थे सिद्धशुष्कसन्महद् द्वादश ।

निष्ठा ॥ ३६ ॥ वाहिताग्न्यादिषु ॥ ३७ ॥ कडाराः कर्मधारये ॥ ३८ ॥ *

इति द्वितीयाध्यायस्य द्वितीयः पादः ॥

तृतीयपादारम्भः ॥

अनभिहिते ॥ १ ॥ कर्मणि द्वितीया ॥ २ ॥ तृतीया च होश्छन्दसि ॥ ३ ॥ अन्तरान्तरेण युक्ते ॥ ४ ॥ कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे ॥ ५ ॥ अपवर्गे तृतीया ॥ ६ ॥ सप्तमीपञ्चम्यौ कारकमध्ये ॥ ७ ॥ कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया ॥ ८ ॥ यस्मादधिकं यस्य चेश्वरवचनन्तत्र सप्तमी ॥ ९ ॥ पञ्चम्यपाङ्परिभिः ॥ १० ॥ प्रतिनिधिप्रतिदाने च यस्मात् ॥ ११ ॥ गत्यर्थकर्मणि द्वितीयाचतुर्थ्यौ चेष्टायामनध्वनि ॥ १२ ॥ चतुर्थी सम्प्रदाने ॥ १३ ॥ क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः ॥ १४ ॥ तुमर्थाच्च भाववचनात् ॥ १५ ॥ नमःस्वस्तिस्वाहा स्वधालंऽवषड्योगाच्च ॥ १६ ॥ मन्यकर्मण्यनादरे विभाषा प्राणिषु ॥ १७ ॥ कर्तृकरणयोस्तृतीया ॥ १८ ॥ सहयुक्तेऽप्रधाने ॥ १९ ॥ येनाङ्गविकारः ॥ २० ॥ इत्थम्भूतलक्षणे ॥ २१ ॥ संज्ञोऽन्यतरस्याङ्कर्मणि ॥ २२ ॥ हेतौ ॥ २३ ॥ अकर्तर्यृणे पञ्चमी ॥ २४ ॥ विभाषा गुणे स्त्रियाम् ॥ २५ ॥ षष्ठी हेतुप्रयोगे ॥ २६ ॥ सर्वनाम्नस्तृतीया च ॥ २७ ॥ अपादाने पञ्चमी ॥ २८ ॥ अन्यारादितरर्तेदिक्शब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते ॥ २९ ॥ षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन ॥ ३० ॥ एनपा द्वितीया ॥ ३१ ॥ पृथग्विनानानाभिस्तृतीयान्यतरस्याम् ॥ ३२ ॥ करणे च स्तोकाल्पकृच्छ्रकतिपयस्यासत्त्ववचनस्य ॥ ३३ ॥ दूरान्तिकार्थैः षष्ठ्यन्यतरस्याम् ॥ ३४ ॥ दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वितीया च ॥ ३५ ॥ सप्तम्यधिकरणे च ॥ ३६ ॥ यस्य च भावेन भावलक्षणम् ॥ ३७ ॥ षष्ठी चानादरे ॥ ३८ ॥ स्वामीश्वराधिपतिदायादसाक्षिप्रतिभूप्रसूतैश्च ॥ ३९ ॥ आयुक्तकुशलाभ्यां चासेवायाम् ॥ ४० ॥ यतश्च निर्द्धारणम् ॥ ४१ ॥ पञ्चमीविभक्ते ॥ ४२ ॥ साधुनिपुणाभ्यामर्चायां सप्तम्यप्रतेः ॥ ४३ ॥ प्रसितोत्सुकाभ्यां तृतीया च ॥ ४४ ॥ नक्षत्रे च लुपि ॥ ४५ ॥ प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा ॥ ४६ ॥

---

* पूर्वापराधरोत्तरतृतीयाप्रभृतीन्यष्टादश ।

सम्बोधने च ॥ ४७ ॥ सामन्त्रितम् ॥ ४८ ॥ एकवचनं सम्बुद्धिः ॥ ४९ ॥ षष्ठी शेषे ॥ ५० ॥ ज्ञो विदर्थस्य करणे ॥ ५१ ॥ अधीगर्थदयेशां कर्मणि ॥ ५२ ॥ कृञः प्रतियत्ने ॥ ५३ ॥ रुजार्थानां भाववचनानामज्वरेः ॥ ५४ ॥ आशिषि नाथः ॥ ५५ ॥ जासिनिप्रहणनाटक्राथपिषां हिंसायाम् ॥ ५६ ॥ व्यवहृपणोः समर्थयोः ॥ ५७ ॥ दिवस्तदर्थस्य ॥ ५८ ॥ विभाषोपसर्गे ॥ ५९ ॥ द्वितीया ब्राह्मणे ॥ ६० ॥ प्रेष्यब्रुवोर्हविषो देवतासंप्रदाने ॥ ६१ ॥ चतुर्थ्यर्थे बहुलं छन्दसि ॥ ६२ ॥ यजेश्च करणे ॥ ६३ ॥ कृत्वोऽर्थप्रयोगे कालेऽधिकरणे ॥ ६४ ॥ कर्तृकर्मणोः कृति ॥ ६५ ॥ उभयप्राप्तौ कर्मणि ॥ ६६ ॥ क्तस्य च वर्त्तमाने ॥ ६७ ॥ अधिकरणवाचिनश्च ॥ ६८ ॥ न लोकाव्ययनिष्ठाखलर्थतृनाम् ॥ ६९ ॥ अकेनोर्भविष्यदाधमर्ण्ययोः ॥ ७० ॥ कृत्यानां कर्त्तरि वा ॥ ७१ ॥ तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्यां तृतीयान्यतरस्याम् ॥ ७२ ॥ चतुर्थी चाशिष्यायुष्यमद्रभद्रकुशलसुखार्थहितैः ॥ ७३ ॥*

इति द्वितीयाध्यायस्य तृतीयः पादः ॥

चतुर्थपादारम्भः ॥

द्विगुरेकवचनम् ॥ १ ॥ द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम् ॥ २ ॥ अनुवादे चरणानाम् ॥ ३ ॥ अध्वर्युक्रतुरनपुंसकम् ॥ ४ ॥ अध्ययनतोऽविप्रकृष्टाख्यानाम् ॥ ५ ॥ जातिरप्राणिनाम् ॥ ६ ॥ विशिष्टलिङ्गो नदीदेशोऽग्रामाः ॥ ७ ॥ क्षुद्रजन्तवः ॥ ८ ॥ येषाञ्च विरोधः शाश्वतिकः ॥ ९ ॥ शूद्राणामनिरवसितानाम् ॥ १० ॥ गवाश्वप्रभृतीनि च ॥ ११ ॥ विभाषा वृक्षमृगतृणधान्यव्यञ्जनपशुशकुन्यश्ववडवपूर्वापराधरोत्तराणाम् ॥ १२ ॥ विप्रतिषिद्धञ्चानधिकरणवाचि ॥ १३ ॥ न दधिपय आदीनि ॥ १४ ॥ अधिकरणैतावत्त्वे च ॥ १५ ॥ विभाषा समीपे ॥ १६ ॥ स नपुंसकम् ॥ १७ ॥ अव्ययीभावश्च ॥ १८ ॥ तत्पुरुषोऽनञ्कर्मधारयः ॥ १९ ॥ संज्ञायाङ्कन्थोशीनरेषु ॥ २० ॥ उपज्ञोपक्रमन्तदाद्याचिख्यासा-

---

* अनभिहित इत्थंभूत यतश्च प्रेष्यब्रुवोस्त्रयोदश ॥

याम् ॥ २१ ॥ छाया बाहुल्ये ॥ २२ ॥ सभाराजामनुष्यपूर्वा ॥ २३ ॥ अशाला च ॥ २४ ॥ विभाषा सेनासुराच्छायाशालानिशानाम् ॥ २५ ॥ परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः ॥ २६ ॥ पूर्ववदश्ववडवौ ॥ २७ ॥ हेमन्तशिशिरावहोरात्रे च छन्दसि ॥ २८ ॥ रात्राह्नाहाः पुंसि ॥ २९ ॥ अपथन्नपुंसकम् ॥ ३० ॥ अर्द्धर्चाः पुंसि च ॥ ३१ ॥ इदमोऽन्वादेशेऽशनुदात्तस्तृतीयादौ ॥ ३२ ॥ एतदस्त्रतसोस्त्रतसौ चानुदात्तौ ॥ ३३ ॥ द्वितीयाटौस्स्वेनः ॥ ३४ ॥ आर्द्धधातुके ॥ ३५ ॥ अदो जग्धिर्ल्यप्तिकिति ॥ ३६ ॥ लुङ्सनोर्घस्लृ ॥ ३७ ॥ घञपोश्च ॥ ३८ ॥ बहुलञ्छन्दसि ॥ ३९ ॥ लिट्यन्यतरस्याम् ॥ ४० ॥ वेञो वयिः ॥ ४१ ॥ हनो वध लिङि ॥ ४२ ॥ लुङि च ॥ ४३ ॥ आत्मनेपदेष्वन्यतरस्याम् ॥ ४४ ॥ इणो गा लुङि ॥ ४५ ॥ णौ गमिरबोधने ॥ ४६ ॥ सनि च ॥ ४७ ॥ इङश्च ॥ ४८ ॥ गाङ् लिटि ॥ ४९ ॥ विभाषा लुङ्लृङोः ॥ ५० ॥ णौ च संश्चङोः ॥ ५१ ॥ अस्तेर्भूः ॥ ५२ ॥ ब्रुवो वचिः ॥ ५३ ॥ चक्षिङः ख्याञ् ॥ ५४ ॥ वा लिटि ॥ ५५ ॥ अजेर्व्यघञपोः ॥ ५६ ॥ वा यौ ॥ ५७ ॥ ण्यक्षत्रियार्षञितोयूनि लुगणिञोः ॥ ५८ ॥ पैलादिभ्यश्च ॥ ५९ ॥ इञः प्राचाम् ॥ ६० ॥ न तौल्वलिभ्यः ॥ ६१ ॥ तद्राजस्य बहुषु तेनैवास्त्रियाम् ॥ ६२ ॥ यस्कादिभ्यो गोत्रे ॥ ६३ ॥ यञञोश्च ॥ ६४ ॥ अत्रिभृगुकुत्सवसिष्ठगोतमाङ्गिरोभ्यश्च ॥ ६५ ॥ बह्वच इञः प्राच्यभरतेषु ॥ ६६ ॥ न गोपवनादिभ्यः ॥ ६७ ॥ तिककितवादिभ्यो द्वन्द्वे ॥ ६८ ॥ उपकादिभ्योन्यतरस्यामद्वन्द्वे ॥ ६९ ॥ आगस्त्यकौण्डिन्ययोरगस्तिकुण्डिनच् ॥ ७० ॥ सुपो धातुप्रातिपदिकयोः ॥ ७१ ॥ अदिप्रभृतिभ्यः शपः ॥ ७२ ॥ बहुलञ्छन्दसि ॥ ७३ ॥ यङोचि च ॥ ७४ ॥ जुहोत्यादिभ्यः श्लुः ॥ ७५ ॥ बहुलञ्छन्दसि ॥ ७६ ॥ गातिस्थाघुपाभूभ्यः सिचः परस्मैपदेषु ॥ ७७ ॥ विभाषा घ्राधेट्शाच्छासः ॥ ७८ ॥ तनादिभ्यस्तथासोः ॥ ७९ ॥ मन्त्रे घसह्वरणशवृदहाद्वृच्कृगमिजनिभ्यो लेः ॥ ८० ॥ आमः ॥ ८१ ॥ अव्ययादाप्सुपः ॥ ८२ ॥ नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः ॥ ८३ ॥ तृतीयासप्तम्योर्बहुलम् ॥ ८४ ॥ लुटः प्रथमस्य डारौरसः ॥ ८५ ॥ *

इति द्वितीयाध्यायस्य चतुर्थः पादः ॥

द्वितीयाध्यायः समाप्तः ॥

* द्विगुरुपञ्चोपक्रमं वेञोवयिनतौल्वलिभ्य आमः पञ्च ।

अथ तृतीयाऽध्यायारम्भः ॥

तत्र प्रथमपादारम्भः ॥

प्रत्ययः ॥ १ ॥ परश्च ॥ २ ॥ आद्युदात्तश्च ॥ ३ ॥ अनुदात्तौ सुप्पितौ ॥ ४ ॥ गुप्तिज्किद्भ्यः सन् ॥ ५ ॥ मान्वधदान्शान्भ्यो दीर्घश्चाभ्यासस्य ॥ ६ ॥ धातोः कर्मणः समानकर्तृकादिच्छायां वा ॥ ७ ॥ सुप आत्मनः क्यच् ॥ ८ ॥ काम्यच्च ॥ ९ ॥ उपमानादाचारे ॥ १० ॥ कर्त्तुः क्यङ् सलोपश्च ॥ ११ ॥ भृशादिभ्यो भुव्यच्वेर्लोपश्च हलः ॥ १२ ॥ लोहितादिडाज्भ्यः क्यष् ॥ १३ ॥ कष्टाय क्रमणे ॥ १४ ॥ कर्मणो रोमन्थतपोभ्यां वर्त्तिचरोः ॥ १५ ॥ वाष्पोष्मभ्यामुद्वमने ॥ १६ ॥ शब्दवैरकलहाभ्रकण्वमेघेभ्यः करणे ॥ १७ ॥ सुखादिभ्यः कर्तृवेदनायाम् ॥ १८ ॥ नमो वरिवश्चित्रङः क्यच् ॥ १९ ॥ पुच्छभाण्डचीवराण्णिङ् ॥ २० ॥ मुण्डमिश्रश्लक्ष्णलवणव्रतवस्त्रहलकलकृततूस्तेभ्यो णिच् ॥ २१ ॥ धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिहारे यङ् ॥ २२ ॥ नित्यङ्कौटिल्ये गतौ ॥ २३ ॥ लुपसदचरजपजभदहदशगॄभ्यो भावगर्हायाम् ॥ २४ ॥ सत्यापपाशरूपवीणातूलश्लोकसेनालोमत्वचवर्मवर्णचूर्णचुरादिभ्यो णिच् ॥ २५ ॥ हेतुमति च ॥ २६ ॥ कण्ड्वादिभ्यो यक् ॥ २७ ॥ गुपूधूपविच्छिपणिपनिभ्य आयः ॥ २८ ॥ ऋतेरीयङ् ॥ २९ ॥ कमेर्णिङ् ॥ ३० ॥ आयादय आर्द्धधातुके वा ॥ ३१ ॥ सनाद्यन्ता धातवः ॥ ३२ ॥ स्यतासी लृलुटोः ॥ ३३ ॥ सिब्बहुलं लेटि ॥ ३४ ॥ कास्प्रत्ययादाममन्त्रे लिटि ॥ ३५ ॥ इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः ॥ ३६ ॥ दयायासश्च ॥ ३७ ॥ उषविदजागृभ्योऽन्यतरस्याम् ॥ ३८ ॥ भीह्रीभृहुवां श्लुवच्च ॥ ३९ ॥ कृञ्चानुप्रयुज्यते लिटि ॥ ४० ॥ विदाङ्कुर्वन्त्वित्यन्यतरस्याम् ॥ ४१ ॥ अभ्युत्सादयाम्प्रजनयाञ्चिकयां रमयामकः पावयां क्रियाद्विदामक्रन्निति च्छन्दसि ॥ ४२ ॥ च्लि लुङि ॥ ४३ ॥ च्लेः सिच् ॥ ४४ ॥ शलइगुपधादनिटः क्सः ॥ ४५ ॥ श्लिष आलिङ्गने ॥ ४६ ॥ न दृशः ॥ ४७ ॥ णिश्रिद्रुस्रुभ्यः कर्तरि चङ् ॥ ४८ ॥ विभाषा धेट् श्व्योः ॥ ४९ ॥ गुपेश्छन्दसि ॥ ५० ॥ नोनयतिध्वनयत्येलयत्य-

र्दयतिभ्यः ॥ ५१ ॥ अस्यतिवक्तिख्यातिभ्योऽङ् ॥ ५२ ॥ लिपिसिचिह्वश्च ॥ ५३ ॥ आत्मनेपदेष्वन्यतरस्याम् ॥ ५४ ॥ पुषादिद्युताद्यॢदितः परस्मैपदेषु ॥ ५५ ॥ सर्त्तिशास्त्यर्त्तिभ्यश्च ॥ ५६ ॥ इरितो वा ॥ ५७ ॥ जॄस्तम्भुम्रुचुम्लुचुग्रुचुग्लुचुग्लुञ्चुश्विभ्यश्च ॥ ५८ ॥ कृमृदृरुहिभ्यश्छन्दसि ॥ ५९ ॥ चिण् ते पदः ॥ ६० ॥ दीपजनबुधपूरितायिप्यायिभ्योऽन्यतरस्याम् ॥ ६१ ॥ अचः कर्मकर्त्तरि ॥ ६२ ॥ दुहश्च ॥ ६३ ॥ न रुधः ॥ ६४ ॥ तपोऽनुतापे च ॥ ६५ ॥ चिण्भावकर्मणोः ॥ ६६ ॥ सार्वधातुके यक् ॥ ६७ ॥ कर्त्तरि शप् ॥ ६८ ॥ दिवादिभ्यः श्यन् ॥ ६९ ॥ वा भ्राशभ्लाशभ्रमुक्रमुक्लमुत्रसित्रुटिलषः ॥ ७० ॥ यसोऽनुपसर्गात् ॥ ७१ ॥ संयसश्च ॥ ७२ ॥ स्वादिभ्यः श्नुः ॥ ७३ ॥ श्रुवः शृच ॥ ७४ ॥ अक्षोऽन्यतरस्याम् ॥ ७५ ॥ तनूकरणे तक्षः ॥ ७६ ॥ तुदादिभ्यः शः ॥ ७७ ॥ रुधादिभ्यः श्नम् ॥ ७८ ॥ तनादिकृञ्भ्य उः ॥ ७९ ॥ धिन्विकृण्व्योरच ॥ ८० ॥ क्र्यादिभ्यः श्ना ॥ ८१ ॥ स्तम्भुस्तुम्भुस्कम्भुस्कुम्भुस्कुञ्भ्यः श्नुश्च ॥ ८२ ॥ हलः श्नः शानज्झौ ॥ ८३ ॥ छन्दसि शायजपि ॥ ८४ ॥ व्यत्ययो बहुलम् ॥ ८५ ॥ लिङ्याशिष्यङ् ॥ ८६ ॥ कर्मवत्कर्मणा तुल्यक्रियः ॥ ८७ ॥ तपस्तपःकर्मकस्यैव ॥ ८८ ॥ न दुहस्नुनमां यक्चिणौ ॥ ८९ ॥ कुषिरञ्जोः प्राचां श्यन् परस्मैपदञ्च ॥ ९० ॥ धातोः ॥ ९१ ॥ तत्रोपपदं सप्तमीस्थम् ॥ ९२ ॥ कृदतिङ् ॥ ९३ ॥ वा सरूपोऽस्त्रियाम् ॥ ९४ ॥ कृत्याः ॥ ९५ ॥ तव्यत्तव्यानीयरः ॥ ९६ ॥ अचो यत् ॥ ९७ ॥ पोरदुपधात् ॥ ९८ ॥ शकिसहोश्च ॥ ९९ ॥ गदमदचरयमश्चानुपसर्गे ॥ १०० ॥ अवद्यपण्यवर्य्यागर्ह्यपणितव्यानिरोधेषु ॥ १०१ ॥ वह्यङ्करणम् ॥ १०२ ॥ अर्य्यः स्वामिवैश्ययोः ॥ १०३ ॥ उपसर्य्या काल्या प्रजने ॥ १०४ ॥ अजर्य्यं सङ्गतम् ॥ १०५ ॥ वदः सुपि क्यप् च ॥ १०६ ॥ भुवो भावे ॥ १०७ ॥ हनस्त च ॥ १०८ ॥ एतिस्तुशास्वृदृजुषः क्यप् ॥ १०९ ॥ ऋदुपधाच्चाक्लृपिचृतेः ॥ ११० ॥ ई च खनः ॥ १११ ॥ भृञोऽसञ्ज्ञायाम् ॥ ११२ ॥ मृजेर्विभाषा ॥ ११३ ॥ राजसूयसूर्य्यमृषोद्यरुच्यकुप्यकृष्टपच्याव्यथ्याः ॥ ११४ ॥ भिद्योद्ध्यौ नदे ॥ ११५ ॥ पुष्यसिद्ध्यौ नक्षत्रे ॥ ११६ ॥ विपूयविनीयजित्या मुञ्जकल्कहलिषु

॥ ११७ ॥ प्रत्यपिभ्याङ्ग्रहेः ॥ ११८ ॥ पदास्वैरिबाह्यापक्ष्येषु च ॥ ११९ ॥ विभाषा कृवृषोः ॥ १२० ॥ युग्यञ्च पत्रे ॥ १२१ ॥ अमावस्यदन्यतरस्याम् ॥ १२२ ॥ छन्दसि निष्टर्क्यदेवहूयप्रणीयोन्नीयोच्छिष्यमर्य्यस्तर्य्याध्वर्य्यखन्यखान्यदेवयज्यापृच्छ्यप्रतिषीव्यब्रह्मवाद्यभाव्यस्ताव्योपचाय्यपृडानि ॥ १२३ ॥ ऋहलोर्ण्यत् ॥ १२४ ॥ ओरावश्यके ॥ १२५ ॥ आसुयुवपिरपिलपित्रपिचमश्च ॥ १२६ ॥ आनाय्यो नित्ये ॥ १२७ ॥ प्रणाय्यो सम्मतौ ॥ १२८ ॥ पाय्यसान्नाय्यनिकाय्यधाय्या मानहविर्निवाससामिधेनीषु ॥ १२९ ॥ क्रतौ कुण्डपाय्यसञ्चाय्यौ ॥ १३० ॥ अग्नौ परिचाय्योपचाय्यसमूह्याः ॥ १३१ ॥ चित्याग्निचित्ये च ॥ १३२ ॥ ण्वुल्तृचौ ॥ १३३ ॥ नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः ॥ १३४ ॥ इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः ॥ १३५ ॥ आतश्चोपसर्गे ॥ १३६ ॥ पाघ्राध्माधेट्दृशः शः ॥१३७॥ अनुपसर्गाल्लिम्पविन्दधारिपारिवेद्युदेजिचेतिसातिसाहिभ्यश्च ॥१३८॥ ददातिदधात्योर्विभाषा ॥ १३९ ॥ ज्वलितिकसन्तेभ्यो णः ॥ १४० ॥ श्याद्व्यधास्रुसंस्र्वतीणवसावहृलिहश्लिषश्वसश्च ॥ १४१ ॥ दुन्योरनुपसर्गे ॥ १४२ ॥ विभाषा ग्रहः ॥ १४३ ॥ गेहे कः ॥ १४४ ॥ शिल्पिनि ष्वुन् ॥ १४५ ॥ गस्थकन् ॥ १४६ ॥ ण्युट् च ॥ १४७ ॥ हश्च व्रीहिकालयोः ॥ १४८ ॥ प्रुसृल्वः समभिहारे वुन् ॥ १४९ ॥ आशिषि च ॥ १५० ॥ *

इति तृतीयाध्यायस्य प्रथमः पादः ॥

द्वितीय पादारम्भः ॥

कर्मण्यण् ॥ १ ॥ ह्वावामश्च ॥ २ ॥ आतोनुपसर्गे कः ॥ ३ ॥ सुपि स्थः ॥ ४ ॥ तुन्दशोकयोः परिमृजापनुदोः ॥ ५ ॥ प्रे दाज्ञः ॥ ६ ॥ समि ख्यः ॥ ७ ॥ गापोष्टक् ॥ ८ ॥ हरतेरनुद्यमनेऽच् ॥ ९ ॥ वयसि च ॥ १० ॥ आङि ताच्छील्ये ॥ ११ ॥ अर्हः ॥ १२ ॥ स्तम्बकर्णयोरमिजपोः ॥ १३ ॥ शमि धातोः सञ्ज्ञायाम् ॥ १४ ॥ अधिकरणे शेतेः ॥ १५ ॥ चरेष्टः ॥ १६ ॥ भिक्षासेनादायेषु च ॥ १७ ॥ पुरोग्रतोग्रेषु सर्तेः ॥ १८ ॥ पूर्वे कर्तरि ॥ १९ ॥ कृञो हेतुता-

* प्रत्ययोमुण्डविदान्दीपजनकृथादिभ्यो बघयुग्यंश्याद्व्यधा दश ॥

च्छील्यानुलोम्येषु ॥२०॥ दिवाविभानिशाप्रभाभास्करान्तानन्तादिबहुनान्दीकिं-लिपिलिबिबलिभक्तिकर्तृचित्रक्षेत्रसङ्ख्याजङ्घाबाह्वहर्यत्तद्धनुररुष्षु ॥२१॥ कर्मणि भृतौ ॥ २२ ॥ न शब्दलोककलहगाथावैरचाटुसूत्रमन्त्रपदेषु ॥ २३ ॥ स्तम्बश-कृतोरिन् ॥२४॥ हरतेर्दृतिनाथयोः पशौ ॥ २५ ॥ फलेग्रहिरात्मम्भरिश्च ॥२६॥ छन्दसि वनसनरक्षिमथाम् ॥ २७ ॥ एजेः खश् ॥ २८ ॥ नासिकास्तनयोर्ध्मा-धेटोः ॥ २९ ॥ नाडीमुष्ट्योश्च ॥ ३० ॥ उदि कूले रुजिवहोः ॥ ३१ ॥ वहाभ्रे लिहः ॥ ३२ ॥ परिमाणे पचः ॥ ३३ ॥ मितनखे च ॥ ३४ ॥ विध्वरुषोस्तुदः ॥ ३५ ॥ असूर्यललाटयोर्दृशितपोः ॥ ३६ ॥ उग्रम्पश्येरम्मदपाणिन्धमाश्च ॥ ३७ ॥ प्रियवशे वदः खच् ॥ ३८ ॥ द्विषत्परयोस्तापेः ॥ ३९ ॥ वाचि यमो व्रते ॥ ४० ॥ पूः सर्वयोर्दारिसहोः ॥ ४१ ॥ सर्वकूलाभ्रकरीषेषु कषः ॥ ४२ ॥ मेघर्तिभयेषु कृञः ॥ ४३ ॥ क्षेमप्रियमद्रेण च ॥ ४४ ॥ आशिते भुवः करण-भावयोः ॥ ४५ ॥ सञ्ज्ञायाम्भृतृवृजिधारिसहितपिदमः ॥४६॥ गमश्च ॥४७॥ अन्तात्यन्ताध्वदूरपारसर्वानन्तेषु डः ॥ ४८ ॥ आशिषि हनः ॥ ४९ ॥ अपेक्ले-शतमसोः ॥५०॥ कुमारशीर्षयोर्णिनिः ॥५१॥ लक्षणे जायापत्योष्टक् ॥५२॥ अमनुष्यकर्तृके च ॥ ५३ ॥ शक्तौ हस्तिकपाटयोः ॥ ५४ ॥ पाणिघताडघौ शिल्पिनि ॥ ५५ ॥ आढ्यसुभगस्थूलपलितनग्नान्धप्रियेषुच्व्यर्थेष्वच्वौ कृञः करणे ख्युन् ॥ ५६ ॥ कर्त्तरि भुवः खिष्णुच्खुकञौ ॥ ५७ ॥ स्पृशोऽनुदके क्विन् ॥५८॥ ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चाञ्च ॥ ५९ ॥ त्यदादिषु दृशो-नालोचने कञ्च ॥ ६० ॥ सत्सूद्विषद्रुहदुहयुजविदभिदच्छिदजिनीराजामुपसर्गे-ऽपि क्विप् ॥ ६१ ॥ भजो ण्विः ॥ ६२ ॥ छन्दसि सहः ॥ ६३ ॥ वहश्च ॥ ६४ ॥ कव्यपुरीषपुरीष्येषु ञ्युट् ॥ ६५ ॥ हव्येऽनन्तः पादम् ॥ ६६ ॥ जनसनखनक्रम-गमो विट् ॥ ६७ ॥ अदोऽनन्ने ॥ ६८ ॥ क्रव्ये च ॥ ६९ ॥ दुहः कप् घश्च ॥ ७० ॥ मन्त्रे श्वेतवहोक्थशस्पुरोडाशो ण्विन् ॥ ७१ ॥ अवे यजः ॥ ७२ ॥ विजुपे छन्दसि ॥ ७३ ॥ आतो मनिन्क्वनिब्वनिपश्च ॥ ७४ ॥ अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते ॥ ७५ ॥ क्विप् च ॥ ७६ ॥ स्थः क च ॥ ७७ ॥

सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये ॥ ७८ ॥ कर्तर्युपमाने ॥ ७९ ॥ व्रते ॥ ८० ॥ बहुलमाभीक्ष्ण्ये ॥ ८१ ॥ मनः ॥ ८२ ॥ आत्ममाने खश्च ॥ ८३ ॥ भूते ॥ ८४ ॥ करणे यजः ॥ ८५ ॥ कर्मणि हनः ॥ ८६ ॥ ब्रह्म-भ्रूणवृत्रेषु क्विप् ॥ ८७ ॥ बहुलञ्छन्दसि ॥ ८८ ॥ सुकर्मपापमन्त्रपुण्येषु कृञः ॥ ८९ ॥ सोमे सुञः ॥ ९० ॥ अग्नौ चेः ॥ ९१ ॥ कर्मण्यग्न्याख्यायाम् ॥ ९२ ॥ कर्मणीनिर्विक्रियः ॥ ९३ ॥ दृशेः क्वनिप् ॥ ९४ ॥ राजनि युधिकृञः ॥ ९५ ॥ सहे च ॥ ९६ ॥ सप्तम्याञ्जनेर्डः ॥ ९७ ॥ पञ्चम्यामजातौ ॥ ९८ ॥ उपसर्गे च सञ्ज्ञायाम् ॥ ९९ ॥ अनौ कर्मणि ॥ १०० ॥ अन्येष्वपि दृश्यते ॥ १०१ ॥ निष्ठा ॥ १०२ ॥ सुयजोर्ङ्वनिप् ॥ १०३ ॥ जीर्यतेरतृन् ॥ १०४ ॥ छन्दसि लिट् ॥ १०५ ॥ लिटः कानज्वा ॥ १०६ ॥ क्वसुश्च ॥ १०७ ॥ भाषायां सदवसश्रुवः ॥ १०८ ॥ उपेयिवाननाश्वाननूचानश्च ॥ १०९ ॥ लुङ् ॥ ११० ॥ अनद्यतने लङ् ॥ १११ ॥ अभिज्ञावचने लृट् ॥ ११२ ॥ न यदि ॥ ११३ ॥ विभाषा साकाङ्क्षे ॥ ११४ ॥ परोक्षे लिट् ॥ ११५ ॥ हशश्वतोर्लङ् च ॥ ११६ ॥ प्रश्ने चासन्नकाले ॥ ११७ ॥ लट् स्मे ॥ ११८ ॥ अपरोक्षे च ॥ ११९ ॥ ननौ पृष्टप्रतिवचने ॥ १२० ॥ नन्वोर्विभाषा ॥ १२१ ॥ पुरि लुङ् चास्मे ॥ १२२ ॥ वर्तमाने लट् ॥ १२३ ॥ लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधि-करणे ॥ १२४ ॥ सम्बोधने च ॥ १२५ ॥ लक्षणहेत्वोः क्रियायाः ॥ १२६ ॥ तौ सत् ॥ १२७ ॥ पूङ्यजोः शानन् ॥ १२८ ॥ ताच्छील्यवयोवचनशक्तिषु चानश् ॥ १२९ ॥ इङ्धार्योः शत्रकृच्छ्रिणि ॥ १३० ॥ द्विषो मित्रे ॥ १३१ ॥ सुञो यज्ञसंयोगे ॥ १३२ ॥ अर्हः प्रशंसायाम् ॥ १३३ ॥ आक्वेस्तच्छीलत-द्धर्मतत्साधुकारिषु ॥ १३४ ॥ तृन् ॥ १३५ ॥ अलंकृञ्निराकृञ्प्रजनोत्पचोत्प-तोन्मदरुच्यपत्रपवृतुवृधुसहचर इष्णुच् ॥ १३६ ॥ णेश्छन्दसि ॥ १३७ ॥ भुवश्च ॥ १३८ ॥ ग्लाजिस्थश्च क्स्नुः ॥ १३९ ॥ त्रसिगृधिधृषिक्षिपेः क्नुः ॥ १४० ॥ शमित्यष्टाभ्यो घिनुण् ॥ १४१ ॥ सम्पृचानुरुधाङ्यमाङ्यसपरिसृसंसृजपरिदे-विसंज्वरपरिक्षिपपरिरटपरिवदपरिदहपरिमुहदुषद्विषद्रुहदुहयुजाक्रीडविविचत्यजर-

जभजातिचरापचरामुषाभ्याहनश्च ॥ १४२ ॥ वौ कषलसकत्थस्रम्भः ॥ १४३ ॥ अपे च लषः ॥ १४४ ॥ प्रेलपसृद्रुमथवदवसः ॥ १४५ ॥ निन्दहिंसक्लिशखादविनाशपरिक्षिपपरिरटपरिवादिव्याभाषासूयो वुञ् ॥ १४६ ॥ देविक्रुशोश्चोपसर्गे ॥ १४७ ॥ चलनशब्दार्थादकर्मकाद्युच् ॥ १४८ ॥ अनुदात्तेतश्च हलादेः ॥ १४९ ॥ जुचंक्रम्यदंद्रम्यसृगृधिज्वलशुचलषपतपदः ॥ १५० ॥ क्रुधमण्डार्थेभ्यश्च ॥ १५१ ॥ न यः ॥ १५२ ॥ सूददीपदीक्षश्च ॥ १५३ ॥ लषपतपदस्थाभूवृषहनकमगमशृभ्य उकञ् ॥ १५४ ॥ जल्पभिक्षकुट्टलुण्टवृङः षाकन् ॥ १५५ ॥ प्रजो रिनिः ॥ १५६ ॥ जिदृक्षिविश्रीण्वमाव्यथाभ्यमपरिभूप्रसूभ्यश्च ॥ १५७ ॥ स्पृहिगृहिपतिदयिनिद्रातन्द्राश्रद्धाभ्य आलुच् ॥ १५८ ॥ दाधेट्सिशदसदो रुः ॥ १५९ ॥ सृघस्यदः क्मरच् ॥ १६० ॥ भञ्जभासमिदो घुरच् ॥ १६१ ॥ विदिभिदिछिदेः कुरच् ॥ १६२ ॥ इण्नशजिसर्तिभ्यः क्वरप् ॥ १६३ ॥ गत्वरश्च ॥ १६४ ॥ जागरूकः ॥ १६५ ॥ यजजपदशां यङः ॥ १६६ ॥ नमिकम्पिस्म्यजसकमहिंसदीपो रः ॥ १६७ ॥ सनाशंसभिक्ष उः ॥ १६८ ॥ विन्दुरिच्छुः ॥ १६९ ॥ क्याच्छन्दसि ॥ १७० ॥ आदृगमहनजनः किकिनौ लिट् च ॥ १७१ ॥ स्वपितृषोर्नजिङ् ॥ १७२ ॥ शॄवन्द्योरारुः ॥ १७३ ॥ भियः क्रुक्लुकनौ ॥ १७४ ॥ स्थेशभासपिसकसो वरच् ॥ १७५ ॥ यश्च यङः ॥ १७६ ॥ भ्राजभासधुर्विद्युतोर्जिपॄजुग्रावस्तुवः क्विप् ॥ १७७ ॥ अन्येभ्योपि दृश्यते ॥ १७८ ॥ भुवः संज्ञान्तरयोः ॥ १७९ ॥ विप्रसम्भ्योड्वसंज्ञायाम् ॥ १८० ॥ धः कर्मणि ष्ट्रन् ॥ १८१ ॥ दाम्नीशसयुयुजस्तुतुदसिसिचमिहपतदशनहः करणे ॥ १८२ ॥ हलसूकरयोः पुवः ॥ १८३ ॥ अर्तिलूधूसूखनसहचर इत्रः ॥ १८४ ॥ पुवः संज्ञायाम् ॥ १८५ ॥ कर्त्तरि चर्षिदेवतयोः ॥ १८६ ॥ ञीतः क्तः ॥ १८७ ॥ मतिबुद्धिपूजार्थेभ्यश्च ॥ १८८ ॥ *

इति तृतीयाध्यायस्य द्वितीयः पादः ॥

---

* कर्मणिदिवापूः सर्वेसत्सूबहुलमन्येष्वपिनन्वोः शमितिभञ्जभासधः कर्मण्यष्टौ ।

तृतीयपादारम्भः ॥

उणादयो बहुलम् ॥ १ ॥ भूतेपि दृश्यन्ते ॥ २ ॥ भविष्यति गम्यादयः ॥ ३ ॥ यावत्पुरा निपातयोर्लट् ॥ ४ ॥ विभाषा कदाकर्ह्योः ॥ ५ ॥ किंवृत्ते लिप्सायाम् ॥ ६ ॥ लिप्स्यमानसिद्धौ च ॥ ७ ॥ लोडर्थलक्षणे च ॥ ८ ॥ लिङ् चोर्ध्वमौहूर्तिके ॥ ९ ॥ तुमुन्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम् ॥ १० ॥ भाववचनाश्च ॥ ११ ॥ अण् कर्मणि च ॥ १२ ॥ लृट् शेषे च ॥ १३ ॥ लृटः सद्वा ॥ १४ ॥ अनद्यतने लुट् ॥ १५ ॥ पदरुजविशस्पृशो घञ् ॥ १६ ॥ सृ स्थिरे ॥ १७ ॥ भावे ॥ १८ ॥ अकर्तरि च कारके संज्ञायाम् ॥ १९ ॥ परिमाणाख्यायां सर्वेभ्यः ॥ २० ॥ इङश्च ॥ २१ ॥ उपसर्गे रुवः ॥ २२ ॥ समि युद्रुदुवः ॥ २३ ॥ श्रिणीभुवोऽनुपसर्गे ॥ २४ ॥ वौ क्षुश्रुवः ॥ २५ ॥ अवोदोर्नियः ॥ २६ ॥ प्रे द्रुस्तुस्रुवः ॥ २७ ॥ निरभ्योः पूल्वोः ॥ २८ ॥ उन्योर्ग्रः ॥ २९ ॥ कृधान्ये ॥ ३० ॥ यज्ञे समि स्तुवः ॥ ३१ ॥ प्रे स्त्रोऽयज्ञे ॥ ३२ ॥ प्रथने वावशब्दे ॥ ३३ ॥ छन्दो नाम्नि च ॥ ३४ ॥ उदि ग्रहः ॥ ३५ ॥ समि मुष्टौ ॥ ३६ ॥ परिन्योर्नीणोर्द्यूताभ्रेषयोः ॥ ३७ ॥ परावनुपात्यय इणः ॥ ३८ ॥ व्युपयोः शेतेः पर्य्याये ॥ ३९ ॥ हस्तादाने चेरस्तेये ॥ ४० ॥ निवासचितिशरीरोपसमाधानेष्वादेश्च कः ॥ ४१ ॥ संघे चानौत्तराधर्य्ये ॥ ४२ ॥ कर्मव्यतिहारे णच् स्त्रियाम् ॥ ४३ ॥ अभिविधौ भाव इनुण् ॥ ४४ ॥ आक्रोशेवन्योर्ग्रः ॥ ४५ ॥ प्रे लिप्सायाम् ॥ ४६ ॥ परौ यज्ञे ॥ ४७ ॥ नौ वृ धान्ये ॥ ४८ ॥ उदि श्रयतियौतिपूद्रुवः ॥ ४९ ॥ विभाषा ङिरुप्लुवोः ॥ ५० ॥ अवे ग्रहो वर्षप्रतिबन्धे ॥ ५१ ॥ प्रे वणिजाम् ॥ ५२ ॥ रश्मौ च ॥ ५३ ॥ वृणोतेराच्छादने ॥ ५४ ॥ परौ भुवोऽवज्ञाने ॥ ५५ ॥ एरच् ॥ ५६ ॥ ऋदोरप् ॥ ५७ ॥ ग्रहवृदृनिश्चिगमश्च ॥ ५८ ॥ उपसर्गे दः ॥ ५९ ॥ नौ ण च ॥ ६० ॥ व्यधजपोरनुपसर्गे ॥ ६१ ॥ स्वनहसोर्वा ॥ ६२ ॥ यमः समुपनिविषु च ॥ ६३ ॥ नौ गदनदपठस्वनः ॥ ६४ ॥ क्वणो वीणायाञ्च ॥ ६५ ॥ नित्यं पणः परिमाणे ॥ ६६ ॥ मदोऽनुपसर्गे ॥ ६७ ॥ प्रमदसम्मदौ हर्षे ॥ ६८ ॥ समुदोरजः पशुषु ॥ ६९ ॥

अवेषु ग्लहः ॥ ७० ॥ प्रजने सर्त्तेः ॥ ७१ ॥ ह्वः सम्प्रसारणञ्च न्यभ्युपविषु ॥ ७२ ॥ आङि युद्धे ॥ ७३ ॥ निपानमाहावः ॥ ७४ ॥ भावेऽनुपसर्गस्य ॥ ७५ ॥ हनश्च वधः ॥ ७६ ॥ मूर्त्तौ घनः ॥ ७७ ॥ अन्तर्घनो देशे ॥ ७८ ॥ अगारैकदेशे प्रघणः प्रघाणश्च ॥ ७९ ॥ उद्घनोऽत्याधानम् ॥ ८० ॥ अपघनोऽङ्गम् ॥ ८१ ॥ करणेऽयोविद्रुषु ॥ ८२ ॥ स्तम्बे क च ॥ ८३ ॥ परौ घः ॥ ८४ ॥ उपघ्न आश्रये ॥ ८५ ॥ सङ्घोद्घौ गणप्रशंसयोः ॥ ८६ ॥ निघो निमितम् ॥ ८७ ॥ ड्वितः क्त्रिः ॥ ८८ ॥ ट्वितोऽथुच् ॥ ८९ ॥ यजयाचयतविच्छप्रच्छरक्षो नङ् ॥ ९० ॥ स्वपो नन् ॥ ९१ ॥ उपसर्गे घोः किः ॥ ९२ ॥ कर्मण्यधिकरणे च ॥ ९३ ॥ स्त्रियां क्तिन् ॥ ९४ ॥ स्थागापापचो भावे ॥ ९५ ॥ मन्त्रे वृषेषपचमनविदभूवीरा उदात्तः ॥ ९६ ॥ ऊतियूतिजूतिसातिहेतिकीर्त्तयश्च ॥ ९७ ॥ व्रजयजोर्भावे क्यप् ॥ ९८ ॥ सञ्ज्ञायां समजनिषदनिपतमनविदषुञ्शीङ्भृञिणः ॥ ९९ ॥ कृञः श च ॥ १०० ॥ इच्छा ॥ १०१ ॥ अ प्रत्ययात् ॥ १०२ ॥ गुरोश्च हलः ॥ १०३ ॥ षिद्भिदादिभ्योऽङ् ॥ १०४ ॥ चिन्तिपूजिकथिकुम्बिचर्चश्च ॥ १०५ ॥ आतश्चोपसर्गे ॥ १०६ ॥ ण्यासश्रन्थो युच् ॥ १०७ ॥ रोगाख्यायां ण्वुल् बहुलम् ॥ १०८ ॥ सञ्ज्ञायाम् ॥ १०९ ॥ विभाषाख्यानपरिप्रश्नयोरिञ्च ॥ ११० ॥ पर्यायार्हर्णोत्पत्तिषु ण्वुच् ॥ १११ ॥ आक्रोशे नञ्यनिः ॥ ११२ ॥ कृत्यल्युटो बहुलम् ॥ ११३ ॥ नपुंसके भावे क्तः ॥ ११४ ॥ ल्युट् च ॥ ११५ ॥ कर्मणि च येन संस्पर्शात्कर्त्तुः शरीरसुखम् ॥ ११६ ॥ करणाधिकरणयोश्च ॥ ११७ ॥ पुंसि सञ्ज्ञायां घः प्रायेण ॥ ११८ ॥ गोचरसंचरवहव्रजव्यजापणनिगमाश्च ॥ ११९ ॥ अवे तॄस्त्रोर्घञ् ॥ १२० ॥ हलश्च ॥ १२१ ॥ अध्यायन्यायोद्यावसंहाराधाराश्च ॥ १२२ ॥ उदङ्कोऽनुदके ॥ १२३ ॥ जालमानायः ॥ १२४ ॥ खनो घ च ॥ १२५ ॥ ईषद्दुःसुषु कृच्छ्राकृच्छ्रार्थेषु खल् ॥ १२६ ॥ कर्त्तृकर्मणोश्च भूकृञोः ॥ १२७ ॥ आतो युच् ॥ १२८ ॥ छन्दसि गत्यर्थेभ्यः ॥ १२९ ॥ अन्येभ्योऽपि दृश्यते ॥ १३० ॥ वर्त्तमानसामीप्ये वर्त्तमानवद्वा ॥ १३१ ॥ आशंसायां भूतवच्च

॥ १३२ ॥ क्षिप्रवचने लृट् ॥ १३३ ॥ आशंसावचने लिङ् ॥ १३४ ॥ नानद्यतनवत्क्रियाप्रबन्धसामीप्योः ॥ १३५ ॥ भविष्यति मर्यादावचनेऽवरस्मिन् ॥ १३६ ॥ कालविभागेचानहोरात्राणाम् ॥ १३७ ॥ परस्मिन्विभाषा ॥ १३८ ॥ लिङ्निमित्ते लृङ् क्रियातिपत्तौ ॥ ११९ ॥ भूते च ॥ १४० ॥ वोताप्योः ॥ १४१ ॥ गर्हायां लडपिजात्वोः ॥ १४२ ॥ विभाषाकथमि लिङ् च ॥ १४३ ॥ किं वृत्ते लिङ्लृटौ ॥ १४४ ॥ अनवक्लृप्त्यमर्षयोरकिंवृत्तेपि ॥ १४५ ॥ किङ्किलास्त्यर्थेषु लृट् ॥ १४६ ॥ जातुयदोर्लिङ् ॥ १४७ ॥ यच्चयत्रयोः ॥ १४८ ॥ गर्हायाञ्च ॥ १४९ ॥ चित्रीकरणे च ॥ १५० ॥ शेषे लृडयदौ ॥ १५१ ॥ उताप्योः समर्थयोर्लिङ् ॥ १५२ ॥ कामप्रवेदनेऽकच्चिति ॥ १५३ ॥ सम्भावनेऽलमिति चेत्सिद्धाप्रयोगे ॥ १५४ ॥ विभाषा धातौ सम्भावनवचने यदि ॥ १५५ ॥ हेतुहेतुमतोर्लिङ् ॥ १५६ ॥ इच्छार्थेषु लिङ्लोटौ ॥ १५७ ॥ समानकर्तृकेषु तुमुन् ॥ १५८ ॥ लिङ् च ॥ १५९ ॥ इच्छार्थेभ्यो विभाषा वर्त्तमाने ॥ १६० ॥ विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसम्प्रश्नप्रार्थनेषु लिङ् ॥ १६१ ॥ लोट् च ॥ १६२ ॥ प्रैषातिसर्गप्राप्तकालेषु कृत्याश्च ॥ १६३ ॥ लिङ् चोर्ध्वमौहूर्तिके ॥ १६४ ॥ स्मे लोट् ॥ १६५ ॥ अधीष्टे च ॥ १६६ ॥ कालसमयवेलासु तुमुन् ॥ १६७ ॥ लिङ्यदि ॥ १६८ ॥ अर्हे कृत्यतृचश्च ॥ १६९ ॥ आवश्यकाधमर्ण्ययोर्णिनिः ॥ १७० ॥ कृत्याश्च ॥ १७१ शकि लिङ् च ॥ १७२ ॥ आशिषि लिङ्लोटौ ॥ १७३ ॥ क्तिच्क्तौ च सञ्ज्ञायाम् ॥ १७४ ॥ माङि लुङ् ॥ १७५ ॥ स्मोत्तरे लङ् च ॥ १७६ ॥ *

इति तृतीयाध्यायस्य तृतीयः पादः ॥

चतुर्थपादारम्भः ॥

धातुसम्बन्धे प्रत्ययाः ॥ १ ॥ क्रियासमभिहारे लोट् लोटोहिस्वौ वा च तध्वमोः ॥ २ ॥ समुच्चयेऽन्यतरस्याम् ॥ ३ ॥ यथाविध्यनुप्रयोगः पूर्वस्मिन् ॥ ४ ॥ समुच्चये सामान्यवचनस्य ॥ ५ ॥ छन्दसि लुङ्लङ्लिटः ॥ ६ ॥ लिङर्थे

*उणादयइङोनिवासव्यधजपोरपघनइच्छाहलश्चवोताप्योर्विंधि षोडश ।

लेट् ॥ ७ ॥ उपसंवादाशङ्कयोश्च ॥ ८ ॥ तुमर्थे सेसेनसेअसेन्कसेकसेनध्यैअध्यैन्कध्यैकध्यैन्शध्यैशध्यैन्तवैतवेङ्तवेनः ॥ ९ ॥ प्रयैरोहिष्यै अव्यथिष्यै ॥ १० ॥ दृशे विख्ये च ॥ ११ ॥ शकि णमुल्कमुलौ ॥ १२ ॥ ईश्वरे तोसुन्कसुनौ ॥ १३ ॥ कृत्यार्थे तवैकेन्केन्यत्वनः ॥ १४ ॥ अवचक्षे च ॥ १५ ॥ भावलक्षणे स्थेण्कृञ्वदिचरिहुतमिजनिभ्यस्तोसुन् ॥ १६ ॥ सृपितृदोः कसुन् ॥ १७ ॥ अलंखल्वोः प्रतिषेधयोः प्राचां क्त्वा ॥ १८ ॥ उदीचाम्माङो व्यतीहारे ॥ १९ ॥ परावरयोगे च ॥ २० ॥ समानकर्तृकयोः पूर्वकाले ॥ २१ ॥ आभीक्ष्ण्ये णमुल् च ॥ २२ ॥ न यद्यनाकाङ्क्षे ॥ २३ ॥ विभाषाग्रेप्रथमपूर्वेषु ॥ २४ ॥ कर्मण्याक्रोशे कृञः खमुञ् ॥ २५ ॥ स्वादुमि णमुल् ॥ २६ ॥ अन्यथैवङ्कथमित्थंसुसिद्धाप्रयोगश्चेत् ॥ २७ ॥ यथातथयोरसूयाप्रतिवचने ॥ २८ ॥ कर्मणि दृशिविदोः साकल्ये ॥ २९ ॥ यावति विन्दजीवोः ॥ ३० ॥ चर्मोदरयोः पूरेः ॥ ३१ ॥ वर्षप्रमाण ऊलोपश्चास्यान्यतरस्याम् ॥ ३२ ॥ चेले क्नोपेः ॥ ३३ ॥ निमूलसमूलयोः कषः ॥ ३४ ॥ शुष्कचूर्णरूक्षेषु पिषः ॥ ३५ ॥ समूलाकृतजीवेषु हन्कृञ्ग्रहः ॥ ३६ ॥ करणे हनः ॥ ३७ ॥ स्नेहने पिषः ॥ ३८ ॥ हस्ते वर्तिग्रहोः ॥ ३९ ॥ स्वे पुषः ॥ ४० ॥ अधिकरणे बन्धः ॥ ४१ ॥ सञ्ज्ञायाम् ॥ ४२ ॥ कर्त्रोर्जीवपुरुषयोर्नशिवहोः ॥ ४३ ॥ ऊर्ध्वे शुषिपूरोः ॥ ४४ ॥ उपमाने कर्मणि च ॥ ४५ ॥ कषादिषु यथाविध्यनुप्रयोगः ॥ ४६ ॥ उपदंशस्तृतीयायाम् ॥ ४७ ॥ हिंसार्थानाञ्च समानकर्मकाणाम् ॥ ४८ ॥ सप्तम्याञ्चोपपीडरुधकर्षः ॥ ४९ ॥ समासत्तौ ॥ ५० ॥ प्रमाणे च ॥ ५१ ॥ अपादाने परीप्सायाम् ॥ ५२ ॥ द्वितीयायाञ्च ॥ ५३ ॥ स्वाङ्गेऽध्रुवे ॥ ५४ ॥ परिक्लिश्यमाने च ॥ ५५ ॥ विशिपतिपदिस्कन्दां व्याप्यमानासेव्यमानयोः ॥ ५६ ॥ अस्यतितृषोः क्रियान्तरे कालेषु ॥ ५७ ॥ नाम्न्यादिशिग्रहोः ॥ ५८ ॥ अव्यये यथाभिप्रेताख्याने कृञः क्त्वाणमुलौ ॥ ५९ ॥ तिर्यच्यपवर्गे ॥ ६० ॥ स्वाङ्गे तस्प्रत्यये कृभ्वोः ॥ ६१ ॥ नाधार्थप्रत्यये च्व्यर्थे ॥ ६२ ॥ तूष्णीमि भुवः ॥ ६३ ॥ अन्वच्यानुलोम्ये ॥ ६४ ॥ शकधृषज्ञाग्लाघटरभलभक्रमसहार्हास्त्यर्थेषु तुमुन् ॥ ६५ ॥ पर्याप्तिवच-

नेष्वलमर्थेषु ॥ ६६ ॥ कर्त्तरि कृत् ॥ ६७ ॥ भव्यगेयप्रवचनीयोपस्थानीयजन्याप्लाव्यापात्या वा ॥ ६८ ॥ लः कर्मणि च भावे चाकर्मकेभ्यः ॥ ६९ ॥ तयोरेव कृत्यक्तखलर्थाः ॥ ७० ॥ आदिकर्मणि क्तः कर्तरि च ॥ ७१ ॥ गत्यर्थाकर्मकश्लिषशीङ्स्थासवसजनरुहजीर्य्यतिभ्यश्च ॥ ७२ ॥ दाशगोघ्नौ सम्प्रदाने ॥ ७३ ॥ भीमादयोऽपादाने ॥ ७४ ॥ ताभ्यामन्यत्रोणादयः ॥ ७५ ॥ क्तोऽधिकरणे च ध्रौव्यगतिप्रत्यवसानार्थेभ्यः ॥ ७६ ॥ लस्य ॥ ७७ ॥ तिप्तस्झिसिप्थस्थमिप्वस्मस्तातांझथासाथांध्वमिड्वहिमहिङ् ॥ ७८ ॥ टित आत्मनेपदानां टेरे ॥ ७९ ॥ थासस्से ॥ ८० ॥ लिटस्तझयोरेशिरेच् ॥ ८१ ॥ परस्मैपदानां णलतुसुस्थलथुसणल्वमाः ॥ ८२ ॥ विदोलटो वा ॥ ८३ ॥ ब्रुवः पञ्चानामादित आहो ब्रुवः ॥ ८४ ॥ लोटो लङ्वत् ॥ ८५ ॥ एरुः ॥ ८६ ॥ सेर्ह्यपिच्च ॥ ८७ ॥ वा छन्दसि ॥ ८८ ॥ मेर्निः ॥ ८९ ॥ आमेतः ॥ ९० ॥ सवाभ्यां वामौ ॥ ९१ ॥ आडुत्तमस्य पिच्च ॥ ९२ ॥ एत ऐ ॥ ९३ ॥ लेटोऽडाटौ ॥ ९४ ॥ आत ऐ ॥ ९५ ॥ वैतोऽन्यत्र ॥ ९६ ॥ इतश्च लोपः परस्मैपदेषु ॥ ९७ ॥ स उत्तमस्य ॥ ९८ ॥ नित्यं ङितः ॥ ९९ ॥ इतश्च ॥ १०० ॥ तस्थस्थमिपान्तांतन्तामः ॥ ॥ १०१ ॥ लिङः सीयुट् ॥ १०२ ॥ यासुट् परस्मैपदेषूदात्तो ङिच्च ॥ १०३ ॥ किदाशिषि ॥ १०४ ॥ झस्य रन् ॥ १०५ ॥ इटोऽत् ॥ १०६ ॥ सुट् तिथोः ॥ १०७ ॥ झेर्जुस् ॥ १०८ ॥ सिजभ्यस्तविदिभ्यश्च ॥ १०९ ॥ आतः ॥ ११० ॥ लङः शाकटायनस्यैव ॥ १११ ॥ द्विषश्च ॥ ११२ ॥ तिङ्शित्सार्वधातुकम् ॥ ११३ ॥ आर्द्धधातुकं शेषः ॥ ११४ ॥ लिट् च ॥ ११५ ॥ लिङाशिषि ॥ ॥ ११६ ॥ छन्दस्युभयथा ॥ ११७ ॥ *

इति तृतीयाध्यायस्य चतुर्थः पादः ॥

तृतीयाध्यायः समाप्तः ॥

---

* धातुसम्बन्धेसमानाधिकरणे स्वाङ्गे लिटस्तस्थंस्थमिपां सप्तदश ॥

अथ चतुर्थोऽध्यायारम्भः ॥

तत्र प्रथमपादारम्भः ॥

ङ्याप्प्रातिपदिकात् ॥ १ ॥ स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योः सुप् ॥ २ ॥ स्त्रियाम् ॥ ३ ॥ अजाद्यतष्टाप् ॥ ४ ॥ ऋन्नेभ्यो ङीप् ॥ ५ ॥ उगितश्च ॥ ६ ॥ वनो र च ॥ ७ ॥ पादोऽन्यतरस्याम् ॥ ८ ॥ टाबृचि ॥ ९ ॥ न षट्स्वस्रादिभ्यः ॥ १० ॥ मनः ॥ ११ ॥ अनो बहुव्रीहेः ॥ १२ ॥ डाबुभाभ्यामन्यतरस्याम् ॥ १३ ॥ अनुपसर्ज्जनात् ॥ १४ ॥ टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः ॥ १५ ॥ यञश्च ॥ १६ ॥ प्राचां ष्फस्तद्धितः ॥ १७ ॥ सर्वत्र लोहितादिकतन्तेभ्यः ॥ १८ ॥ कौरव्यमाण्डूकाभ्यांच ॥ १९ ॥ वयसि प्रथमे ॥ २० ॥ द्विगोः ॥ २१ ॥ अपरिमाणविस्ताचितकम्बल्येभ्यो न तद्धितलुकि ॥ २२ ॥ काण्डान्तात्क्षेत्रे ॥ २३ ॥ पुरुषात्प्रमाणेऽन्यतरस्याम् ॥ २४ ॥ बहुव्रीहेरूधसो ङीष् ॥ २५ ॥ सङ्ख्याव्ययादेर्ङीप् ॥ २६ ॥ दामहायनान्ताच्च ॥ २७ ॥ अन उपधालोपिनोऽन्यतरस्याम् ॥ २८ ॥ नित्यं सञ्ज्ञाछन्दसोः ॥ २९ ॥ केवलमामकभागधेयपापापरसमानार्यकृतसुमङ्गलभेषजाच्च ॥ ३० ॥ रात्रेश्चाजसौ ॥ ३१ ॥ अन्तर्वत्पतिवतोर्नुक् ॥ ३२ ॥ पत्युर्नो यज्ञसंयोगे ॥ ३३ ॥ विभाषा सपूर्वस्य ॥ ३४ ॥ नित्यं सपत्न्यादिषु ॥ ३५ ॥ पूतक्रतोरै च ॥ ३६ ॥ वृषाकप्यग्निकुसितकुसीदानामुदात्तः ॥ ३७ ॥ मनोरौ वा ॥ ३८ ॥ वर्णादनुदात्तात्तोपधात्तो नः ॥ ३९ ॥ अन्यतो ङीष् ॥ ४० ॥ षिद्गौरादिभ्यश्च ॥ ४१ ॥ जानपदकुण्डगोणस्थलभाजनागकालनीलकुशकामुककबराद्वृत्त्यमत्रावपनाकृत्रिमाश्राणास्थौल्यवर्णानाच्छादनायोविकारमैथुनेच्छाकेशवेशेषु ॥ ४२ ॥ शोणात्प्राचाम् ॥ ४३ ॥ वोतो गुणवचनात् ॥ ४४ ॥ बह्वादिभ्यश्च ॥ ४५ ॥ नित्यं छन्दसि ॥ ४६ ॥ भुवश्च ॥ ४७ ॥ पुंयोगादाख्यायाम् ॥ ४८ ॥ इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृडहिमारण्यय-

वयवनमातुलाचार्य्याणामानुक् ॥ ४९ ॥ क्रीतात्करणपूर्वात् ॥ ५० ॥ क्तादल्पाख्यायाम् ॥ ५१ ॥ बहुव्रीहेश्चान्तोदात्तात् ॥ ५२ ॥ अस्वाङ्गपूर्वपदाद्वा ॥ ५३ ॥ स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात् ॥ ५४ ॥ नासिकोदरौष्ठजङ्घादन्तकर्णशृङ्गाच्च ॥ ५५ ॥ न क्रोडादिबह्वचः ॥ ५६ ॥ सहनञ्विद्यमानपूर्वाच्च ॥ ५७ ॥ नखमुखात्सञ्ज्ञायाम् ॥ ५८ ॥ दीर्घजिह्वी च च्छन्दसि ॥ ५९ ॥ दिक्पूर्वपदान् ङीप् ॥ ६० ॥ वाहः ॥ ६१ ॥ सख्यशिश्वीति भाषायाम् ॥ ६२ ॥ जातेरस्त्रीविषयादयोपधात् ॥ ६३ ॥ पाककर्णपर्णपुष्पफलमूलवालोत्तरपदाच्च ॥ ६४ ॥ इतो मनुष्यजातेः ॥ ६५ ॥ ऊङुतः ॥ ६६ ॥ बाह्वन्तात्सञ्ज्ञायाम् ॥ ६७ ॥ पङ्गोश्च ॥ ६८ ॥ ऊरूत्तरपदादौपम्ये ॥ ६९ ॥ संहितशफलक्षणवामादेश्च ॥ ७० ॥ कद्रुकमण्डल्वोश्छन्दसि ॥ ७१ ॥ सञ्ज्ञायाम् ॥ ७२ ॥ शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन् ॥ ७३ ॥ यङश्चाप् ॥ ७४ ॥ आवट्याच्च ॥ ७५ ॥ तद्धिताः ॥ ७६ ॥ यूनस्तिः ॥ ७७ ॥ अणिञोरनार्षयोर्गुरूपोत्तमयोः ष्यङ् गोत्रे ॥ ७८ ॥ गोत्रावयवात् ॥ ७९ ॥ क्रौड्यादिभ्यश्च ॥ ८० ॥ दैवयज्ञिशौचिवृक्षिसात्यमुग्रिकाण्ठेविद्धिभ्योऽन्यतरस्याम् ॥ ८१ ॥ समर्थानाम्प्रथमाद्वा ॥ ८२ ॥ प्राग्दीव्यतोऽण् ॥ ८३ ॥ अश्वपत्यादिभ्यश्च ॥ ८४ ॥ दित्यदित्यादित्यपत्युत्तरपदाण्ण्यः ॥ ८५ ॥ उत्सादिभ्योऽञ् ॥ ८६ ॥ स्त्रीपुंसाभ्यां नञ्स्नञौ भवनात् ॥ ८७ ॥ द्विगोर्लुगनपत्ये ॥ ८८ ॥ गोत्रे लुगचि ॥ ८९ ॥ यूनि लुक् ॥ ९० ॥ फक्फिञोरन्यतरस्याम् ॥ ९१ ॥ तस्याऽपत्यम् ॥ ९२ ॥ एको गोत्रे ॥ ९३ ॥ गोत्राद्यून्यस्त्रियाम् ॥ ९४ ॥ अत इञ् ॥ ९५ ॥ बाह्वादिभ्यश्च ॥ ९६ ॥ सुधातुरकङ् च ॥ ९७ ॥ गोत्रे कुञ्जादिभ्यश्चफञ् ॥ ९८ ॥ नडादिभ्यः फक् ॥ ९९ ॥ हरितादिभ्योऽञः ॥ १०० ॥ यञिञोश्च ॥ १०१ ॥ शरद्वच्छुनकदर्भाद्भृगुवत्साग्रायणेषु ॥ १०२ ॥ द्रोणपर्वतजीवन्तादन्यतरस्याम् ॥ १०३ ॥ अनृष्यानन्तर्ये विदादिभ्योऽञ् ॥ १०४ ॥ गर्गादिभ्यो यञ् ॥ १०५ ॥ मधुबभ्रोर्ब्राह्मणकौशिकयोः ॥ १०६ ॥ कपिबोधादाङ्गिरसे ॥ १०७ ॥ वतण्डाच्च ॥ १०८ ॥ लुक् स्त्रियाम् ॥ १०९ ॥ अश्वादिभ्यः फञ् ॥ ११० ॥ भर्गात् त्रैगर्ते ॥ १११ ॥

शिवादिभ्योऽण् ॥ ११२ ॥ अवृद्धाभ्यो नदीमानुषीभ्यस्तन्नामिकाभ्यः ॥११३॥ ऋष्यन्धकवृष्णिकुरुभ्यश्च ॥ ११४ ॥ मातुरुत्सङ्ख्यासम्भद्रपूर्वायाः ॥ ११५ ॥ कन्यायाः कनीन च ॥ ११६ ॥ विकर्णशुङ्गच्छगलाद्वत्सभरद्वाजात्रिषु ॥ ११७॥ पीलाया वा ॥ ११८ ॥ ढक् च मण्डूकात् ॥ ११९ ॥ स्त्रीभ्यो ढक्॥ १२० ॥ द्व्यचः ॥ १२१ ॥ इतश्चानिञः ॥ १२२ ॥ शुभ्रादिभ्यश्च ॥ १२३ ॥ विकर्णकुषीतकात्काश्यपे ॥ १२४ ॥ भ्रुवो वुक् च ॥ १२५ ॥ कल्याण्यादीनामिनङ् च ॥ १२६ ॥ कुलटाया वा ॥ १२७ ॥ चटकाया ऐरक् ॥ १२८ ॥ गोधाया ढ्रक् ॥ १२९ ॥ आरगुदीचाम् ॥ १३० ॥ क्षुद्राभ्यो वा ॥ १३१ ॥ पितृष्वसुश्छण् ॥ १३२ ॥ ढकि लोपः ॥ १३३ ॥ मातृष्वसुश्च ॥ १३४ ॥ चतुष्पाद्भ्यो ढञ् ॥ १३५ ॥ गृष्ट्यादिभ्यश्च ॥ १३६ ॥ राजश्वशुराद्यत् ॥ १३७ ॥ क्षत्राद् घः ॥ १३८ ॥ कुलात्खः ॥ १३९ ॥ अपूर्वपदादन्यतरस्यां यड्ढकञौ ॥ १४० ॥ महाकुलादञ्खञौ ॥ १४१ ॥ दुष्कुलाड्ढक् ॥ १४२ ॥ स्वसुश्छः ॥ १४३ ॥ भ्रातुर्व्यच्च ॥ १४४ ॥ व्यन्सपत्ने ॥ १४५ ॥ रेवत्यादिभ्यष्ठक् ॥ १४६ ॥ गोत्रस्त्रियाः कुत्सने ण च ॥ १४७ ॥ वृद्धाट्ठक् सौवीरेषु बहुलम् ॥ १४८ ॥ फेश्छ च ॥ १४९ ॥ फाण्टाहृतिमिमताभ्यां णफिञौ ॥ १५० ॥ कुर्वादिभ्यो ण्यः ॥ १५१ ॥ सेनान्तलक्षणकारिभ्यश्च ॥ १५२ ॥ उदीचामिञ् ॥ १५३ ॥ तिकादिभ्यः फिञ् ॥ १५४ ॥ कौशल्यकार्मार्याभ्याञ्च ॥ १५५ ॥ अणोद्व्यचः ॥ १५६ ॥ उदीचां वृद्धादगोत्रात् ॥ १५७ ॥ वाकिनादीनां कुक् च ॥ १५८ ॥ पुत्रान्तादन्यतरस्याम् ॥ १५९ ॥ प्राचामवृद्धात्फिन्बहुलम् ॥ १६० ॥ मनोर्जातावञ्यतौ षुक् च ॥ १६१ ॥ अपत्यं पौत्रप्रभृति गोत्रम् ॥ १६२ ॥ जीवति तु वंश्ये युवा ॥ १६३ ॥ भ्रातरि च ज्यायसि ॥ १६४ ॥ वान्यस्मिन् सपिण्डे स्थविरतरे जीवति ॥ १६५ ॥ * जनपदशब्दात् क्षत्रियादञ् ॥ १६६ ॥ साल्वेयगान्धारिभ्याञ्च ॥ १६७ ॥ द्व्यञ् मगधकलिङ्गसूरमसादण् ॥ १६८ ॥ वृद्धेत्कोसलाजादाञ्ञ्यङ् ॥ १६९ ॥ कुरुनादिभ्योण्यः ॥ १७० ॥ साल्वावयवप्रत्यग्रथकलकूटाश्मकादिञ् ॥ १७१ ॥ ते

---

* अत्र वृद्धस्य च पूजायाम्, यूनश्च कुत्सायामिति द्वे वार्त्तिके सूत्रपाठे कैश्चित्प्रक्षिप्ते ।

तद्राजः ॥ १७२ ॥ कम्बोजाल्लुक् ॥ १७३ ॥ स्त्रियामवन्तिकुन्तिकुरुभ्यश्च ॥ ॥ १७४ ॥ अतश्च ॥ १७५ ॥ न प्राच्यभर्गादियौधेयादिभ्यः ॥ १७६ ॥ *

इति चतुर्थाध्यायस्य प्रथमः पादः ॥

द्वितीयपादारम्भः ॥

तेन रक्तं रागात् ॥ १ ॥ लाक्षारोचनाट्ठक् ॥ २ ॥ नक्षत्रेण युक्तः कालः ॥ ३ ॥ लुबविशेषे ॥ ४ ॥ सञ्ज्ञायां श्रवणाश्वत्थाभ्याम् ॥ ५ ॥ द्वन्द्वाच्छः ॥ ॥ ६ ॥ दृष्टं साम ॥ ७ ॥ कलेर्ढक् ॥ ८ ॥ वामदेवाड्ड्यड्ड्यौ ॥ ९ ॥ परिवृतो रथः ॥ १० ॥ पाण्डुकम्बलादिनिः ॥ ११ ॥ द्वैपवैयाघ्रादञ् ॥ १२ ॥ कौमारापूर्ववचने ॥ १३ ॥ तत्रोद्धृतममत्रेभ्यः ॥ १४ ॥ स्थण्डिलाच्छयितरि व्रते ॥ १५ ॥ संस्कृतं भक्षाः ॥ १६ ॥ शूलोखाद्यत् ॥ १७ ॥ दध्नष्ठक् ॥ १८ ॥ उदश्वितोऽन्यतरस्याम् ॥ १९ ॥ क्षीराड् ढञ् ॥ २० ॥ सास्मिन्पौर्णमासीति सञ्ज्ञायाम् ॥ २१ ॥ आग्रहायण्यश्वत्थाट्ठक् ॥ २२ ॥ विभाषा फाल्गुनीश्रवणाकार्त्तिकीचैत्रीभ्यः ॥ २३ ॥ सास्य देवता ॥ २४ ॥ कस्येत् ॥ २५ ॥ शुक्राद् घन् ॥ २६ ॥ अपोनप्त्रपां नप्तृभ्यां घः ॥ २७ ॥ छ च ॥ २८ ॥ महेन्द्राद् घाणौ च ॥ २९ ॥ सोमाद् ट्यण् ॥ ३० ॥ वाय्वृतुपित्रुषसो यत् ॥ ३१ ॥ द्यावापृथिवीशुनासीरमरुत्वदग्नीषोमवास्तोष्पतिगृहमेधाच्छ च ॥ ३२ ॥ अग्नेर्ढक् ॥ ३३ ॥ कालेभ्यो भववत् ॥ ३४ ॥ महाराजप्रोष्ठपदाट्ठञ् ॥ ३५ ॥ पितृव्यमातुलमातामहपितामहाः ॥ ३६ ॥ तस्य समूहः ॥ ३७ ॥ भिक्षादिभ्योऽण् ॥ ३८ ॥ गोत्रोक्षोष्ट्रोरभ्रराजराजन्यराजपुत्रवत्समनुष्याजाद् वुञ् ॥ ३९ ॥ केदाराद्यञ्च ॥ ४० ॥ ठञ् कवचिनश्च ॥ ४१ ॥ ब्राह्मणमाणववाडवाद्यत् ॥ ४२ ॥ ग्रामजनबन्धुभ्यस्तल् ॥ ४३ ॥ अनुदात्तादेरञ् ॥ ४४ ॥ खण्डिकादिभ्यश्च ॥ ४५ ॥ चरणेभ्यो धर्मवत् ॥ ४६ ॥ अचित्तहस्तिधेनोष्ठक् ॥ ४७ ॥ केशाश्वाभ्यां यञ्छावन्यतरस्याम् ॥ ४८ ॥

---

* ङ्याप्प्रातिपदिकात्... ङ्याप्दिगोः शिद्गौरादिवाह्नो दैवयज्ञिप्रियभित्रोद्धर्त्र्यचो महाकुलान्मनोर्जातौ षोडश ।

पाशादिभ्यो यः ॥ ४९ ॥ खलगोरथात् ॥ ५० ॥ इनित्रकट्यचश्च ॥ ५१ ॥ विषयो देशे ॥ ५२ ॥ राजन्यादिभ्यो वुञ् ॥ ५३ ॥ भौरिक्याद्यैषुकार्यादिभ्यो विधल्भक्तलौ ॥ ५४ ॥ सोऽस्यादिरितिच्छन्दसः प्रगाथेषु ॥ ५५ ॥ सङ्ग्रामे प्रयोजनयोद्धृभ्यः ॥ ५६ ॥ तदस्यां प्रहरणमिति क्रीडायां णः ॥ ५७ ॥ घञः सास्यां क्रियेति ञः ॥ ५८ ॥ तदधीते तद्वेद ॥ ५९ ॥ क्रतूक्थादिसूत्रान्ताट्ठक् ॥ ६० ॥ क्रमादिभ्यो वुन् ॥ ६१ ॥ अनुब्राह्मणादिनिः ॥ ६२ ॥ वसन्तादिभ्यष्ठक् ॥ ६३ ॥ प्रोक्ताल्लुक् ॥ ६४ ॥ सूत्राच्च कोपधात् ॥ ६५ ॥ छन्दोब्राह्मणानि च तद्विषयाणि ॥ ६६ ॥ तदस्मिन्नस्तीति देशे तन्नाम्नि ॥ ६७ ॥ तेन निर्वृत्तम् ॥ ६८ ॥ तस्य निवासः ॥ ६९ ॥ अदूरभवश्च ॥ ७० ॥ ओरञ् ॥ ७१ ॥ मतोश्च बह्वजङ्गात् ॥ ७२ ॥ बह्वचः कूपेषु ॥ ७३ ॥ उदक्च विपाशः ॥ ७४ ॥ सङ्कलादिभ्यश्च ॥ ७५ ॥ स्त्रीषु सौवीरसाल्वप्राक्षु ॥ ७६ ॥ सुवास्त्वादिभ्योऽण् ॥ ७७ ॥ रोणी ॥ ७८ ॥ कोपधाच्च ॥ ७९ ॥ वुञ्छण्कठजिलसेनिरढञ्ण्ययफक्फिञिञ्ञ्यकक्ठकोरीहणकृशाश्वर्श्यकुमुदकाशतृणप्रेक्षाश्मसखिसङ्काशबलपक्षकर्णसुतङ्गमप्रगदिन्वराहकुमुदादिभ्यः ॥ ८० ॥ जनपदे लुप् ॥ ८१ ॥ वरणादिभ्यश्च ॥ ८२ ॥ शर्कराया वा ॥ ८३ ॥ ठक्छौ च ॥ ८४ ॥ नद्यां मतुप् ॥ ८५ ॥ मध्वादिभ्यश्च ॥ ८६ ॥ कुमुदनडवेतसेभ्यो ड्मतुप् ॥ ८७ ॥ नडशादाड्ड्वलच् ॥ ८८ ॥ शिखाया वलच् ॥ ८९ ॥ उत्करादिभ्यश्छः ॥ ९० ॥ नडादीनां कुक् च ॥ ९१ ॥ शेषे ॥ ९२ ॥ राष्ट्रावारपाराद् घखौ ॥ ९३ ॥ ग्रामाद्यखञौ ॥ ९४ ॥ कत्र्यादिभ्यो ढकञ् ॥ ९५ ॥ कुलकुक्षिग्रीवाभ्यः श्वास्यलङ्कारेषु ॥ ९६ ॥ नद्यादिभ्यो ढक् ॥ ९७ ॥ दक्षिणापश्चात्पुरसस्त्यक् ॥ ९८ ॥ कापिश्याष्ष्फक् ॥ ९९ ॥ रङ्कोरमनुष्येऽण् च ॥ १०० ॥ द्युप्रागपागुदक्प्रतीचो यत् ॥ १०१ ॥ कन्थायाष्ठक् ॥ १०२ ॥ वर्णौ वुक् ॥ १०३ ॥ अव्ययात्त्यप् ॥ १०४ ॥ ऐषमोह्यःश्वसोऽन्यतरस्याम् ॥ १०५ ॥ तीररूप्योत्तरपदादञ्ञौ ॥ १०६ ॥ दिक्पूर्वपदादसंज्ञायां ञः ॥ १०७ ॥ मद्रेभ्योऽञ् ॥ १०८ ॥ उदीच्यग्रामाच्च बह्वचोऽन्तोदात्तात् ॥ १०९ ॥ प्रस्थोत्तरपदपलद्यादिकोपधादण् ॥ ११० ॥ कण्वादिभ्यो गोत्रे ॥ १११ ॥

इञश्च ॥ ११२ ॥ न द्व्यचः प्राच्यभरतेषु ॥ ११३ ॥ वृद्धाच्छः ॥ ११४ ॥ भवतष्ठक्छसौ ॥ ११५ ॥ काश्यादिभ्यष्ठञ्ञिठौ ॥ ११६ ॥ वाहीकग्रामेभ्यश्च ॥ ११७ ॥ विभाषोशीनरेषु ॥ ११८ ॥ ओर्देशे ठञ् ॥ ११९ ॥ वृद्धात्प्राचाम् ॥ १२० ॥ धन्वयोपधाद्वुञ् ॥ १२१ ॥ प्रस्थपुरवहान्ताच्च ॥ १२२ ॥ रोपधेतोः प्राचाम् ॥ १२३ ॥ जनपदतदवध्योश्च ॥ १२४ ॥ अवृद्धादपि बहुवचनविषयात् ॥ १२५ ॥ कच्छाग्निवक्त्रगर्तोत्तरपदात् ॥ १२६ ॥ धूमादिभ्यश्च ॥ १२७ ॥ नगरात्कुत्सनप्रावीण्ययोः ॥ १२८ ॥ अरण्यान्मनुष्ये ॥ १२९ ॥ विभाषा कुरुयुगन्धराभ्याम् ॥ १३० ॥ मद्रवृज्योः कन् ॥ १३१ ॥ कोपधादण् ॥ १३२ ॥ कच्छादिभ्यश्च ॥ १३३ ॥ मनुष्यतत्स्थयोर्वुञ् ॥ १३४ ॥ अपदातौ साल्वात् ॥ १३५ ॥ गोयवाग्वोश्च ॥ १३६ ॥ गर्त्तोत्तरपदाच्छः ॥ १३७ ॥ गहादिभ्यश्च ॥ १३८ ॥ प्राचां कटादेः ॥ १३९ ॥ राज्ञः क च ॥ १४० ॥ वृद्धादकेकान्तखोपधात् ॥ १४१ ॥ कन्थापलदनगरग्रामह्रदोत्तरपदात् ॥ १४२ ॥ पर्वताच्च ॥ १४३ ॥ विभाषाऽमनुष्ये ॥ १४४ ॥ कृकणपर्णाद् भारद्वाजे ॥ १४५ ॥ *

इति चतुर्थाध्यायस्य द्वितीयः पादः ॥

तृतीयपादारम्भः ॥

युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां खञ्च ॥ १ ॥ तस्मिन्नणि च युष्माकास्माकौ ॥ २ ॥ तवकममकावेकवचने ॥ ३ ॥ अर्द्धाद्यत् ॥ ४ ॥ परावराधमोत्तमपूर्वाच्च ॥ ५ ॥ दिक्पूर्वपदाट्ठञ्च ॥ ६ ॥ ग्रामजनपदैकदेशादञ्ठञौ ॥ ७ ॥ मध्यान्मः ॥ ८ ॥ असाम्प्रतिके ॥ ९ ॥ द्वीपादनुसमुद्रं यञ् ॥ १० ॥ कालाट्ठञ् ॥ ११ ॥ श्राद्धे शरदः ॥ १२ ॥ विभाषा रोगातपयोः ॥ १३ ॥ निशाप्रदोषाभ्याञ्च ॥ १४ ॥ श्वसस्तुट् च ॥ १५ ॥ सन्धिवेलाद्यृतुनक्षत्रेभ्योऽण् ॥ १६ ॥ प्रावृष एण्यः ॥ १७ ॥ वर्षाभ्यष्ठक् ॥ १८ ॥ छन्दसि ठञ् ॥ १९ ॥ वसन्ताच्च ॥ २० ॥

---

* तेन खास्मिन्ठञ्क्रमादिभ्यो जनपदेषुप्रागपाग्धन्ववृद्धात्पच्च ॥

हेमन्ताच्च ॥ २१ ॥ सर्वत्राणि च तलोपश्च ॥ २२ ॥ सायश्चिरम्प्राह्णेप्रगेऽव्ययेभ्यष्ट्युट्युलौ तुट् च ॥ २३ ॥ विभाषा पूर्वाह्णापराह्णाभ्याम् ॥ २४ ॥ तत्र जातः ॥ २५ ॥ प्रावृषष्ठप् ॥ २६ ॥ संज्ञायां शरदो वुञ् ॥ २७ ॥ पूर्वाह्णापराह्णार्द्रामूलप्रदोषावस्कराद्वुन् ॥ २८ ॥ पथः पन्थ च ॥ २९ ॥ अमावास्याया वा ॥ ३० ॥ अ च ॥ ३१ ॥ सिन्धवपकाराभ्यां कन् ॥ ३२ ॥ अणञौ च ॥ ३३ ॥ श्रविष्ठाफल्गुन्यनुराधास्वातितिष्यपुनर्वसुहस्तविशाखाषाढाबहुलाल्लुक् ॥ ३४ ॥ स्थानान्तगोशालखरशालाच्च ॥ ३५ ॥ वत्सशालाभिजिदश्वयुक्छतभिषजो वा ॥ ३६ ॥ नक्षत्रेभ्यो बहुलम् ॥ ३७ ॥ कृतलब्धक्रीतकुशलाः ॥ ३८ ॥ प्रायभवः ॥ ३९ ॥ उपजानूपकर्णोपनीवेष्ठक् ॥ ४० ॥ सम्भूते ॥ ४१ ॥ कोशाड् ढञ् ॥ ४२ ॥ कालात्साधुपुष्प्यत्पच्यमानेषु ॥ ४३ ॥ उप्ते च ॥ ४४ ॥ आश्वयुज्या वुञ् च ॥ ४५ ॥ ग्रीष्मवसन्तादन्यतरस्याम् ॥ ४६ ॥ देयमृणे ॥ ४७ ॥ कलाप्यश्वत्थयवबुसाद् वुन् ॥ ४८ ॥ ग्रीष्मावरसमाद्वुञ् ॥ ४९ ॥ संवत्सराग्रहायणीभ्यां ठञ् च ॥ ५० ॥ व्याहरति मृगः ॥ ५१ ॥ तदस्य सोढम् ॥ ५२ ॥ तत्र भवः ॥ ५३ ॥ दिगादिभ्यो यत् ॥ ५४ ॥ शरीरावयवाच्च ॥ ५५ ॥ दृतिकुक्षिकलशिवस्त्यस्त्यहेर्ढञ् ॥ ५६ ॥ ग्रीवाभ्योऽण् च ॥ ५७ ॥ गम्भीराञ्ञ्यः ॥ ५८ ॥ अव्ययीभावाच्च ॥ ५९ ॥ अन्तः पूर्वपदाट्ठञ् ॥ ६० ॥ ग्रामात् पर्यनुपूर्वात् ॥ ६१ ॥ जिह्वामूलाङ्गुलेश्छः ॥ ६२ ॥ वर्गान्ताच्च ॥ ६३ ॥ अशब्दे यत्खावन्यतरस्याम् ॥ ६४ ॥ कर्णललाटात् कनलङ्कारे ॥ ६५ ॥ तस्य व्याख्यान इति च व्याख्यातव्यनाम्नः ॥ ६६ ॥ बह्वचोऽन्तोदात्ताट्ठञ् ॥ ६७ ॥ क्रतुयज्ञेभ्यश्च ॥ ६८ ॥ अध्यायेष्वेवर्षेः ॥ ६९ ॥ पौरोडाशपुरोडाशात् ष्ठन् ॥ ७० ॥ छन्दसो यदणौ ॥ ७१ ॥ द्व्यजृद्ब्राह्मणर्क्प्रथमाध्वरपुरश्चरणनामाख्याताट् ठक् ॥ ७२ ॥ अण् ऋगयनादिभ्यः ॥ ७३ ॥ तत आगतः ॥ ७४ ॥ ठगायस्थानेभ्यः ॥ ७५ ॥ शुण्डिकादिभ्योऽण् ॥ ७६ ॥ विद्यायोनिसम्बन्धेभ्यो वुञ् ॥ ७७ ॥ ऋतष्ठञ् ॥ ७८ ॥ पितुर्यच्च ॥ ७९ ॥ गोत्रादङ्कवत् ॥ ८० ॥ हेतुमनुष्येभ्योऽन्यतरस्यां रूप्यः ॥ ८१ ॥ मयट् च ॥ ८२ ॥ प्रभवति ॥ ८३ ॥ विदूराञ्ञ्यः ॥ ८४ ॥ तद्गच्छति पथिदूतयोः ॥ ८५ ॥ अभिनिष

क्रामति द्वारम् ॥ ८६ ॥ अधिकृत्य कृते ग्रन्थे ॥ ८७ ॥ शिशुक्रन्दयमसभद्वन्द्वेन्द्रजननादिभ्यश्छः ॥ ८८ ॥ सोऽस्य निवासः ॥ ८९ ॥ अभिजनश्च ॥ ९० ॥ आयुधजीविभ्यश्छः पर्वते ॥ ९१ ॥ शण्डिकादिभ्यो ञ्यः ॥ ९२ ॥ सिन्धुतक्षशिलादिभ्योऽणञौ ॥ ९३ ॥ तूदीशलातुरवर्मतीकूचवाराड्ढक्छण्ढञ्यकः ॥ ९४ ॥ भक्तिः ॥ ९५ ॥ अचित्तादेशकालाट्ठक् ॥ ९६ ॥ महाराजाट्ठञ् ॥ ९७ ॥ वासुदेवार्जुनाभ्यां वुन् ॥ ९८ ॥ गोत्रक्षत्रियाख्येभ्यो बहुलं वुञ् ॥ ९९ ॥ जनपदिनां जनपदवत्सर्वं जनपदेन समानशब्दानां बहुवचने ॥ १०० ॥ तेन प्रोक्तम् ॥ १०१ ॥ तित्तिरिवरतन्तुखण्डिकोखाच्छण् ॥ १०२ ॥ काश्यपकौशिकाभ्यामृषिभ्यां णिनिः ॥ १०३ ॥ कलापिवैशंपायनान्तेवासिभ्यश्च ॥ १०४ ॥ पुराणप्रोक्तेषु ब्राह्मणकल्पेषु ॥ १०५ ॥ शौनकादिभ्यश्छन्दसि ॥ १०६ ॥ कठचरकाल्लुक् ॥ १०७ ॥ कलापिनोऽण् ॥ १०८ ॥ छगलिनो ढिनुक् ॥ १०९ ॥ पाराशर्यशिलालिभ्यां भिक्षुनटसूत्रयोः ॥११०॥ कर्मन्दकृशाश्वादिनिः ॥ १११॥ तेनैकदिक् ॥११२॥ तसिश्च ॥ ११३ ॥ उरसोयच्च ॥ ११४ ॥ उपज्ञाते ॥ ११५ ॥ कृते ग्रंथे ॥ ११६ ॥ संज्ञायाम् ॥ ११७ ॥ कुलालादिभ्यो वुञ् ॥ ११८ ॥ क्षुद्राभ्रमरवटरपादपादञ् ॥ ११९ ॥ तस्येदम् ॥ १२० ॥ रथाद्यत् ॥ १२१ ॥ पत्रपूर्वादञ् ॥ १२२ ॥ पत्राध्वर्युपरिषदश्च ॥ १२३ ॥ हलसीराट्ठक् ॥ १२४ ॥ द्वन्द्वाद्वुन्वैरमैथुनिकयोः ॥ १२५ ॥ गोत्रचरणाद्वुञ् ॥ १२६ ॥ संघाङ्कलक्षणेष्वञ्यञिञामण् ॥ १२७ ॥ शाकलाद्वा ॥ १२८ ॥ छन्दोगौक्थिकयाज्ञिकबह्वृचनटाञ्ञ्यः ॥ १२९ ॥ न दण्डमाणवान्तेवासिषु ॥ १३० ॥ रैवतिकादिभ्यश्छः ॥ १३१ ॥ * तस्य विकारः ॥ १३२ ॥ अवयवे च प्राण्योषधिवृक्षेभ्यः ॥ १३३ ॥ बिल्वादिभ्योऽण् ॥ १३४ कोपधाच्च ॥ १३५ ॥ त्रपुजतुनोः षुक् ॥ १३६ ॥ ओरञ् ॥ १३७ ॥ अनुदात्तादेश्च ॥ १३८ ॥ पलाशादिभ्यो वा ॥ १३९ ॥ शम्याष्ट्लञ् ॥ १४० ॥ मयड् वैतयोर्भाषायामभक्ष्याच्छादनयोः ॥ १४१ ॥ नित्यं वृद्धशरा-

---

* अत्रापि कौपिञ्जलहास्तिपदादण्, आथर्वणिकस्येकलोपश्चेति द्वे वार्त्तिके कैश्चित्सूत्रपाठे प्रक्षिप्ते ।

दिभ्यः ॥ १४२ ॥ गोश्च पुरीषे ॥ १४३ ॥ पिष्टाच्च ॥ १४४ ॥ संज्ञायां कन् ॥ १४५ ॥ व्रीहेः पुरोडाशे ॥ १४६ ॥ असंज्ञायां तिलयवाभ्याम् ॥ १४७ ॥ द्व्यचश्छन्दसि ॥ १४८ ॥ नोत्वद्वर्ध्रबिल्वात् ॥ १४९ ॥ तालादिभ्योऽण् ॥ १५० ॥ जातरूपेभ्यः परिमाणे ॥ १५१ ॥ प्राणिरजतादिभ्योऽञ् ॥ १५२ ॥ ञितश्च तत्प्रत्ययात् ॥ १५३ ॥ क्रीतवत्परिमाणात् ॥ १५४ ॥ उष्ट्राद्वुञ् ॥ १५५ ॥ उमोर्णयोर्वा ॥ १५६ ॥ एण्या ढञ् ॥ १५७ ॥ गोपयसोर्यत् ॥ १५८ ॥ द्रोश्च ॥ १५९ ॥ माने वयः ॥ १६० ॥ फले लुक् ॥ १६१ ॥ प्लक्षादिभ्योऽण् ॥ १६२ ॥ जम्ब्वा वा ॥ १६३ ॥ लुप् च ॥ १६४ ॥ हरीतक्यादिभ्यश्च ॥ १६५ ॥ कंसीयपरशव्ययोर्यञञौ लुक् च ॥ १६६ ॥ *

इति चतुर्थाध्यायस्य तृतीयः पादः ॥

चतुर्थपादारम्भः ॥

प्राग्वहतेष्ठक् ॥ १ ॥ तेन दीव्यति खनति जयति जितम् ॥ २ ॥ संस्कृतम् ॥ ३ ॥ कुलत्थकोपधादण् ॥ ४ ॥ तरति ॥ ५ ॥ गोपुच्छाट्ठञ् ॥ ६ ॥ नौद्व्यचष्ठन् ॥ ७ चरति ॥ ८ ॥ आकर्षात् ष्ठल् ॥ ९ ॥ पर्पादिभ्यः ष्ठन् ॥ १० ॥ श्वगणाट्ठञ् च ॥ ११ ॥ वेतनादिभ्यो जीवति ॥ १२ ॥ वस्नक्रयविक्रयाट्ठन् ॥ १३ ॥ आयुधाच्छ च ॥ १४ ॥ हरत्युत्सङ्गादिभ्यः ॥ १५ ॥ भस्त्रादिभ्यः ष्ठन् ॥ १६ ॥ विभाषा विवधात् ॥ १७ ॥ अण् कुटिलिकायाः ॥ १८ ॥ निर्वृत्तेऽक्षद्यूतादिभ्यः ॥ १९ ॥ त्रेर्मम् नित्यम् ॥ २० ॥ अपमित्ययाचिताभ्यां कक्कनौ ॥ २१ ॥ संसृष्टे ॥ २२ ॥ चूर्णादिनिः ॥ २३ ॥ लवणाल्लुक् ॥ २४ ॥ मुद्गादण् ॥ २५ ॥ व्यञ्जनैरुपसिक्ते ॥ २६ ॥ ओजः सहोम्भसा वर्त्तते ॥ २७ ॥ तत्प्रत्यनुपूर्वमीपलोमकूलम् ॥ २८ ॥ परिमुखञ्च ॥ २९ ॥ प्रयच्छति गर्ह्यम् ॥ ३० ॥ कुसीददशैकादशात् ष्ठन्ष्ठचौ ॥ ३१ ॥ उञ्छति ॥ ३२ ॥ रक्षति ॥ ३३ ॥ शब्ददर्दुरङ्करोति ॥ ३४ ॥ पक्षिमत्स्यमृगान्हन्ति ॥ ३५ ॥ परिपन्थञ्च तिष्ठति ॥ ३६ ॥ माथोत्तरपदपदव्यनुपदन्धावति ॥ ३७ ॥ आक्रन्दाट्ठञ्च ॥ ३८ ॥ पदोत्तरपदं

* युष्मद्धेमन्तात्संभूतेग्रामाद्धेतुतेनरथात्पलाशादिभ्यः फले षट् ॥

गृह्णाति ॥ ३९ ॥ प्रतिकण्ठार्थललामं च ॥ ४० ॥ धर्मञ्चरति ॥ ४१ ॥ प्रतिपथमेति ठंश्च ॥ ४२ ॥ समवायान्त्समवैति ॥ ४३ ॥ परिषदो ण्यः ॥ ४४ ॥ सेनाया वा ॥ ४५ ॥ संज्ञायां ललाटकुक्कुट्यौ पश्यति ॥ ४६ ॥ तस्य धर्म्यम् ॥ ४७ ॥ अण्महिष्यादिभ्यः ॥ ४८ ॥ ऋतोऽञ् ॥ ४९ ॥ अवक्रयः ॥ ५० ॥ तदस्य पण्यम् ॥ ५१ ॥ लवणाट्ठञ् ॥ ५२ ॥ किसरादिभ्यष्ठन् ॥ ५३ ॥ शलालुनोऽन्यतरस्याम् ॥ ५४ ॥ शिल्पम् ॥ ५५ ॥ मड्डुकझर्झरादणन्यतरस्याम् ॥ ५६ ॥ प्रहरणम् ॥ ५७ ॥ परश्वधाट्ठञ्च ॥ ५८ ॥ शक्तियष्ट्योरीकक् ॥ ५९ ॥ अस्तिनास्तिदिष्टं मतिः ॥ ६० ॥ शीलम् ॥ ६१ ॥ छत्रादिभ्यो णः ॥ ६२ ॥ कर्माध्ययने वृत्तम् ॥ ६३ ॥ बह्वच्पूर्वपदाट्ठच् ॥ ६४ ॥ हितं भक्षाः ॥ ६५ ॥ तदस्मै दीयते नियुक्तम् ॥ ६६ ॥ श्राणामांसौदनाट्टिठन् ॥ ६७ ॥ भक्तादणन्यतरस्याम् ॥ ६८ ॥ तत्र नियुक्तः ॥ ६९ ॥ अगारान्ताट्ठन् ॥ ७० ॥ अध्यायिन्यदेशकालात् ॥ ७१ ॥ कठिनान्तप्रस्तारसंस्थानेषु व्यवहरति ॥ ७२ ॥ निकटे वसति ॥ ७३ ॥ आवसथात् ष्ठल् ॥ ७४ ॥ प्राग्घिताद्यत् ॥ ७५ ॥ तद्वहति रथयुगप्रासङ्गम् ॥ ७६ ॥ धुरो यड्ढकौ ॥ ७७ ॥ खः सर्वधुरात् ॥ ७८ ॥ एकधुराल्लुक् च ॥ ७९ ॥ शकटादण् ॥ ८० ॥ हलसीराट्ठक् ॥ ८१ ॥ संज्ञायां जन्या ॥ ८२ ॥ विध्यत्यधनुषा ॥ ८३ ॥ धनगणं लब्धा ॥ ८४ ॥ अन्नाण्णः ॥ ८५ ॥ वशं गतः ॥ ८६ ॥ पदमस्मिन् दृश्यम् ॥ ८७ ॥ मूलमस्याबर्हि ॥ ८८ ॥ संज्ञायां धेनुष्या ॥ ८९ ॥ गृहपतिना संयुक्ते ञ्यः ॥ ९० ॥ नौवयोधर्म्मविषमूलमूलसीतातुलाभ्यस्तार्यतुल्यप्राप्यवध्यानाम्यसमसमितसम्मितेषु ॥ ९१ ॥ धर्म्मपथ्यर्थन्यायादनपेते ॥ ९२ ॥ छन्दसो निर्मिते ॥ ९३ ॥ उरसोऽण् च ॥ ९४ ॥ हृदयस्य प्रियः ॥ ९५ ॥ बन्धने चर्षौ ॥ ९६ ॥ मतजनहलात्करणजल्पकर्षेषु ॥ ९७ ॥ तत्र साधुः ॥ ९८ ॥ प्रतिजनादिभ्यः खञ् ॥ ९९ ॥ भक्ताण्णः ॥ १०० ॥ परिषदो ण्यः ॥ १०१ ॥ कथादिभ्यष्ठक् ॥ १०२ ॥ गुडादिभ्यष्ठञ् ॥ १०३ ॥ पथ्यतिथिवसतिस्वपतेर्ढञ् ॥ १०४ ॥ सभाया यः ॥ १०५ ॥ ढश्छन्दसि ॥ १०६ ॥ समानतीर्थे वासी ॥ १०७ ॥ समानोदरे शयित ओ

चोदात्तः ॥ १०८ ॥ सोदराद्यः ॥ १०९ ॥ भवेश्छन्दसि ॥ ११० ॥ पाथोनदीभ्यां ड्यण् ॥ १११ ॥ वेशन्तहिमवद्भ्यामण् ॥ ११२ ॥ स्रोतसो विभाषा ड्यड्ड्यौ ॥ ११३ ॥ सगर्भसयूथसनुताद्यन् ॥ ११४ ॥ तुग्राद् घन् ॥ ११५ ॥ अग्राद्यत् ॥ ११६ ॥ घच्छौ च ॥ ११७ ॥ समुद्राभ्राद् घः ॥ ११८ ॥ बर्हिषि दत्तम् ॥ ११९ ॥ दूतस्य भागकर्मणी ॥ १२० ॥ रक्षोयातूनां हननी ॥ १२१ ॥ रेवतीजगतीहविष्याभ्यः प्रशस्ये ॥ १२२ ॥ असुरस्य स्वम् ॥ १२३ ॥ मायायामण् ॥ १२४ ॥ तद्वानासामुपधानो मन्त्र इतीष्टकासु लुक् च मतोः ॥ १२५ ॥ अश्विमानण् ॥ १२६ ॥ वयस्यासु मूर्ध्नो मतुप् ॥ १२७ ॥ मत्वर्थे मासतन्वोः ॥ १२८ ॥ मधोर्ञ च ॥ १२९ ॥ ओजसोऽहनि यत्खौ ॥ १३० ॥ वेशोयशआदेर्भगाद्यल् ॥ १३१ ॥ ख च ॥ १३२ ॥ पूर्वैः कृतमिनियौ च ॥ १३३ ॥ अद्भिः संस्कृतम् ॥ १३४ ॥ सहस्रेण सम्मितौ घः ॥ १३५ ॥ मतौ च ॥ १३६ ॥ सोममर्हति यः ॥ १३७ ॥ मये च ॥ १३८ ॥ मधोः ॥ १३९ ॥ वसोः समूहे च ॥ १४० ॥ नक्षत्राद् घः ॥ १४१ ॥ सर्वदेवात्तातिल् ॥ १४२ ॥ शिवशमरिष्टस्य करे ॥ १४३ ॥ भावे च ॥ १४४ ॥ *

इति चतुर्थाध्यायस्य चतुर्थः पादः ॥

इति चतुर्थाध्यायः समाप्तः ॥

---

* प्राग्वहतेरपमित्य धर्म शीलं हलपरिषदो रक्षो नक्षत्राचत्वारि ।

अथ पञ्चमाध्यायारम्भः ॥

तत्र प्रथमपादारम्भः ॥

प्राक् क्रीताच्छः ॥ १ ॥ उगवादिभ्यो यत् ॥ २ ॥ कम्बलाच्च संज्ञायाम् ॥ ३ ॥ विभाषा हविरपूपादिभ्यः ॥ ४ ॥ तस्मै हितम् ॥ ५ ॥ शरीरावयवाद्यत् ॥ ६ ॥ खलयवमाषतिलवृषब्रह्मणश्च ॥ ७ ॥ अजाविभ्यां थ्यन् ॥ ८ ॥ आत्मन्विश्वजनभोगोत्तरपदात् खः ॥ ९ ॥ सर्वपुरुषाभ्यां णढञौ ॥ १० ॥ माणवचरकाभ्यां खञ् ॥ ११ ॥ तदर्थं विकृतेः प्रकृतौ ॥ १२ ॥ छदिरुपधिबलेर्ढञ् ॥ १३ ॥ ऋषभोपानहोर्ञ्यः ॥ १४ ॥ चर्मणोऽञ् ॥ १५ ॥ तदस्य तदस्मिन्स्यादिति ॥ १६ ॥ परिखाया ढञ् ॥ १७ ॥ प्राग्वतेष्ठञ् ॥ १८ ॥ आर्हादगोपुच्छसङ्ख्यापरिमाणाट्ठक् ॥ १९ ॥ असमासे निष्कादिभ्यः ॥ २० ॥ शताच्च ठन्यतावशते ॥ २१ ॥ संख्याया अतिशदन्तायाः कन् ॥ २२ ॥ वतोरिड् वा ॥ २३ ॥ विंशतित्रिंशद्भ्यां ड्वुनसंज्ञायाम् ॥ २४ ॥ कंसाट्टिठन् ॥ २५ ॥ शूर्पादञन्यतरस्याम् ॥ २६ ॥ शतमानविंशतिकसहस्रवसनादण् ॥ २७ ॥ अध्यर्द्धपूर्वद्विगोर्लुगसंज्ञायाम् ॥ २८ ॥ विभाषा कार्षापणसहस्राभ्याम् ॥ २९ ॥ द्वित्रिपूर्वान्निष्कात् ॥ ३० ॥ बिस्ताच्च ॥ ३१ ॥ विंशतिकात् खः ॥ ३२ ॥ खार्या ईकन् ॥ ३३ ॥ पणपादमाषशताद्यत् ॥ ३४ ॥ शाणाद्वा ॥ ३५ ॥ द्वित्रिपूर्वादण् च ॥ ३६ ॥ तेन क्रीतम् ॥ ३७ ॥ तस्य निमित्तं संयोगोत्पातौ ॥ ३८ ॥ गोद्व्यचो संख्यापरिमाणाश्वादेर्यत् ॥ ३९ ॥ पुत्राच्छ च ॥ ४० ॥ सर्वभूमिपृथिवीभ्यामणञौ ॥ ४१ ॥ तस्येश्वरः ॥ ४२ ॥ तत्र विदित इति च ॥ ४३ ॥ लोकसर्वलोकात् ठञ् ॥ ४४ ॥ तस्य वापः ॥ ४५ ॥ पात्रात्ष्ठन् ॥ ४६ ॥ तदस्मिन् वृद्ध्यायलाभशुल्कोपदा दीयते ॥ ४७ ॥ पूरणार्द्धाट्ठन् ॥ ४८ ॥ भागाद्यच्च ॥ ४९ ॥ तद्धरति वहत्यावहति भाराद्वंशादिभ्यः ॥ ५० ॥ वस्नद्रव्या-

भ्यां ठन्कनौ ॥ ५१ ॥ संभवत्यवहरति पचति ॥ ५२ ॥ आढकाचितपात्रात् खोऽन्यतरस्याम् ॥ ५३ ॥ द्विगोष्ठंश्च ॥ ५४ ॥ कुलिजाल्लुक्खौ च ॥ ५५ ॥ सोऽस्यांशवस्नभृतयः ॥ ५६ ॥ तदस्य परिमाणम् ॥ ५७ ॥ संख्यायाः संज्ञासङ्घसूत्राध्ययनेषु ॥ ५८ ॥ पङ्क्तिविंशतित्रिंशच्चत्वारिंशत्पञ्चाशत्षष्टिसप्तत्यशीतिनवतिशतम् ॥ ५९ ॥ पञ्चद्दशतौ वर्गे वा ॥ ६० ॥ सप्तनोऽञ् छन्दसि ॥ ६१ ॥ त्रिंशच्चत्वारिंशतोर्ब्राह्मणे संज्ञायां डण् ॥ ६२ ॥ तदर्हति ॥ ६३ ॥ छेदादिभ्यो नित्यम् ॥ ६४ ॥ शीर्षच्छेदाद्यच्च ॥ ६५ ॥ दण्डादिभ्यो यः ॥ ६६ ॥ छन्दसि च ॥ ६७ ॥ पात्राद् घंश्च ॥ ६८ ॥ कडंकरदक्षिणाच्छ च ॥ ६९ ॥ स्थालीबिलात् ॥ ७० ॥ यज्ञर्त्विग्भ्यां घखञौ ॥ ७१ ॥ पारायणतुरायणचान्द्रायणं वर्तयति ॥ ७२ ॥ संशयमापन्नः ॥ ७३ ॥ योजनङ्गच्छति ॥ ७४ ॥ पथः ष्कन् ॥ ७५ ॥ पन्थो ण नित्यम् ॥ ७६ ॥ उत्तरपथेनाहृतञ्च ॥ ७७ ॥ कालात् ॥ ७८ ॥ तेन निर्वृत्तम् ॥ ७९ ॥ तमधीष्टो भृतो भूतो भावी ॥ ८० ॥ मासाद्वयसि यत्खञौ ॥ ८१ ॥ द्विगोर्यप् ॥ ८२ ॥ षण्मासाण्ण्यच्च ॥ ८३ ॥ अवयसि ठंश्च ॥ ८४ ॥ समायाः खः ॥ ८५ ॥ द्विगोर्वा ॥ ८६ ॥ रात्र्यहः संवत्सराच्च ॥ ८७ ॥ वर्षाल्लुक् च ॥ ८८ ॥ चित्तवति नित्यम् ॥ ८९ ॥ षष्टिकाः षष्टिरात्रेण पच्यन्ते ॥ ९० ॥ वत्सरान्ताच्छश्छन्दसि ॥ ९१ ॥ संपरिपूर्वात् ख च ॥ ९२ ॥ तेन परिजय्यलभ्यकार्य्यसुकरम् ॥ ९३ ॥ तदस्य ब्रह्मचर्य्यम् ॥ ९४ ॥ तस्य च दक्षिणायज्ञाख्येभ्यः ॥ ९५ ॥ तत्र च दीयते कार्य्यं भववत् ॥ ९६ ॥ व्युष्टादिभ्योऽण् ॥ ९७ ॥ तेन यथाकथाचहस्ताभ्यां णयतौ ॥ ९८ ॥ संपादिनि ॥ ९९ ॥ कर्मवेषाद्यत् ॥ १०० ॥ तस्मै प्रभवति सन्तापादिभ्यः ॥ १०१ ॥ योगाद्यच्च ॥ १०२ ॥ कर्मण उकञ् ॥ १०३ ॥ समयस्तदस्य प्राप्तम् ॥ १०४ ॥ ऋतोरण् ॥ १०५ ॥ छन्दसि घस् ॥ १०६ ॥ कालाद्यत् ॥ १०७ ॥ प्रकृष्टे ठञ् ॥ १०८ ॥ प्रयोजनम् ॥ १०९ ॥ विशाखाषाढादण्मन्थदण्डयोः ॥ ११० ॥ अनुप्रवचनादिभ्यश्छः ॥ १११ ॥ समापनात्सपूर्वपदात् ॥ ११२ ॥ ऐकागारिकट् चौरे ॥ ११३ ॥ आकालिकडाद्यन्तवचने ॥ ११४ ॥ तेन तुल्यं क्रिया चेद्वतिः ॥ ११५ ॥

तत्र तस्येव ॥ ११६ ॥ तदर्हम् ॥ ११७ ॥ उपसर्गाच्छन्दसि धात्वर्थे ॥ ११८ ॥ तस्य भावस्त्वतलौ ॥ ११९ ॥ आ च त्वात् ॥ १२० ॥ न नञ्पूर्वात् तत्पुरुषादचतुरसंगतलवणवटयुधकतरसलसेभ्यः ॥ १२१ ॥ पृथ्वादिभ्य इमनिज्वा ॥ १२२ ॥ वर्णदृढादिभ्यः ष्यञ्च ॥ १२३ ॥ गुणवचनब्राह्मणादिभ्यः कर्मणि च ॥ १२४ ॥ स्तेनाद्यन्नलोपश्च ॥ १२५ ॥ सख्युर्यः ॥ १२६ ॥ कपिज्ञात्योर्ढक् ॥ १२७ ॥ पत्यन्तपुरोहितादिभ्यो यक् ॥ १२८ ॥ प्राणभृज्जातिवयोवचनोद्गात्रादिभ्योऽञ् ॥ १२९ ॥ हायनान्तयुवादिभ्योऽण् ॥ १३० ॥ इगन्ताच्च लघुपूर्वात् ॥ १३१ ॥ योपधाद् गुरूपोत्तमाद्वुञ् ॥ १३२ ॥ द्वन्द्वमनोज्ञादिभ्यश्च ॥ १३३ ॥ गोत्रचरणाच्छ्लाघात्याकारतदवेतेषु ॥ १३४ ॥ होत्राभ्यश्छः ॥ १३५ ॥ ब्रह्मणस्त्वः ॥ १३६ ॥ *

इति पञ्चमाध्यायस्य प्रथमः पादः ॥

द्वितीयपादारम्भः ॥

धान्यानां भवने क्षेत्रे खञ् ॥ १ ॥ व्रीहिशाल्योर्ढक् ॥ २ ॥ यवयवकषष्टिकाद्यत् ॥ ३ ॥ विभाषा तिलमाषोमाभङ्गाणुभ्यः ॥ ४ ॥ सर्वचर्मणः कृतः खखञौ ॥ ५ ॥ यथामुखसंमुखस्य दर्शन खः ॥ ६ ॥ तत्सर्वादेः पथ्यङ्गकर्मपत्रपात्रं व्याप्नोति ॥ ७ ॥ आप्रपदम्प्राप्नोति ॥ ८ ॥ अनुपदसर्वान्नायानयं बद्धाभक्षयतिनेयेषु ॥ ९ ॥ परोवरपरम्परपुत्रपौत्रमनुभवति ॥ १० ॥ अवारपारात्यन्तानुकामङ्गामी ॥ ११ ॥ समांसमां विजायते ॥ १२ ॥ अद्यश्वीनावष्टब्धे ॥ १३ ॥ आगवीनः ॥ १४ ॥ अनुग्वलंगामी ॥ १५ ॥ अध्वनो यत्खौ ॥ १६ ॥ अभ्यमित्राच्छ च ॥ १७ ॥ गोष्ठात्खञ् भूतपूर्वे ॥ १८ ॥ अश्वस्यैकाहगमः ॥ १९ ॥ शालीनकौपीने अधृष्टाकार्ययोः ॥ २० ॥ व्रातेन जीवति ॥ २१ ॥ साप्तपदीनं सख्यम् ॥ २२ ॥ हैयङ्गवीनं संज्ञायाम् ॥ २३ ॥ तस्य पाकमूले पील्वादिकर्णादिभ्यः

---

* प्राक्क्रीताच्छताच्च सर्वभूमिसप्तनोन्मासातस्मै प्रभवति न नञ्पूर्वात् षोडश ॥

कुण्ब्जाहचौ ॥ २४ ॥ पत्नाचिः ॥ २५ ॥ तेन वित्तश्चुञ्चुप्चणपौ ॥ २६ ॥ संविनञ्भ्यां नानाञौ न सह ॥ २७ ॥ वेः शालच्छङ्कटचौ ॥ २८ ॥ संप्रोदश्च कटच् ॥ २९ ॥ अवात्कुटारच्च ॥ ३० ॥ नते नासिकायाः सञ्ज्ञायां टीटञ्नाटज्भ्रटचः ॥ ३१ ॥ नेर्बिडज्बिरीसचौ ॥ ३२ ॥ इनच्पिटच्चिक चि च ॥ ३३ ॥ उपाधिभ्यां त्यकन्नासन्नारूढयोः ॥ ३४ ॥ कर्मणि घटो ठच् ॥ ३५ ॥ तदस्य सञ्जातन्तारकादिभ्य इतच् ॥ ३६ ॥ प्रमाणे द्वयसज्दघ्नञ्मात्रचः ॥ ३७ ॥ पुरुषहस्तिभ्यामण् च ॥ ३८ ॥ यत्तदेतेभ्यः परिमाणे वतुप् ॥ ३९ ॥ किमिदंभ्यां वो घः ॥ ४० ॥ किमः सङ्ख्यापरिमाणे डति च ॥ ४१ ॥ संख्याया अवयवे तयप् ॥ ४२ ॥ द्वित्रिभ्यां तयस्यायज्वा ॥ ४३ ॥ उभादुदात्तो नित्यम् ॥ ४४ ॥ तदस्मिन्नधिकमिति दशान्ताड्डः ॥ ४५ ॥ शदन्तविंशतेश्च ॥ ४६ ॥ संख्याया गुणस्य निमाने मयट् ॥ ४७ ॥ तस्य पूरणे डट् ॥ ४८ ॥ नान्तादसंख्यादेर्मट् ॥ ४९ ॥ थट् च छन्दसि ॥ ५० ॥ षट्कतिकतिपयचतुरां थुक् ॥ ५१ ॥ बहुपूगगणसंघस्य तिथुक् ॥ ५२ ॥ वतोरिथुक् ॥ ५३ ॥ द्वेस्तीयः ॥ ५४ ॥ त्रेः सम्प्रसारणञ्च ॥ ५५ ॥ विंशात्यादिभ्यस्तमडन्यतरस्याम् ॥ ५६ ॥ नित्यं शतादिमासार्द्धमाससंवत्सराच्च ॥ ५७ ॥ षष्ठ्यादेश्चासंख्यादेः ॥ ५८ ॥ मतौ छः सूक्तसाम्नोः ॥ ५९ ॥ अध्यायानुवाकयोर्लुक् ॥ ६० ॥ विमुक्तादिभ्योऽण् ॥ ६१ ॥ गोषदादिभ्यो वुन् ॥ ६२ ॥ तत्र कुशलः पथः ॥ ६३ ॥ आकर्षादिभ्यः कन् ॥ ६४ ॥ धनहिरण्यात्कामे ॥ ६५ ॥ स्वाङ्गेभ्यः प्रसिते ॥ ६६ ॥ उदराट्ठगाद्यूने ॥ ६७ ॥ सस्येन परिजातः ॥ ६८ ॥ अंशं हारी ॥ ६९ ॥ तन्त्रादचिरापहृते ॥ ७० ॥ ब्राह्मणकोष्णिके सञ्ज्ञायाम् ॥ ७१ ॥ शीतोष्णाभ्यां कारिणि ॥ ७२ ॥ अधिकम् ॥ ७३ ॥ अनुकाभिकाभीकः कमिता ॥ ७४ ॥ पार्श्वेनान्विच्छति ॥ ७५ ॥ अयः शूलदण्डाजिनाभ्यां ठक्ठञौ ॥ ७६ ॥ तावतिथं ग्रहणमिति लुग्वा ॥ ७७ ॥ स एषां ग्रामणीः ॥ ७८ ॥ शृङ्खलमस्य बन्धनं करभे ॥ ७९ ॥ उत्क उन्मनाः ॥ ८० ॥ कालप्रयोजनाद्रोगे ॥ ८१ ॥ तदस्मिन्नन्नं प्रायेण संज्ञायाम् ॥ ८२ ॥ कुल्माषादञ् ॥ ८३ ॥ श्रोत्रियश्छन्दोऽधीते ॥ ८४ ॥ श्राद्धमनेन भुक्तमिनिठनौ ॥ ८५ ॥ पूर्वादि

निः ॥ ८६ ॥ सपूर्वाच्च ॥ ८७ ॥ इष्टादिभ्यश्च ॥ ८८ ॥ छन्दसि परिपन्थिपरिपरिणौ पर्य्यवस्थातरि ॥ ८९ ॥ अनुपद्यन्वेष्टा ॥ ९० ॥ साक्षाद् द्रष्टरि संज्ञायाम् ॥ ९१ ॥ क्षेत्रियच् परक्षेत्रे चिकित्स्यः ॥ ९२ ॥ इन्द्रियमिन्द्रलिङ्गमिन्द्रदृष्टमिन्द्रसृष्टमिन्द्रजुष्टमिन्द्रदत्तमिति वा ॥ ९३ ॥ तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् ॥ ९४ ॥ रसादिभ्यश्च ॥ ९५ ॥ प्राणिस्थादातो लजन्यतरस्याम् ॥ ९६ ॥ सिध्मादिभ्यश्च ॥ ९७ ॥ वत्सांसाभ्यां कामबले ॥ ९८ ॥ फेनादिलच्च ॥ ९९ ॥ लोमादिपामादिपिच्छादिभ्यः शनेलचः ॥ १०० ॥ प्रज्ञाश्रद्धार्चाभ्यो णः ॥ १०१ ॥ तपः सहस्राभ्यां विनीनी ॥ १०२ ॥ अण् च ॥ १०३ ॥ सिकताशर्कराभ्याञ्च ॥ १०४ ॥ देशे लुबिलचौ च ॥ १०५ ॥ दन्त उन्नत उरच् ॥ १०६ ॥ ऊषशुषिमुष्कमधो रः ॥ १०७ ॥ द्युद्रुभ्यां मः ॥ १०८ ॥ केशाद्वोऽन्यतरस्याम् ॥ १०९ ॥ गाण्डयजगात्सञ्ज्ञायाम् ॥ ११० ॥ काण्डाण्डादीरन्नीरचौ ॥ १११ ॥ रजःकृष्यासुतिपरिषदो वलच् ॥ ११२ ॥ दन्तशिखात्सञ्ज्ञायाम् ॥ ११३ ॥ ज्योत्स्नातमिस्राशृङ्गिणोर्ज्जस्विन्नूर्ज्जस्वलगोमिन्मलिनमलीमसाः ॥ ११४ ॥ अत इनिठनौ ॥ ११५ ॥ व्रीह्यादिभ्यश्च ॥ ११६ ॥ तुन्दादिभ्य इलच्च ॥ ११७ ॥ एकगोपूर्वाट्ठञ् नित्यम् ॥ ११८ ॥ शतसहस्रान्ताच्च निष्कात् ॥ ११९ ॥ रूपादाहतप्रशंसयोर्यप् ॥ १२० ॥ अस्मायामेधास्रजो विनिः ॥ १२१ ॥ बहुलं छन्दसि ॥ १२२ ॥ ऊर्णाया युस् ॥ १२३ ॥ वाचो ग्मिनिः ॥ १२४ ॥ आलजाटचौ बहुभाषिणि ॥ १२५ ॥ स्वामिन्नैश्वर्ये ॥ १२६ ॥ अर्श आदिभ्योऽच् ॥ १२७ ॥ द्वन्द्वोपतापगर्ह्यात्प्राणिस्थादिनिः ॥ १२८ ॥ वातातीसाराभ्यां कुक् च ॥ १२९ ॥ वयसि पूरणात् ॥ १३० ॥ सुखादिभ्यश्च ॥ १३१ ॥ धर्म्मशीलवर्णान्ताच्च ॥ १३२ ॥ हस्ताज्जातौ ॥ १३३ ॥ वर्णाद् ब्रह्मचारिणि ॥ १३४ ॥ पुष्करादिभ्यो देशे ॥ १३५ ॥ बलादिभ्यो मतुबन्यतरस्याम् ॥ १३६ ॥ संज्ञायां मन्माभ्याम् ॥ १३७ ॥ कंशंभ्यां बभयुस्तितुतयसः ॥ १३८ ॥ तुन्दिवलिवटेर्भः ॥ १३९ ॥ अहंशुभमोर्युस् ॥ १४० ॥ *

इति पञ्चमाध्यायस्य द्वितीयः पादः ॥

* धान्यानां व्रातेनकिमोविमुक्ताकालप्रज्ञा अस्मायामेधाविंशतिः ॥

तृतीयपादारम्भः ॥

प्राग्दिशो विभक्तिः ॥ १ ॥ किं सर्व्वनामबहुभ्योऽद्व्यादिभ्यः ॥२॥ इदम इश् ॥ ३ ॥ एतेतौ रथोः ॥ ४ ॥ एतदोऽश् ॥ ५ ॥ सर्वस्य सोऽन्यतरस्यां दि ॥ ६ ॥ पञ्चम्यास्तसिल् ॥ ७ ॥ तसेश्च ॥ ८ ॥ पर्य्यभिभ्याञ्च ॥ ९ ॥ सप्तम्यास्त्रल् ॥ १० ॥ इदमो हः ॥ ११ ॥ किमोऽत् ॥ १२ ॥ वा ह च छन्दसि ॥ १३ ॥ इतराभ्योऽपि दृश्यन्ते ॥ १४ ॥ सर्वैकान्यकिंयत्तदः काले दा ॥ १५ ॥ इदमोर्हिल् ॥ १६ ॥ अधुना ॥ १७ ॥ दानीं च ॥ १८ ॥ तदो दा च ॥ १९ ॥ तयोर्दार्हिलौ च छन्दसि ॥ २० ॥ अनद्यतनेर्हिलन्यतरस्याम् ॥ २१ ॥ सद्यःपरुत्परार्य्यैषमःपरेद्यव्यद्यपूर्वेद्युरन्येद्युरन्यतरेद्युरितरेद्युरपरेद्युरधरेद्युरुभयेद्युरुत्तरेद्युः ॥ २२ ॥ प्रकारवचने थाल् ॥ २३ ॥ इदमस्थमुः ॥ २४ ॥ किमश्च ॥ २५ ॥ था हेतौ च छन्दसि ॥ २६ ॥ दिक्शब्देभ्यः सप्तमीपञ्चमीप्रथमाभ्यो दिग्देशकालेष्वस्तातिः ॥ २७ ॥ दक्षिणोत्तराभ्यामतसुच् ॥ २८ ॥ विभाषा परावराभ्याम् ॥ २९ ॥ अञ्चेर्लुक् ॥ ३० ॥ उपर्य्युपरिष्टात् ॥ ३१ ॥ पश्चात् ॥ ३२ ॥ पश्च पश्चा च छन्दसि ॥ ३३ ॥ उत्तराधरदक्षिणादातिः ॥ ३४ ॥ एनबन्यतरस्यामदूरेऽपञ्चम्याः ॥ ३५ ॥ दक्षिणादाच् ॥ ३६ ॥ आहि च दूरे ॥ ३७ ॥ उत्तराच्च ॥ ३८ ॥ पूर्वाधरावराणामसि पुरधवश्चैषाम् ॥ ३९ ॥ अस्ताति च ॥ ४० ॥ विभाषाऽवरस्य ॥ ४१ ॥ संख्याया विधार्थे धा ॥ ४२ ॥ अधिकरणविचाले च ॥ ४३ ॥ एकाद्धो ध्यमुञन्यतरस्याम् ॥ ४४ ॥ द्वित्र्योश्च धमुञ् ॥ ४५ ॥ एधाच्च ॥ ४६ ॥ याप्ये पाशप् ॥ ४७ ॥ पूरणाद्भागे तीयादन् ॥ ४८ ॥ प्रागेकादशभ्योऽच्छन्दसि ॥ ४९ ॥ षष्ठाष्टमाभ्यां ञ च ॥ ५० ॥ मानपश्वङ्गयोः कन्लुकौ च ॥ ५१ ॥ एकादाकिनिच्चासहाये ॥ ५२ ॥ भूत पूर्वे चरट् ॥ ५३ ॥ षष्ठ्या रूप्य च ॥ ५४ ॥ अतिशायने तमबिष्ठनौ ॥ ५५ ॥ तिङश्च ॥ ५६ ॥ द्विवचनविभज्योपपदे तरबीयसुनौ ॥ ५७ ॥ अजादी गुणवचनादेव ॥ ५८ ॥ तुश्छन्दसि ॥ ५९ ॥ प्रशस्यस्य श्रः ॥ ६० ॥ ज्य च ॥ ६१ ॥ वृद्धस्य च ॥ ६२ ॥ अन्तिकबाढयोर्नेदसाधौ ॥ ६३ ॥ युवाल्पयोः कनन्यतरस्याम् ॥ ६४ ॥ विन्मतोर्लुक् ॥ ६५ ॥

प्रशंसायां रूपप् ॥ ६६ ॥ ईषदसमाप्तौ कल्पब्देश्यदेशीयरः ॥ ६७ ॥ विभाषा सुपो बहुच्पुरस्तात्तु ॥ ६८ ॥ प्रकारवचने जातीयर् ॥ ६९ ॥ प्रागिवात्कः ॥ ७० ॥ अव्ययसर्वनाम्नामकच्प्राक्टेः ॥ ७१ ॥ कस्य च दः ॥ ७२ ॥ अज्ञाते ॥ ७३ ॥ कुत्सिते ॥ ७४ ॥ सञ्ज्ञायाङ्कन् ॥ ७५ ॥ अनुकम्पायाम् ॥ ७६ ॥ नीतौ च तद्युक्तात् ॥ ७७ ॥ बह्वचो मनुष्यनाम्नष्ठज्वा ॥ ७८ ॥ घनिलचौ च ॥ ७९ ॥ प्राचामुपादेरडज्वुचौ च ॥ ८० ॥ जातिनाम्नः कन् ॥ ८१ ॥ अजिनान्तस्योत्तरपदलोपश्च ॥ ८२ ॥ ठाजादावूर्ध्वं द्वितीयादचः ॥ ८३ ॥ शेवलसुपरिविशालवरुणार्य्यमादीनां तृतीयात् ॥ ८४ ॥ अल्पे ॥ ८५ ॥ ह्रस्वे ॥ ८६ ॥ सञ्ज्ञायां कन् ॥ ८७ ॥ कुटीशमीशुण्डाभ्यो रः ॥ ८८ ॥ कुत्वा डुपच् ॥ ८९ ॥ कासूगोणीभ्यां ष्टरच् ॥ ९० ॥ वत्सोक्षाश्वर्षभेभ्यश्च तनुत्वे ॥ ९१ ॥ किं यत्तदोर्निर्द्धारणे द्वयोरेकस्य डतरच् ॥ ९२ ॥ वा बहूनां जातिपरिप्रश्ने डतमच् ॥ ९३ ॥ एकाच्च प्राचाम् ॥ ९४ ॥ अवक्षेपणे कन् ॥ ९५ ॥ इवे प्रतिकृतौ ॥ ९६ ॥ सञ्ज्ञायाञ्च ॥ ९७ ॥ लुम्मनुष्ये ॥ ९८ ॥ जीविकार्थे चापण्ये ॥ ९९ ॥ देवपथादिभ्यश्च ॥ १०० ॥ वस्तेर्ढञ् ॥ १०१ ॥ शिलाया ढः ॥ १०२ ॥ शाखादिभ्यो यः ॥ १०३ ॥ द्रव्यञ्च भव्ये ॥ १०४ ॥ कुशाग्राच्छः ॥ १०५ ॥ समासाच्च तद्विषयात् ॥ १०६ ॥ शर्करादिभ्योऽण् ॥ १०७ ॥ अङ्गुल्यादिभ्यष्ठक् ॥ १०८ ॥ एकशालायाष्ठजन्यतरस्याम् ॥ १०९ ॥ कर्क्कलोहितादीकक् ॥ ११० ॥ प्रत्नपूर्वविश्वेमात्थाल्छन्दसि ॥ १११ ॥ पूगाञ्ञ्योऽग्रामणीपूर्वात् ॥ ११२ ॥ व्रातच्फञोरस्त्रियाम् ॥ ११३ ॥ आयुधजीविसङ्घाञ्ञ्यड्वाहीकेष्वब्राह्मणराजन्यात् ॥ ११४ ॥ वृकाट्टेण्यण् ॥ ११५ ॥ दामन्यादित्रिगर्तषष्ठाच्छः ॥ ११६ ॥ पर्श्वादियौधेयादिभ्योऽणञौ ॥ ११७ ॥ अभिजिद्विदभृच्छालावच्छिखावच्छमीवदूर्णावच्छ्रुमदणो यञ् ॥ ११८ ॥ ञ्यादयस्तद्राजाः ॥ ११९ ॥ *

इति पञ्चमाध्यायस्य तृतीयः पादः ॥

चतुर्थपादारम्भः ॥

पादशतस्य सङ्ख्यादेर्वीप्सायां वुन्लोपश्च ॥ १ ॥ दण्डव्यवसर्गयोश्च

---

* प्राग्दिशोऽनद्यतनेविभाषाञ्यन्तजातिनाम्नोवस्तेरेकोनविंशतिः ॥



॥ २ ॥ स्थूलादिभ्यः प्रकारवचने कन् ॥ ३ ॥ अनत्यन्तगतौ क्तात् ॥ ४ ॥ न सामिवचने ॥ ५ ॥ बृहत्या आच्छादने ॥ ६ ॥ अषडक्षाशितङ्ग्वलङ्कर्मालम्पुरुषाध्युत्तरपदात्खः ॥ ७ ॥ विभाषाञ्चेरदिक् स्त्रियाम् ॥ ८ ॥ जात्यन्ताच्छ बन्धुनि ॥ ९ ॥ स्थानान्ताद्विभाषा सस्थानेनेति चेत् ॥ १० ॥ किमेत्तिङव्ययघादाम्वद्रव्यप्रकर्षे ॥ ११ ॥ अमु च छन्दसि ॥ १२ ॥ अनुगादिनष्ठक् ॥ १३ ॥ णचः स्त्रियामञ् ॥ १४ ॥ अणिनुणः ॥ १५ ॥ विसारिणो मत्स्ये ॥ १६ ॥ सङ्ख्यायाः क्रियाभ्यावृत्तिगणने कृत्वसुच् ॥ १७ ॥ द्वित्रिचतुर्भ्यः सुच् ॥ १८ ॥ एकस्य सकृच्च ॥ १९ ॥ विभाषा बहोर्धाऽविप्रकृष्टकाले ॥ २० ॥ तत्प्रकृतवचने मयट् ॥ २१ ॥ समूहवच्च बहुषु ॥ २२ ॥ अनन्तावसथेतिहभेषजाञ्ञ्यः ॥ २३ ॥ देवतान्तात्तादर्थ्ये यत् ॥ २४ ॥ पादार्घाभ्यां च ॥ २५ ॥ अतिथेर्ञ्यः ॥ २६ ॥ देवात्तल् ॥ २७ ॥ अवेः कः ॥ २८ ॥ यावादिभ्यः कन् ॥ २९ ॥ लोहितान्मणौ ॥ ३० ॥ वर्णे चानित्ये ॥ ३१ ॥ रक्ते ॥ ३२ ॥ कालाच्च ॥ ३३ ॥ विनयादिभ्यष्ठक् ॥ ३४ ॥ वाचो व्याहृतार्थायाम् ॥ ३५ ॥ तद्युक्तात्कर्मणोऽण् ॥ ३६ ॥ ओषधेरजातौ ॥ ३७ ॥ प्रज्ञादिभ्यश्च ॥ ३८ ॥ मृदस्तिकन् ॥ ३९ ॥ सस्नौ प्रशंसायाम् ॥ ४० ॥ वृकज्येष्ठाभ्यां तिल्तातिलौ च छन्दसि ॥ ४१ ॥ बह्वल्पार्थाच्छस्कारकादन्यतरस्याम् ॥ ४२ ॥ सङ्ख्यैकवचनाच्च वीप्सायाम् ॥ ४३ ॥ प्रतियोगे पञ्चम्यास्तसिः ॥ ४४ ॥ अपादाने चाहीयरुहोः ॥ ४५ ॥ अतिग्रहाव्यथनक्षेपेष्वकर्तरि तृतीयायाः ॥ ४६ ॥ हीयमानपापयोगाच्च ॥ ४७ ॥ षष्ठ्या व्याश्रये ॥ ४८ ॥ रोगाच्चापनयने ॥ ४९ ॥ अभूततद्भावे कृभ्वस्तियोगे संपद्यकर्तरि च्विः ॥ ५० ॥ अरुर्मनश्चक्षुश्चेतोरहोरजसां लोपश्च ॥ ५१ ॥ विभाषा साति कात्स्न्र्ये ॥ ५२ ॥ अभिविधौ संपदा च ॥ ५३ ॥ तदधीनवचने ॥ ५४ ॥ देये त्रा च ॥ ५५ ॥ देवमनुष्यपुरुषपुरुमर्त्येभ्यो द्वितीयासप्तम्योर्बहुलम् ॥ ५६ ॥ अव्यक्तानुकरणाद् द्व्यजवरार्द्धादनितौ डाच् ॥ ५७ ॥ कृञो द्वितीयतृतीयशम्बबीजात्कृषौ ॥ ५८ ॥ सङ्ख्यायाश्च गुणान्तायाः ॥ ५९ ॥ समयाच्च यापनायाम् ॥ ६० ॥ सपत्र निष्पत्रादतिव्यथने ॥ ६१ ॥ निष्कुलान्निष्कोषणे ॥ ६२ ॥ सुखप्रियादानुलोम्ये ॥ ६३ ॥

दुःखात्प्रातिलोम्ये ॥ ६४ ॥ शूलात्पाके ॥ ६५ ॥ सत्यादशपथे ॥ ६६ ॥ मद्रात्परिवापणे ॥ ६७ ॥ समासान्ताः ॥ ६८ ॥ न पूजनात् ॥ ६९ ॥ किमः क्षेपे ॥ ७० ॥ नञस्तत्पुरुषात् ॥ ७१ ॥ पथो विभाषा ॥ ७२ ॥ बहुव्रीहौ सङ्ख्येये डजबहुगणात् ॥ ७३ ॥ ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे ॥ ७४ ॥ अच् प्रत्यन्ववपूर्वात्सामलोम्नः ॥ ७५ ॥ अक्ष्णोऽदर्शनात् ॥ ७६ ॥ अचतुरविचतुरसुचतुरस्त्रीपुंसधेन्वनडुहर्क्सामवाङ्मनसाक्षिभ्रुवदारगवोर्वष्ठीवपदष्ठीवनक्तंदिवरात्रिंदिवाहर्दिवसरजसनिःश्रेयसपुरुषायुषद्व्यायुषत्र्यायुषर्ग्यजुषजातोक्षमहोक्षवृद्धोक्षोपशुनगोष्ठश्वाः ॥ ७७ ॥ ब्रह्महस्तिभ्यां वर्चसः ॥ ७८ ॥ अवसमन्धेभ्यस्तमसः ॥ ७९ ॥ श्वसोऽवसीयः श्रेयसः ॥ ८० ॥ अन्ववतप्ताद्रहसः ॥ ८१ ॥ प्रतेरुरसः सप्तमीस्थात् ॥ ८२ ॥ अनुगवमायामे ॥ ८३ ॥ द्विस्तावा त्रिस्तावा वेदिः ॥ ८४ ॥ उपसर्गादध्वनः ॥ ८५ ॥ तत्पुरुषस्याङ्गुलेः सङ्ख्याव्ययादेः ॥ ८६ ॥ अहः सर्वैकदेशसङ्ख्यातपुण्याच्च रात्रेः ॥ ८७ ॥ अह्नोऽह्न एतेभ्यः ॥ ८८ ॥ न सङ्ख्यादेः समाहारे ॥ ८९ ॥ उत्तमैकाभ्यां च ॥ ९० ॥ राजाहःसखिभ्यष्टच् ॥ ९१ ॥ गोरतद्धितलुकि ॥ ९२ ॥ अग्राख्यायामुरसः ॥ ९३ ॥ अनोऽश्मायःसरसां जातिसंज्ञयोः ॥ ९४ ॥ ग्रामकौटाभ्यां च तक्ष्णः ॥ ९५ ॥ अतेः शुनः ॥ ९६ ॥ उपमानादप्राणिषु ॥ ९७ ॥ उत्तरमृगपूर्वाच्च सक्थ्नः ॥ ९८ ॥ नावो द्विगोः ॥ ९९ ॥ अर्द्धाच्च ॥ १०० ॥ खार्य्याः प्राचाम् ॥ १०१ ॥ द्वित्रिभ्यामञ्जलेः ॥ १०२ ॥ अनसन्तान्नपुंसकाच्छन्दसि ॥ १०३ ॥ ब्रह्मणो जानपदाख्यायाम् ॥ १०४ ॥ कुमहद्भ्यामन्यतरस्याम् ॥ १०५ ॥ द्वन्द्वाच्चुदषहान्तात्समाहारे ॥ १०६ ॥ अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः ॥ १०७ ॥ अनश्च ॥ १०८ ॥ नपुंसकादन्यतरस्याम् ॥ १०९ ॥ नदीपौर्णमास्याग्रहायणीभ्यः ॥ ११० ॥ झयः ॥ १११ ॥ गिरेश्च सेनकस्य ॥ ११२ ॥ बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात्षच् ॥ ११३ ॥ अङ्गुलेर्दारुणि ॥ ११४ ॥ द्वित्रिभ्यां ष मूर्द्ध्नः ॥ ११५ ॥ अप्पूरणीप्रमाण्योः ॥ ११६ ॥ अन्तर्बहिर्भ्यां च लोम्नः ॥ ११७ ॥ अञ्नासिकायाः संज्ञायां नसं चास्थूलात् ॥ ११८ ॥ उपसर्गाच्च ॥ ११९ ॥ सुप्रातसुश्वसुदिव-

शारिकुक्षचतुरश्रैणीपदाजपदप्रोष्ठपदाः ॥ १२० ॥ नञ्दुःसुभ्यो हलिसक्थ्योरन्यतरस्याम् ॥ १२१ ॥ नित्यमसिच् प्रजामेधयोः ॥ १२२ ॥ बहुप्रजाश्छन्दसि ॥ १२३ ॥ धर्म्मादनिच् केवलात् ॥ १२४ ॥ जम्भासुहरिततृणसोमेभ्यः ॥ १२५ ॥ दक्षिणेर्मा लुब्धयोगे ॥ १२६ ॥ इच् कर्म्मव्यतिहारे ॥ १२७ ॥ द्विदण्ड्यादिभ्यश्च ॥ १२८ ॥ प्रसंभ्यां जानुनोर्ज्ञुः ॥ १२९ ॥ ऊर्ध्वाद् विभाषा ॥ १३० ॥ ऊधसोऽनङ् ॥ १३१ ॥ धनुषश्च ॥ १३२ ॥ वा सञ्ज्ञायाम् ॥ १३३ ॥ जायाया निङ् ॥ १३४ ॥ गन्धस्येदुत्पूतिसुसुरभिभ्यः ॥ १३५ ॥ अल्पाख्यायाम् ॥ १३६ ॥ उपमानाच्च ॥ १३७ ॥ पादस्य लोपोऽहस्त्यादिभ्यः ॥ १३८ ॥ कुम्भपदीषु च ॥ १३९ ॥ सङ्ख्यासुपूर्वस्य ॥ १४० ॥ वयसि दन्तस्य दतृ ॥ १४१ ॥ छन्दसि च ॥ १४२ ॥ स्त्रियां संज्ञायाम् ॥ १४३ ॥ विभाषा श्यावारोकाभ्याम् ॥ १४४ ॥ अग्रान्तशुद्धशुभ्रवृषवराहेभ्यश्च ॥ १४५ ॥ ककुदस्यावस्थायां लोपः ॥ १४६ ॥ त्रिककुत्पर्वते ॥ १४७ ॥ उद्विभ्यां काकुदस्य ॥ १४८ ॥ पूर्णाद्विभाषा ॥ १४९ ॥ सुहृद्दुर्हृदौ मित्राऽमित्रयोः ॥ १५० ॥ उरः प्रभृतिभ्यः कप् ॥ १५१ ॥ इनः स्त्रियाम् ॥ १५२ ॥ नद्यृतश्च ॥ १५३ ॥ शेषाद्विभाषा ॥ १५४ ॥ न संज्ञायाम् ॥ १५५ ॥ ईयसश्च ॥ १५६ ॥ वन्दिते भ्रातुः ॥ १५७ ॥ ऋतश्छन्दसि ॥ १५८ ॥ नाडीतन्त्र्योः स्वाङ्गे ॥ १५९ ॥ निष्प्रवाणिश्च ॥ १६० ॥ *

इति पञ्चमाध्यायस्य चतुर्थः पादः ॥

इति पञ्चमोऽध्यायः समाप्तः ॥

---

* पादशतस्य तत्प्रकृतवृकज्येष्ठाभ्यासपत्रान्वतप्रात्खार्योनञ्दुःसुभ्यो वयसि विंशतिः ॥

अथ षष्ठाध्यायारम्भः ॥

तत्र प्रथमपादारम्भः ॥

एकाचो द्वे प्रथमस्य ॥ १ ॥ अजादेर्द्वितीयस्य ॥ २ ॥ नन्द्राः संयोगादयः ॥ ३ ॥ पूर्वोऽभ्यासः ॥ ४ ॥ उभे अभ्यस्तम् ॥ ५ ॥ जक्षित्यादयः षट् ॥६॥ तुजादीनां दीर्घोऽभ्यासस्य ॥ ७ ॥ लिटिधातोरनभ्यासस्य ॥ ८ ॥ सन्यङोः ॥ ९ ॥ श्लौ ॥ १० ॥ चङि ॥ ११ ॥ दाश्वान् साह्वान् मीढ्वांश्च ॥ १२ ॥ ष्यङः संप्रसारणं पुत्रपत्योस्तत्पुरुषे ॥ १३ ॥ बन्धुनि बहुव्रीहौ ॥ १४ ॥ वचिस्वपियजादीनां किति ॥ १५ ॥ ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च ॥ १६ ॥ लिट्यभ्यासस्योभयेषाम् ॥ १७ ॥ स्वापेश्चङि ॥ १८ ॥ स्वपिस्यमिव्येयां यङि ॥ १९ ॥ न वशः ॥ २० ॥ चायः की ॥ २१ ॥ स्फायः स्फी निष्ठायाम् ॥२२॥ स्त्यः प्रपूर्वस्य ॥ २३ ॥ द्रवमूर्त्तिस्पर्शयोः श्यः ॥ २४ ॥ प्रतेश्च ॥ २५ ॥ विभाषाऽभ्यवपूर्वस्य ॥ २६ ॥ शृतं पाके ॥ २७ ॥ प्यायः पी ॥ २८ ॥ लिड्यङोश्च ॥ २९ ॥ विभाषा श्वेः ॥ ३० ॥ णौ च संश्चङोः ॥ ३१ ॥ ह्वः संप्रसारणम् ॥ ३२ ॥ अभ्यस्तस्य च ॥ ३३ ॥ बहुलं छन्दसि ॥ ३४ ॥ चायः की ॥ ३५ ॥ अपस्पृधेथामानृचुरानृहुश्चिच्युषेतित्याजश्राताश्रितमाशीराशीर्त्ताः ॥ ३६ ॥ न संप्रसारणे संप्रसारणम् ॥ ३७ ॥ लिटि वयो यः ॥ ३८ ॥ वश्चास्यान्यतरस्यां किति ॥ ३९ ॥ वेञः ॥ ४० ॥ ल्यपि च ॥ ४१ ॥ ज्यश्च ॥ ४२ ॥ व्यश्च ॥ ४३ ॥ विभाषापरेः ॥ ४४ ॥ आदेच उपदेशेऽशिति ॥ ४५ ॥ न व्यो लिटि ॥ ४६ ॥ स्फुरतिस्फुलत्योर्घञि ॥ ४७ ॥ क्रीङ्जीनां णौ ॥ ४८ ॥ सिध्यतेरपारलौकिके ॥ ४९ ॥ मीनातिमिनोतिदीङां ल्यपि च ॥ ५० ॥ विभाषा लीयतेः ॥ ५१ ॥ खिदेश्छन्दसि ॥ ५२ ॥ अपगुरो णमुलि ॥ ५३ ॥ चिस्फुरोर्णौ ॥५४॥ प्रजने

वीयतेः ॥ ५५ ॥ बिभेतेर्हेतुभये ॥ ५६ ॥ नित्यं स्मयतेः ॥ ५७ ॥ सृजिदृशो-र्झल्यमकिति ॥ ५८ ॥ अनुदात्तस्य चर्दुपधस्यान्यतरस्याम् ॥ ५९ ॥ शीर्ष-श्छन्दसि ॥ ६० ॥ ये च तद्धिते ॥ ६१ ॥ अचि शीर्षः ॥ ६२ ॥ पद्न्नोमास्हृ-न्निशसन्यूषन्दोषन्यकञ्छकन्नुदन्नासञ्छस्प्रभृतिषु ॥ ६३ ॥ धात्वादेः षः सः ॥ ६४ ॥ णो नः ॥ ६५ ॥ लोपो व्योर्वलि ॥ ६६ ॥ वेरपृक्तस्य ॥ ६७ ॥ हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् ॥ ६८ ॥ एङ्ह्रस्वात्सम्बुद्धेः ॥ ६९ ॥ शेशछन्दसि बहुलम् ॥ ७० ॥ ह्रस्वस्य पिति कृति तुक् ॥ ७१ ॥ संहितायाम् ॥ ७२ ॥ छे च ॥ ७३ ॥ आङ्माङोश्च ॥ ७४ ॥ दीर्घात् ॥ ७५ ॥ पदान्ताद्वा ॥ ७६ ॥ इको यणचि ॥ ७७ ॥ एचोऽयवायावः ॥ ७८ ॥ वान्तो यि प्रत्यये ॥ ७९ ॥ धातोस्तन्निमित्तस्यैव ॥ ८० ॥ क्षय्यजय्यौ शक्यार्थे ॥ ८१ ॥ क्रय्य-स्तदर्थे ॥ ८२ ॥ भय्यप्रवय्ये च छन्दसि ॥ ८३ ॥ एकः पूर्वपरयोः ॥ ८४ ॥ अन्तादिवच्च ॥ ८५ ॥ षत्वतुकोरसिद्धः ॥ ८६ ॥ आद्गुणः ॥ ८७ ॥ वृद्धिरेचि ॥ ८८ ॥ एत्येधत्यूठ्सु ॥ ८९ ॥ आटश्च ॥ ९० ॥ उपसर्गादृति धातौ ॥ ९१ ॥ वा सुप्यापिशलेः ॥ ९२ ॥ ओतोऽम्शसोः ॥ ९३ ॥ एङि पररूपम् ॥ ९४ ॥ ओमाङोश्च ॥ ९५ ॥ उस्यपदान्तात् ॥ ९६ ॥ अतो गुणे ॥ ९७ ॥ अव्य-क्तानुकरणस्यात इतौ ॥ ९८ ॥ नाम्रेडितस्यान्त्यस्य तु वा ॥ ९९ ॥ अकः स-वर्णे दीर्घः ॥ १०० ॥ प्रथमयोः पूर्वसवर्णः ॥ १०१ ॥ तस्माच्छसो नः पुंसि ॥१०२॥ नादिचि ॥ १०३ ॥ दीर्घाज्जसि च ॥ १०४ ॥ वा च्छन्दसि ॥ १०५ ॥ अमि पूर्वः ॥ १०६ ॥ सम्प्रसारणाच्च ॥ १०७ ॥ एङः पदान्तादति ॥ १०८ ॥ ङसिङसोश्च ॥ १०९ ॥ ऋत उत् ॥ ११० ॥ ख्यत्यात्परस्य ॥ १११ ॥ अतो रोरप्लुतादप्लुते ॥ ११२ ॥ हशि च ॥११३॥ प्रकृत्यान्तः पादमव्यपरे ॥११४॥ अव्यादवद्यादवक्रमुरव्रतायमवन्त्ववस्युषु च ॥ ११५ ॥ यजुष्युरः ॥ ११६ ॥ आपो जुषाणो वृष्णो वर्षिष्ठेऽम्बेऽम्बालेऽम्बिके पूर्वे ॥ ११७ ॥ अङ्ग इत्यादौ च ॥ ११८ ॥ अनुदात्ते च कुधपरे ॥ ११९ ॥ अवपथासि च ॥ १२० ॥ सर्वत्र विभाषा गोः ॥ १२१ ॥ अवङ् स्फोटायनस्य ॥ १२२ ॥ इन्द्रे च

॥ १२३ ॥ प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम् ॥ १२४ ॥ आङोऽनुनासिकश्छन्दसि ॥ १२५ ॥ इको सवर्णे शाकल्यस्य ह्रस्वश्च ॥ १२६ ॥ ऋत्यकः ॥ १२७ ॥ अप्लुतवदुपस्थिते ॥ १२८ ॥ ई३चाक्रवर्म्मणस्य ॥ १२९ ॥ दिव उत् ॥१३०॥ एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि ॥ १३१ ॥ स्यश्छन्दसि बहुलम् ॥ १३२ ॥ सोऽचि लोपे चेत्पादपूरणम् ॥ १३३ ॥ सुट् कात्पूर्वः ॥ १३४ ॥ संपर्य्युपेभ्यः करोतौ भूषणे ॥ १३५ ॥ समवाये च ॥ १३६ ॥ उपात्प्रतियत्न-वैकृतवाक्याध्याहारेषु ॥ १३७ ॥ किरतौ लवने ॥ १३८ ॥ हिंसायां प्रतेश्च ॥ १३९ ॥ अपाच्चतुष्पाच्छकुनिष्वालेखने ॥ १४० ॥ कुस्तुम्बुरूणि जातिः ॥ १४१ ॥ अपरस्पराः क्रियासातत्ये ॥१४२॥ गोष्पदं सेवितासेवितप्रमाणेषु ॥ १४३ ॥ आस्पदं प्रतिष्ठायाम् ॥ १४४ ॥ आश्चर्य्यमनित्ये ॥ १४५ ॥ वर्च्चस्केऽवस्करः ॥ १४६ ॥ अपस्करो रथाङ्गम् ॥ १४७ ॥ विष्किरः शकुनिर्विकिरो वा ॥ १४८ ॥ ह्रस्वाच्चन्द्रोत्तरपदे मन्त्रे ॥ १४९ ॥ प्रतिष्कशश्च कशेः ॥१५०॥ प्रस्कण्वहरिश्चन्द्रावृषी ॥ १५१ ॥ मस्करमस्करिणौ वेणुपरिव्राजकयोः ॥ १५२ ॥ कास्तीराजस्तुन्दे नगरे ॥ १५३ ॥ पारस्करप्रभृतीनि च संज्ञायाम् ॥ १५४ ॥ अनुदात्तं पदमेकवर्ज्जम् ॥ १५५ ॥ कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्तः ॥ १५६ ॥ उञ्छादीनाञ्च ॥ १५७ ॥ अनुदात्तस्य च यत्रोदात्तलोपः ॥ १५८ ॥ धातोः ॥ १५९ ॥ चितः ॥ १६० ॥ तद्धितस्य ॥ १६१ ॥ कितः ॥ १६२ ॥ तिसृभ्यो जसः ॥ १६३ ॥ चतुरः शसि ॥ १६४ ॥ सावेकाचस्तृतीयादिर्विभक्तिः ॥ १६५ ॥ अन्तोदात्तादुत्तरपदादन्यतरस्यामनित्यसमासे ॥ १६६ ॥ अञ्चेश्छन्दस्य सर्वनामस्थानम् ॥ १६७ ॥ ऊडिदंपदाद्यप्पुम्रैद्युभ्यः ॥ १६८ ॥ अष्टनो दीर्घात् ॥ १६९ ॥ शतुरनुमो नद्यजादी ॥ १७० ॥ उदात्तयणो हल्पूर्वात् ॥ १७१ ॥ नोङ्धात्वोः ॥ १७२ ॥ ह्रस्वनुड्भ्यां मतुप् ॥१७३॥ नामन्यतरस्याम् ॥ १७४ ॥ ङ्याश्छन्दसि बहुलम् ॥ १७५ ॥ षट्त्रिचतुर्भ्यो हलादिः ॥ १७६ ॥ झल्युपोत्तमम् ॥ १७७ ॥ विभाषा भाषायाम् ॥ १७८ ॥ न गोश्वन्साववर्णराडङ्क्रुङ्कृद्भ्यः ॥ १७९ ॥ दिवो झल् ॥१८०॥ नृ चान्यतरस्याम् ॥ १८१ ॥ तित्स्वरितम् ॥ १८२ ॥ तास्यनुदात्तेन्ङिददुपदेशाल्लसा-

र्वधातुकमनुदात्तमह्न्विङो ॥ १८३ ॥ आदिः सिचोऽन्यतरस्याम् ॥ १८४ ॥ स्वपादिर्हिंसामच्यनिटि ॥ १८५ ॥ अभ्यस्तानामादिः ॥ १८६ ॥ अनुदात्ते च ॥ १८७ ॥ सर्वस्य सुपि ॥ १८८ ॥ भीह्रीभृहुमदजनधनदरिद्राजागरां प्रत्ययात्पूर्वं पिति ॥ १८९ ॥ लिति ॥ १९० ॥ आदिर्णमुल्यन्यतरस्याम् ॥ १९१ ॥ अचः कर्तृयकि ॥ १९२ ॥ थलि च सेटीडन्तो वा ॥१९३॥ ञ्नित्यादिर्नित्यम् ॥ १९४ ॥ आमन्त्रितस्य च ॥ १९५ ॥ पथिमथोः सर्वनामस्थाने ॥ १९६ ॥ अन्तश्चतवै युगपत् ॥ १९७ ॥ क्षयो निवासे ॥ १९८ ॥ जयः करणम् ॥ १९९ ॥ वृषादीनां च ॥ २०० ॥ संज्ञायामुपमानम् ॥ २०१ ॥ निष्ठा च द्व्यजनात् ॥ २०२ ॥ शुष्कधृष्टौ ॥ २०३ ॥ आशितः कर्त्ता ॥ २०४ ॥ रिक्ते विभाषा ॥ २०५ ॥ जुष्टार्पिते च छन्दसि ॥ २०६ ॥ नित्यं मन्त्रे ॥ २०७ ॥ युष्मदस्मदोर्ङसि च ॥ २०८ ॥ ङयि च ॥ २०९ ॥ यतो नावः ॥ २१० ॥ ईडवन्दवृशंसदुहां ण्यतः ॥ २११ ॥ विभाषा वेण्विन्धानयोः ॥ २१२ ॥ त्यागरागहासकुहश्वठक्रथानाम् ॥ २१३ ॥ उपोत्तमं रिति ॥ २१४ ॥ चङ्यन्यतरस्याम् ॥ २१५ ॥ मतोः पूर्वमात्संज्ञायां स्त्रियाम् ॥ २१६ ॥ अन्तोऽवत्याः ॥ २१७ ॥ ईवत्याः ॥ २१८ ॥ चौ ॥ २१९ ॥ समासस्य ॥ २२० ॥ *

इति षष्ठाध्यायस्य प्रथमः पादः ॥

द्वितीयपादारम्भः ॥

बहुव्रीहौ प्रकृत्या पूर्वपदम् ॥ १ ॥ तत्पुरुषे तुल्यार्थतृतीयासप्तम्युपमानाव्ययद्वितीयाकृत्याः ॥ २ ॥ वर्णो वर्णेष्वनेते ॥ ३ ॥ गाधलवणयोः प्रमाणे ॥ ४ ॥ दायाद्यं दायादे ॥ ५ ॥ प्रतिबन्धिचिरकृच्छ्रयोः ॥ ६ ॥ पदेऽपदेशे ॥ ७ ॥ निवाते वातत्राणे ॥ ८ ॥ शारदेऽनार्त्तवे ॥ ९ ॥ अध्वर्य्युकषाययोर्जातौ ॥१०॥ सदृशप्रतिरूपयोः सादृश्ये ॥ ११ ॥ द्विगौ प्रमाणे ॥ १२ ॥ गन्तव्यपण्यं वाणिजे ॥ १३ ॥ मात्रोपज्ञोपक्रमच्छाये नपुंसके ॥१४॥ सुखप्रिययोर्हिते ॥ १५ ॥

* एकाचश्चायो ल्यपिच ये च क्षय्यजय्यौ प्रथमयोः सर्वत्र कुस्तुम्बुरूणि तद्धितस्य नृ चान्य संज्ञायां विंशतिः ॥

प्रीतौ च ॥ १६ ॥ स्वं स्वामिनि ॥ १७ ॥ पत्यावैश्वर्य्ये ॥ १८ ॥ न भूवाक्चिद्दिधिषु ॥ १९ ॥ वा भुवनम् ॥ २० ॥ आशङ्काबाधनेदीयस्सु सम्भावने ॥ २१ ॥ पूर्वे भूतपूर्वे ॥ २२ ॥ सविधसनीडसमर्य्यादसवेशसदेशेषु सामीप्ये ॥ २३ ॥ विस्पष्टादीनि गुणवचनेषु ॥ २४ ॥ श्रज्याऽवमकन्पापवत्सु भावे कर्म्मधारये ॥२५॥ कुमारश्च ॥ २६ ॥ आदिः प्रत्येनसि ॥ २७ ॥ पूगेष्वन्यतरस्याम् ॥ २८ ॥ इगन्तकालकपालभगालशरावेषु द्विगौ ॥ २९ ॥ बह्वन्यतरस्याम् ॥ ३० ॥ दिष्टिवितस्त्योश्च ॥ ३१ ॥ सप्तमी सिद्धशुष्कपक्वबन्धेष्वकालात् ॥ ३२ ॥ परिप्रत्युपापावर्ज्यमानाऽहोरात्रावयवेषु ॥ ३३ ॥ राजन्यबहुवचनद्वन्द्वेऽन्धकवृष्णिषु ॥ ३४ ॥ सङ्ख्या ॥ ३५ ॥ आचार्य्योपसर्ज्जनश्चाऽन्तेवासी ॥ ३६ ॥ कार्त्तकौजपादयश्च ॥ ३७ ॥ महान् व्रीह्यपराह्णगृष्टीष्वासजाबालभारभारतहैलिहिलरौरवप्रवृद्धेषु ॥ ३८ ॥ क्षुल्लकश्च वैश्वदेवे ॥ ३९ ॥ उष्ट्रः सादिवाम्योः ॥ ४० ॥ गौः सादसादिसारथिषु ॥ ४१ ॥ कुरुगार्हपतरिक्तगुर्वसूतजरत्यश्लीलदृढरूपापारेवडवा तैतिलकद्रूः पण्यकम्बलोदासीभाराणाञ्च ॥ ४२ ॥ चतुर्थी तदर्थे ॥ ४३ ॥ अर्थे ॥ ४४ ॥ क्ते च ॥ ४५ ॥ कर्म्मधारयेऽनिष्ठा ॥ ४६ ॥ अहीने द्वितीया ॥ ४७ ॥ तृतीया कर्मणि ॥ ४८ ॥ गतिरनन्तरः ॥ ४९ ॥ तादौ च निति कृत्यतौ ॥ ५० ॥ तवै चान्तश्च युगपत् ॥ ५१ ॥ अनिगन्तोऽञ्चतौ वप्रत्यये ॥ ५२ ॥ न्यधी च ॥ ५३ ॥ ईषदन्यतरस्याम् ॥ ५४ ॥ हिरण्यपरिमाणं धने ॥ ५५ ॥ प्रथमोऽचिरोपसम्पत्तौ ॥ ५६ ॥ कतरकतमौ कर्म्मधारये ॥ ५७ ॥ आर्य्यो ब्राह्मणकुमारयोः ॥ ५८ ॥ राजा च ॥ ५९ ॥ षष्ठी प्रत्येनसि ॥ ६० ॥ क्ते नित्यार्थे ॥ ६१ ॥ ग्रामः शिल्पिनि ॥ ६२ ॥ राजा च प्रशंसायाम् ॥ ६३ ॥ आदिरुदात्तः ॥ ६४ ॥ सप्तमीहारिणौ धर्म्ये हरणे ॥ ६५ ॥ युक्ते च ॥ ६६ ॥ विभाषाध्यक्षे ॥ ६७ ॥ पापञ्च शिल्पिनि ॥ ६८ ॥ गोत्रान्तेवासिमाणवब्राह्मणेषु क्षेपे ॥ ६९ ॥ अङ्गानि मैरेये ॥ ७० ॥ भक्ताख्यास्तदर्थेषु ॥ ७१ ॥ गोबिडालसिंहसैन्धवेषूपमाने ॥ ७२ ॥ अके जीविकार्थे ॥ ७३ ॥ प्राचां क्रीडायाम् ॥ ७४ ॥ अणि नियुक्ते ॥ ७५ ॥ शिल्पिनि चाऽकृञः ॥ ७६ ॥ सञ्ज्ञायाञ्च ॥ ७७ ॥ गोतन्तियवम्पाले ॥ ७८ ॥ णिनि ॥ ७९ ॥ उपमानं शब्दा-

र्थप्रकृतावेव ॥ ८० ॥ युक्तारोह्यादयश्च ॥ ८१ ॥ दीर्घकाशतुषभ्राष्ट्रवटञ्जे ॥ ८२ ॥ अन्त्यात्पूर्वं बह्वचः ॥ ८३ ॥ ग्रामेऽनिवसन्तः ॥ ८४ ॥ घोषादिषु च ॥ ८५ ॥ छात्र्यादयः शालायाम् ॥ ८६ ॥ प्रस्थेऽवृद्धमकर्क्यादीनाम् ॥ ८७ ॥ मालादीनां च ॥ ८८ ॥ अमहन्नवन्नगरेऽनुदीचाम् ॥ ८९ ॥ अर्म्मे चावर्णं द्व्यच् त्र्यच् ॥ ९० ॥ न भूताधिकसंजीवमद्राश्मकज्जलम् ॥ ९१ ॥ अन्तः ॥ ९२ ॥ सर्वं गुणकात्स्न्र्ये ॥ ९३ ॥ संज्ञायां गिरिनिकाययोः ॥ ९४ ॥ कुमार्य्यां वयसि ॥ ९५ ॥ उदकेऽकेवले ॥ ९६ ॥ द्विगौ क्रतौ ॥ ९७ ॥ सभायां नपुंसके ॥ ९८ ॥ पुरे प्राचाम् ॥ ९९ ॥ अरिष्टगौडपूर्वे च ॥ १०० ॥ न हास्तिनफलकमार्देयाः ॥ १०१ ॥ कुसूलकूपकुम्भशालं बिले ॥ १०२ ॥ दिक्शब्दा ग्रामजनपदाख्यानचानराटेषु ॥ १०३ ॥ आचार्य्योपसर्ज्जनश्चान्तेवासिनि ॥ १०४ ॥ उत्तरपदवृद्धौ सर्वञ्च ॥ १०५ ॥ बहुव्रीहौ विश्वं संज्ञायाम् ॥ १०६ ॥ उदराश्वेषुषु ॥ १०७ ॥ क्षेपे ॥ १०८ ॥ नदी बन्धुनि ॥ १०९ ॥ निष्ठोपसर्गपूर्वमन्यतरस्याम् ॥ ११० ॥ उत्तरपदाऽदिः ॥ १११ ॥ कर्णो वर्णलक्षणात् ॥ ११२ ॥ संज्ञौपम्ययोश्च ॥ ११३ ॥ कण्ठपृष्ठग्रीवाजङ्घञ्च ॥ ११४ ॥ शृङ्गमवस्थायाञ्च ॥ ११५ ॥ नञोजरमरमित्रमृताः ॥ ११६ ॥ सोर्मनसी अलोमोषसी ॥ ११७ ॥ क्रत्वादयश्च ॥ ११८ ॥ आद्युदात्तं द्व्यच् छन्दसि ॥ ११९ ॥ वीरवीर्य्यौ च ॥ १२० ॥ कूलतीरतूलमूलशालाऽक्षसममव्ययीभावे ॥ १२१ ॥ कंसमन्थशूर्प्पपाय्यकाण्डं द्विगौ ॥ १२२ ॥ तत्पुरुषे शालायान्नपुंसके ॥ १२३ ॥ कन्था च ॥ १२४ ॥ आदिश्चिहणादीनाम् ॥ १२५ ॥ चेलखेटकटुककाण्डं गर्हायाम् ॥ १२६ ॥ चीरमुपमानम् ॥ १२७ ॥ पललसूपशाकम्मिश्रे ॥ १२८ ॥ कूलसूदस्थलकर्षाः सञ्ज्ञायाम् ॥ १२९ ॥ अकर्म्मधारये राज्यम् ॥ १३० ॥ वर्ग्यादयश्च ॥ १३१ ॥ पुत्रः पुंभ्यः ॥ १३२ ॥ नाचार्य्यराजर्त्विक्संयुक्तज्ञात्याख्येभ्यः ॥ १३३ ॥ चूर्णादीन्यप्राणिषष्ठ्याः ॥ १३४ ॥ षट् च काण्डादीनि ॥ १३५ ॥ कुण्डं वनम् ॥ १३६ ॥ प्रकृत्या भगालम् ॥ १३७ ॥ शितेर्नित्याबह्वच् बहुव्रीहावभसत् ॥ १३८ ॥ गतिकारकोपपदात् कृत् ॥ १३९ ॥ उभे वनस्पत्यादिषु युगपत् ॥ १४० ॥ देवता द्वन्द्वे च ॥ १४१ ॥ नोत्तरपदेऽनुदात्तादावपृथि-

वीरुद्रपूषग्रन्थिषु ॥ १४२ ॥ अन्तः ॥ १४३ ॥ थाथघञ्क्ताजबित्रकाणाम् ॥ १४४ ॥ सूपमानात् क्तः ॥ १४५ ॥ सञ्ज्ञायामनाचितादीनाम् ॥ १४६ ॥ प्रवृद्धादीनाञ्च ॥ १४७ ॥ कारकाद्दत्तश्रुतयोरेवाशिषि ॥ १४८ ॥ इत्थंभूतेन कृतमिति च ॥ १४९ ॥ अनो भावकर्मवचनः ॥ १५० ॥ मन्क्तिन्व्याख्यानशयनासनस्थानयाजकादिक्रीताः ॥ १५१ ॥ सप्तम्याः पुण्यम् ॥ १५२ ॥ ऊनार्थकलहं तृतीयायाः ॥ १५३ ॥ मिश्रञ्चानुपसर्गमसन्धौ ॥ १५४ ॥ नञो गुणप्रतिषेधे संपाद्यर्हहितालमर्थास्तद्धिताः ॥ १५५ ॥ ययतोश्चाऽतदर्थे ॥ १५६ ॥ अच्कावशक्तौ ॥ १५७ ॥ आक्रोशे च ॥ १५८ ॥ संज्ञायाम् ॥ १५९ ॥ कृत्योकेष्णुच्चार्वादयश्च ॥ १६० ॥ विभाषा तृन्नन्नतीक्ष्णशुचिषु ॥ १६१ ॥ बहुव्रीहाविदमेतत्तद्भ्यः प्रथमपूरणयोः क्रियागणने ॥ १६२ ॥ सङ्ख्यायाः स्तनः ॥ १६३ ॥ विभाषा छन्दसि ॥ १६४ ॥ संज्ञायां मित्राजिनयोः ॥ १६५ ॥ व्यवायिनोऽन्तरम् ॥ १६६ ॥ मुखं स्वाङ्गम् ॥ १६७ ॥ नाव्ययदिक्छब्दगोमहत्स्थूलमुष्टिपृथुवत्सेभ्यः ॥ १६८ ॥ निष्ठोपमानादन्यतरस्याम् ॥ १६९ ॥ जातिकालसुखादिभ्योऽनाच्छादनात् क्तो कृतमितप्रतिपन्नाः ॥ १७० ॥ वा जाते ॥ १७१ ॥ नञ्सुभ्याम् ॥ १७२ ॥ कपि पूर्वम् ॥ १७३ ॥ ह्रस्वान्तेऽन्त्यात्पूर्वम् ॥ १७४ ॥ बहोर्नञ्वदुत्तरपदभूम्नि ॥ १७५ ॥ न गुणादयोऽवयवाः ॥ १७६ ॥ उपसर्गात्स्वाङ्गं ध्रुवमपर्शु ॥ १७७ ॥ वनं समासे ॥ १७८ ॥ अन्तः ॥ १७९ ॥ अन्तश्च ॥ १८० ॥ ननिविभ्याम् ॥ १८१ ॥ परेरभितोभावि मण्डलम् ॥ १८२ ॥ प्रादस्वाङ्गं सञ्ज्ञायाम् ॥ १८३ ॥ निरुदकादीनि च ॥ १८४ ॥ अभेर्मुखम् ॥ १८५ ॥ अपाच्च ॥ १८६ ॥ स्फिगपूतवीणाञ्जोध्वकुक्षिसीरनाम नाम च ॥ १८७ ॥ अधेरुपरिस्थम् ॥ १८८ ॥ अनोरप्रधानकनीयसी ॥ १८९ ॥ पुरुषश्चान्वादिष्टः ॥ १९० ॥ अतेरकृत्पदे ॥ १९१ ॥ नेरनिधाने ॥ १९२ ॥ प्रतेरंश्वादयस्तत्पुरुषे ॥ १९३ ॥ उपाद्द्व्यजजिनमगौरादयः ॥ १९४ ॥ सोरवक्षेपणे ॥ १९५ ॥ विभाषोत्पुच्छे ॥ १९६ ॥ द्वित्रिभ्यां पाद्दन्मूर्द्धसु बहुव्रीहौ ॥ १९७ ॥ सक्थं चाक्रान्तात् ॥ १९८ ॥ परादिश्छन्दसि बहुलम् ॥ १९९ ॥ *

इति षष्ठाध्यायस्य द्वितीयः पादः ॥

---

*बहुव्रीहावाशङ्कागौः सादकेनित्यार्थे युक्ता नः हास्तिनकूलतीरदेवताविभाषानिन्येकोनविंशतिः ।

तृतीयपादारम्भः ॥

अलुगुत्तरपदे ॥ १ ॥ पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः ॥ २ ॥ ओजस्सहोम्भस्तमसस्तृतीयायाः ॥ ३ ॥ मनसः सञ्ज्ञायाम् ॥ ४ ॥ आज्ञायिनि च ॥ ५ ॥ आत्मनश्च पूरणे ॥ ६ ॥ वैयाकरणाख्यायां चतुर्थ्याः ॥ ७ ॥ परस्य च ॥ ८ ॥ हलदन्तात्सप्तम्याः सञ्ज्ञायाम् ॥ ९ ॥ कारनाम्नि च प्राचां हलादौ ॥ १० ॥ मध्याद्गुरौ ॥ ११ ॥ अमूर्द्धमस्तकात्स्वाङ्गादकामे ॥ १२ ॥ बन्धे च विभाषा ॥ १३ ॥ तत्पुरुषे कृति बहुलम् ॥ १४ ॥ प्रावृट्शरत्कालदिवाञ्जे ॥ १५ ॥ विभाषा वर्षक्षरशरवरात् ॥ १६ ॥ घकालतनेषु कालनाम्नः ॥ १७ ॥ शयवासवासिष्वकालात् ॥ १८ ॥ नेन्सिद्धबध्नातिषु च ॥ १९ ॥ स्थे च भाषायाम् ॥ २० ॥ षष्ठ्या आक्रोशे ॥ २१ ॥ पुत्रेऽन्यतरस्याम् ॥ २२ ॥ ऋतो विद्यायोनिसम्बन्धेभ्यः ॥ २३ ॥ विभाषा स्वसृपत्योः ॥ २४ ॥ आनङ् ऋतो द्वन्द्वे ॥ २५ ॥ देवता द्वन्द्वे च ॥ २६ ॥ ईदग्नेः सोमवरुणयोः ॥ २७ ॥ इद्वृद्धौ ॥ २८ ॥ दिवो द्यावा ॥ २९ ॥ दिवसश्च पृथिव्याम् ॥ ३० ॥ उषासोषसः ॥ ३१ ॥ मातरपितरावुदीचाम् ॥ ३२ ॥ पितरामातरा च छन्दसि ॥ ३३ ॥ स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङ्समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणीप्रियादिषु ॥ ३४ ॥ तसिलादिष्वाकृत्वसुचः ॥ ३५ ॥ क्यङ्मानिनोश्च ॥ ३६ ॥ न कोपधायाः ॥ ३७ ॥ सञ्ज्ञापूरण्योश्च ॥ ३८ ॥ वृद्धिनिमित्तस्य च तद्धितस्यारक्तविकारे ॥ ३९ ॥ स्वाङ्गाच्चेतो मानिनि ॥ ४० ॥ जातेश्च ॥ ४१ ॥ पुंवत्कर्म्मधारयजातीयदेशीयेषु ॥ ४२ ॥ घरूपकल्पचेलड्ब्रुवगोत्रमतहतेषु ङ्योऽनेकाचो ह्रस्वः ॥ ४३ ॥ नद्याः शेषस्यान्यतरस्याम् ॥ ४४ ॥ उगितश्च ॥ ४५ ॥ आन्महतः समानाधिकरणजातीययोः ॥ ४६ ॥ द्व्यष्टनः संख्यायामबहुव्रीह्यऽशीत्योः ॥ ४७ ॥ त्रेस्त्रयः ॥ ४८ ॥ विभाषा चत्वारिंशत्प्रभृतौ सर्वेषाम् ॥ ४९ ॥ हृदयस्य हृल्लेखयदण्लासेषु ॥ ५० ॥ वा शोकष्यञ्रोगेषु ॥ ५१ ॥ पादस्य पदाज्यातिगोपहतेषु ॥ ५२ ॥ पद्यत्यतदर्थे ॥ ५३ ॥ हिमकाषिहतिषु च ॥ ५४ ॥ ऋचः शे ॥ ५५ ॥ वा घोषमिश्रशब्देषु ॥ ५६ ॥ उदकस्योदः सञ्ज्ञायाम् ॥ ५७ ॥ पेषवासवाहनधिषु च ॥ ५८ ॥

एकहलादौ पूरयितव्येऽन्यतरस्याम् ॥ ५९ ॥ मन्थौदनसक्तुविन्दुवज्रभारहारवी-
वधगाहेषु च ॥ ६० ॥ इको ह्रस्वोऽङ्यो गालवस्य ॥ ६१ ॥ एकतद्धिते च
॥ ६२ ॥ ङ्यापोः सञ्ज्ञाछन्दसोर्बहुलम् ॥ ६३ ॥ त्वे च ॥ ६४ ॥ इष्टकेषीका-
मालानां चिततूलभारिषु ॥ ६५ ॥ खित्यनव्ययस्य ॥ ६६ ॥ अरुर्द्विषदजन्तस्य
मुम् ॥ ६७ ॥ इच एकाचोऽम्प्रत्ययवच्च ॥ ६८ ॥ वाचंयमपुरन्दरौ च ॥ ६९ ॥
कारे सत्यागदस्य ॥ ७० ॥ श्येनतिलस्य पाते ञे ॥ ७१ ॥ रात्रेः कृति विभाषा
॥ ७२ ॥ नलोपो नञः ॥ ७३ ॥ तस्मान्नुडचि ॥ ७४ ॥ नभ्राण्नपान्नवेदाना-
सत्यानमुचिनकुलनखनपुंसकनक्षत्रनक्रनाकेषु प्रकृत्या ॥ ७५ ॥ एकादिश्चैकस्य
चादुक् ॥ ७६ ॥ न गोश्वण्यवन्यतरस्याम् ॥ ७७ ॥ सहस्य सः सञ्ज्ञायाम्
॥ ७८ ॥ ग्रन्थान्ताधिके च ॥ ७९ ॥ द्वितीये चानुपाख्ये ॥ ८० ॥ अव्ययी-
भावे चाकाले ॥ ८१ ॥ वोपसर्जनस्य ॥ ८२ ॥ प्रकृत्याऽऽशिष्यगोवत्सहलेषु
॥ ८३ ॥ समानस्य छन्दस्यमूर्द्धप्रभृत्युदर्केषु ॥ ८४ ॥ ज्योतिर्जनपदरात्रिनाभि-
नामगोत्ररूपस्थानवर्णवयोवचनबन्धुषु ॥ ८५ ॥ चरणे ब्रह्मचारिणि ॥ ८६ ॥
तीर्थे ये ॥ ८७ ॥ विभाषोदरे ॥ ८८ ॥ दृग्दृशवतुषु ॥ ८९ ॥ इदंकिमोरीश्की
॥ ९० ॥ आ सर्वनाम्नः ॥ ९१ ॥ विष्वग्देवयोश्च टेरद्र्यञ्चतौवप्रत्यये ॥ ९२ ॥
समः समि ॥ ९३ ॥ तिरसस्तिर्य्यलोपे ॥ ९४ ॥ सहस्य सध्रिः ॥ ९५ ॥ सधमा-
दस्थयोश्छन्दसि ॥ ९६ ॥ द्व्यन्तरुपसर्गेभ्योऽप ईत् ॥ ९७ ॥ ऊदनोर्देशे
॥ ९८ ॥ अषष्ठ्यतृतीयास्थस्यान्यस्य दुगाशीराशास्थास्थितोत्सुकोतिकारक-
रागच्छेषु ॥ ९९ ॥ अर्थे विभाषा ॥ १०० ॥ कोः कत्तत्पुरुषेऽचि ॥ १०१ ॥
रथवदयोश्च ॥ १०२ ॥ तृणे च जातौ ॥ १०३ ॥ का पथ्यक्षयोः ॥ १०४ ॥
ईषदर्थे ॥ १०५ ॥ विभाषा पुरुषे ॥ १०६ ॥ कवं चोष्णे ॥ १०७ ॥ पथि च
छन्दसि ॥ १०८ ॥ पृषोदरादीनि यथोपदिष्टम् ॥ १०९ ॥ सङ्ख्याविसायपूर्व-
स्याह्नस्याहन्नन्यतरस्यां ङौ ॥ ११० ॥ ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः ॥ १११ ॥
सहिवहोरोदवर्णस्य ॥ ११२ ॥ साढ्यैसाढ्वासाढेति निगमे ॥ ११३ ॥ संहिता-
याम् ॥ ११४ ॥ कर्णे लक्षणस्याविष्टाष्टपञ्चमणिभिन्नच्छिन्नछिद्रस्रुवस्वस्तिकस्य
॥ ११५ ॥ नहिवृतिवृषिव्यधिरुचिसहितनिषु क्वौ ॥ ११६ ॥ वनगिर्य्योः

सञ्ज्ञायां कोटरकिंशुलकादीनाम् ॥ ११७ ॥ वले ॥ ११८ ॥ मतौ बह्वचोऽनजिरादीनाम् ॥ ११९ ॥ शरादीनाञ्च ॥ १२० ॥ इको वहेऽपीलोः ॥ १२१ ॥ उपसर्गस्य घञ्यमनुष्ये बहुलम् ॥ १२२ ॥ इकः काशे ॥ १२३ ॥ दस्ति ॥ १२४ ॥ अष्टनः सञ्ज्ञायाम् ॥ १२५ ॥ छन्दसि च ॥ १२६ ॥ चितेः कपि ॥ १२७ ॥ विश्वस्य वसुराटोः ॥ १२८ ॥ नरे सञ्ज्ञायाम् ॥ १२९ ॥ मित्रे चर्षौ ॥ १३० ॥ मन्त्रे सोमाश्वेन्द्रियविश्वदेव्यस्य मतौ ॥ १३१ ॥ ओषधेश्च विभक्तावप्रथमायाम् ॥ १३२ ॥ ऋचि तुनुघमक्षुतङ्कुत्रोरुष्याणाम् ॥ १३३ ॥ इकः सुञि ॥ १३४ ॥ द्व्यचोतस्तिङः ॥ १३५ ॥ निपातस्य च ॥ १३६ ॥ अन्येषामपि दृश्यते ॥ १३७ ॥ चौ ॥ १३८ ॥ संप्रसारणस्य ॥ १३९ ॥ *

इति षष्ठाध्यायस्य तृतीय पादः ॥

चतुर्थपादारम्भः ॥

अङ्गस्य ॥ १ ॥ हलः ॥ २ ॥ नामि ॥ ३ ॥ न तिसृचतसृ ॥ ४ ॥ छन्दस्युभयथा ॥ ५ ॥ नृ च ॥ ६ ॥ नोपधायाः ॥ ७ ॥ सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ ॥ ८ ॥ वा षपूर्वस्य निगमे ॥ ९ ॥ सान्तमहतः संयोगस्य ॥ १० ॥ अप्तृन्तृच्स्वसृनप्तृनेष्टृत्वष्टृक्षत्तृहोतृपोतृप्रशास्तॄणाम् ॥ ११ ॥ इन्हन्पूषार्य्यम्णां शौ ॥ १२ ॥ सौ च ॥ १३ ॥ अत्वसन्तस्य चाऽधातोः ॥ १४ ॥ अनुनासिकस्य क्विझलोः क्ङिति ॥ १५ ॥ अज्झनगमां सनि ॥ १६ ॥ तनोतेर्विभाषा ॥ १७ ॥ क्रमश्च क्त्वि ॥ १८ ॥ च्छ्वोः शूडनुनासिके च ॥ १९ ॥ ज्वरत्वरस्रिव्यविमवामुपधायाश्च ॥ २० ॥ राल्लोपः ॥ २१ ॥ असिद्धवदत्राभात् ॥ २२ ॥ श्नान्नलोपः ॥ २३ ॥ अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति ॥ २४ ॥ दंशसञ्जस्वञ्जां शपि ॥ २५ ॥ रञ्जेश्च ॥ २६ ॥ घञि च भावकरणयोः ॥ २७ ॥

---

* अलुगुत्तरपदे षष्ठ्याजातेरिकोऽव्ययीभावे कोः कदिको वह एकोनविंशतिः ॥

॥ २७ ॥ स्यदो जवे ॥ २८ ॥ अवोदैधौद्मप्रश्रथहिमश्रथाः ॥ २९ ॥ नाञ्चेः पूजायाम् ॥ ३० ॥ क्त्वि स्कन्दस्यन्दोः ॥ ३१ ॥ जान्तनशां विभाषा ॥ ३२ ॥ भञ्जेश्च चिणि ॥ ३३ ॥ शास इदङ्हलोः ॥ ३४ ॥ शा हौ ॥ ३५ ॥ हन्तेर्जः ॥ ३६ ॥ अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनामनुनासिकलोपो झलि क्ङिति ॥ ३७ ॥ वाल्यपि ॥ ३८ ॥ न क्तिचि दीर्घश्च ॥ ३९ ॥ गमः क्वौ ॥४०॥ विड्वनोरनुनासिकस्यात् ॥ ४१ ॥ जनसनखनां सञ्झलोः ॥ ४२ ॥ ये विभाषा ॥ ४३ ॥ तनोतेर्यकि ॥ ४४ ॥ सनः क्तिचि लोपश्चास्यान्यतरस्याम् ॥ ४५ ॥ आर्द्धधातुके ॥ ४६ ॥ भ्रस्जो रोपधयोरमन्यतरस्याम् ॥ ४७ ॥ अतो लोपः ॥ ४८ ॥ यस्य हलः ॥ ४९ ॥ क्यस्य विभाषा ॥ ५० ॥ णेरनिटि ॥ ५१ ॥ निष्ठायां सेटि ॥ ५२ ॥ जनिता मन्त्रे ॥ ५३ ॥ शमिता यज्ञे ॥ ५४ ॥ अयामन्ताल्वाय्येत्न्विष्णुषु ॥ ५५ ॥ ल्यपि लघुपूर्वात् ॥ ५६ ॥ विभाषापः ॥ ५७ ॥ युप्लुवोर्दीर्घश्छन्दसि ॥ ५८ ॥ क्षियः ॥ ५९ ॥ निष्ठायामण्यदर्थे ॥ ६० ॥ वाक्रोशदैन्ययोः ॥ ६१ ॥ स्यसिच्सीयुट्तासिषु भावकर्मणोरुपदेशेऽज्झनग्रहदृशां वा चिण्वदिट् च ॥ ६२ ॥ दीङो युडचि क्ङिति ॥ ६३ ॥ आतो लोप इटि च ॥ ६४ ॥ ईद्यति ॥ ६५ ॥ घुमास्थागापाजहातिसां हलि ॥ ६६ ॥ एर्लिङि ॥ ६७ ॥ वान्यस्य संयोगादेः ॥ ६८ ॥ न ल्यपि ॥ ६९ ॥ मयतेरिदन्यतरस्याम् ॥ ७० ॥ लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः ॥ ७१ ॥ आडजादीनाम् ॥ ७२ ॥ छन्दस्यपि दृश्यते ॥ ७३ ॥ न माङ्योगे ॥ ७४ ॥ बहुलं छन्दस्यमाङ्योगेपि ॥ ७५ ॥ इरयो रे ॥ ७६ ॥ अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ ॥ ७७ ॥ अभ्यासस्यासवर्णे ॥ ७८ ॥ स्त्रियाः ॥ ७९ ॥ वाम्शसोः ॥ ८० ॥ इणो यण् ॥ ८१ ॥ एरनेकाचोसंयोगपूर्वस्य ॥ ८२ ॥ ओः सुपि ॥ ८३ ॥ वर्षाभ्वश्च ॥ ८४ ॥ न भूसुधियोः ॥ ८५ ॥ छन्दस्युभयथा ॥ ८६ ॥ हुश्नुवोः सार्वधातुके ॥ ८७ ॥ भुवो वुग् लुङ्लिटोः ॥ ८८ ॥ ऊदुपधाया गोहः ॥ ८९ ॥ दोषो णौ ॥ ९० ॥ वा चित्तविरागे ॥ ९१ ॥ मितां ह्रस्वः ॥ ९२ ॥ चिण्णमुलोर्दीर्घोऽन्यतरस्याम् ॥ ९३ ॥ खचि ह्रस्वः ॥ ९४ ॥ ह्लादो निष्ठायाम् ॥ ९५ ॥ छादेर्घेऽद्व्युपसर्गस्य ॥ ९६ ॥ इस्मन्त्रन्क्विषु च ॥ ९७ ॥ गमहनजनखनघसां लोपः क्ङित्यनङि ॥ ९८ ॥ तनिपत्योश्छन्दसि ॥ ९९ ॥ घसिभसोर्हलि च ॥ १०० ॥ हुझल्भ्यो

हेर्द्धिः ॥ १०१ ॥ श्रुशृणुपॄकृवृभ्यश्छन्दसि ॥ १०२ ॥ अङितश्च ॥ १०३ ॥ चिणो लुक् ॥ १०४ ॥ अतो हेः ॥ १०५ ॥ उतश्च प्रत्ययादसंयोगपूर्वात् ॥ १०६ ॥ लोपश्चास्यान्यतरस्यां म्वोः ॥ १०७ ॥ नित्यं करोतेः ॥ १०८ ॥ ये च ॥ १०९ ॥ अत उत्सार्वधातुके ॥ ११० ॥ श्नसोरल्लोपः ॥ १११ ॥ श्नाभ्यस्तयोरातः ॥ ११२ ॥ ईहल्यघोः ॥ ११३ ॥ इद्दरिद्रस्य ॥ ११४ ॥ भियोऽन्यतरस्याम् ॥ ११५ ॥ जहातेश्च ॥ ११६ ॥ आ च हौ ॥ ११७ ॥ लोपो यि ॥ ११८ ॥ घ्वसोरेद्धावभ्यासलोपश्च ॥ ११९ ॥ अत एकहल्मध्येऽनादेशादेर्लिटि ॥ १२० ॥ थलि च सेटि ॥ १२१ ॥ तॄफलभजत्रपश्च ॥ १२२ ॥ राधो हिंसायाम् ॥ १२३ ॥ वा जॄभ्रमुत्रसाम् ॥ १२४ ॥ फणां च सप्तानाम् ॥ १२५ ॥ न शसददवादिगुणानाम् ॥ १२६ ॥ अर्वणस्त्रसावनञः ॥ १२७ ॥ मघवा बहुलम् ॥ १२८ ॥ भस्य ॥ १२९ ॥ पादः पत् ॥ १३० ॥ वसोः संप्रसारणम् ॥ १३१ ॥ वाह ऊठ् ॥ १३२ ॥ श्वयुवमघोनामतद्धिते ॥ १३३ ॥ अल्लोपोऽनः ॥ १३४ ॥ षपूर्वहन्धृतराज्ञामणि ॥ १३५ ॥ विभाषाङिश्योः ॥ १३६ ॥ न संयोगाद्वमन्तात् ॥ १३७ ॥ अचः ॥ १३८ ॥ उद ईत् ॥ १३९ ॥ आतो धातोः ॥ १४० ॥ मन्त्रेष्वाङ्यादेरात्मनः ॥ १४१ ॥ तिविंशतेर्डिति ॥ १४२ ॥ टेः ॥ १४३ ॥ नस्तद्धिते ॥ १४४ ॥ अह्नष्टखोरेव ॥ १४५ ॥ ओर्गुणः ॥ १४६ ॥ ढे लोपोऽकद्र्वाः ॥ १४७ ॥ यस्येति च ॥ १४८ ॥ सूर्यतिष्यागस्त्यमत्स्यानां य उपधायाः ॥ १४९ ॥ हलस्तद्धितस्य ॥ १५० ॥ आपत्यस्य च तद्धितेनाति ॥ १५१ ॥ क्यच्व्योश्च ॥ १५२ ॥ बिल्वकादिभ्यश्छस्य लुक् ॥ १५३ ॥ तुरिष्ठेमेयस्सु ॥ १५४ ॥ टेः ॥ १५५ ॥ स्थूलदूरयुवह्रस्वक्षिप्रक्षुद्राणां यणादिपरं पूर्वस्य च गुणः ॥ १५६ ॥ प्रियस्थिरस्फिरोरुबहुलगुरुवृद्धतृप्रदीर्घवृन्दारकाणां प्रस्थस्फवर्बंहिगर्वर्षित्रब्द्राघिवृन्दाः ॥ १५७ ॥ बहोर्लोपो भू च बहोः ॥ १५८ ॥ इष्ठस्य यिट् च ॥ १५९ ॥ ज्यादादीयसः ॥ १६० ॥ र ऋतो हलादेर्लघोः ॥ १६१ ॥ विभाषर्जोश्छन्दसि ॥ १६२ ॥ प्रकृत्यैकाच् ॥ १६३ ॥ इनण्यनपत्ये ॥ १६४ ॥ गाथिविदथिकेशिगणिपणिनश्च ॥ १६५ ॥ संयोगादिश्च ॥ १६६ ॥

अन् ॥ १६७ ॥ ये चाभावकर्म्मणोः ॥ १६८ ॥ आत्माध्वानौ खे ॥ १६९ ॥ नम पूर्वोऽपत्ये वर्म्मणः ॥ १७० ॥ ब्राह्मोऽजातौ ॥ १७१ ॥ कार्म्मस्ताच्छील्ये ॥ १७२ ॥ औक्षमनपत्ये ॥ १७३ ॥ दाण्डिनायनहास्तिनायनाथर्वणिकजैह्माशिनेयवासिनायनिभ्रौणहत्यधैवत्यसारवैक्ष्वाकमैत्रेयहिरण्मयानि ॥ १७४ ॥ ऋत्व्यावास्त्व्यवास्त्वमाध्वीहिरण्ययानि छन्दसि ॥ १७५ ॥ *

इति षष्ठाध्यायस्य चतुर्थः पादः ॥

षष्ठाध्यायस्समाप्तः ॥



---

* अङ्गस्य राल्लोपो विड्वनोर्वाक्रोशेण्योयण् हुझल्भ्यस्थलिचमंत्रेषु रक्षतः पञ्चदश ॥

अथ सप्तमाध्यायारम्भः ॥

तत्र प्रथमपादारम्भः ॥

युवोरनाकौ ॥ १ ॥ आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम् ॥ २ ॥ झोऽन्तः ॥ ३ ॥ अदभ्यस्तात् ॥ ४ ॥ आत्मनेपदेष्वनतः ॥ ५ ॥ शीङो रुट् ॥ ६ ॥ वेत्तेर्विभाषा ॥ ७ ॥ बहुलं छन्दसि ॥ ८ ॥ अतो भिस ऐस् ॥ ९ ॥ बहुलं छन्दसि ॥ १० ॥ नेदमदसोरकोः ॥ ११ ॥ टाङसिङसामिनात्स्याः ॥ १२ ॥ ङेर्यः ॥ १३ ॥ सर्वनाम्नः स्मै ॥ १४ ॥ ङसिङ्योः स्मात्स्मिनौ ॥ १५ ॥ पूर्वादिभ्यो नवभ्यो वा ॥ १६ ॥ जसः शी ॥ १७ ॥ औङ आपः ॥ १८ ॥ नपुंसकाच्च ॥ १९ ॥ जश्शसोः शिः ॥ २० ॥ अष्टाभ्य औश् ॥ २१ ॥ षड्भ्यो लुक् ॥ २२ ॥ स्वमोर्नपुंसकात् ॥ २३ ॥ अतोऽम् ॥ २४ ॥ अद्ड्डतरादिभ्यः पञ्चभ्यः ॥ २५ ॥ नेतराच्छन्दसि ॥ २६ ॥ युष्मदस्मद्भ्यां ङसोऽश् ॥ २७ ॥ ङे प्रथमयोरम् ॥ २८ ॥ शसो न ॥ २९ ॥ भ्यसोऽभ्यम् ॥ ३० ॥ पञ्चम्या अत् ॥ ३१ ॥ एकवचनस्य च ॥ ३२ ॥ साम आकम् ॥ ३३ ॥ आत औणलः ॥ ३४ ॥ तुह्योस्तातङाशिष्यन्यतरस्याम् ॥ ३५ ॥ विदेः शतुर्वसुः ॥ ३६ ॥ समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप् ॥ ३७ ॥ क्त्वापि छन्दसि ॥ ३८ ॥ सुपां सुलुक्पूर्वसवर्णाच्छेयाडाड्यायाजालः ॥ ३९ ॥ अमो मश् ॥ ४० ॥ लोपस्त आत्मनेपदेषु ॥ ४१ ॥ ध्वमो ध्वात् ॥ ४२ ॥ यजध्वैनमिति च ॥ ४३ ॥ तस्य तात् ॥ ४४ ॥ तप्तनप्तनथनाश्च ॥ ४५ ॥ इदन्तो मसि ॥ ४६ ॥ क्त्वो यक् ॥ ४७ ॥ इष्ट्वीनमिति च ॥ ४८ ॥ स्नात्व्यादयश्च ॥ ४९ ॥ आज्जसेरसुक् ॥ ५० ॥ अश्वक्षीरवृषलवणानामात्मप्रीतौ क्यचि ॥ ५१ ॥ आमि सर्वनाम्नः सुट् ॥ ५२ ॥ त्रेस्त्रयः ॥ ५३ ॥ ह्रस्वनद्यापो नुट् ॥ ५४ ॥ षट्चतुर्भ्यश्च ॥ ५५ ॥ श्रीग्रामण्योश्छन्दसि ॥ ५६ ॥

गोः पादान्ते ॥ ५७ ॥ इदितो नुम् धातोः ॥ ५८ ॥ शे मुचादीनाम् ॥ ५९ ॥ मस्जिनशोर्झलि ॥ ६० ॥ रधिजभोरचि ॥ ६१ ॥ नेट्यलिटि रधेः ॥ ६२ ॥ रभेरशब्लिटोः ॥ ६३ ॥ लभेश्च ॥ ६४ ॥ आङो यि ॥ ६५ ॥ उपात्प्रशंसायाम् ॥ ६६ ॥ उपसर्गात्खल्घञोः ॥ ६७ ॥ न सुदुर्भ्यां केवलाभ्याम् ॥ ६८ ॥ विभाषा चिण्णमुलोः ॥ ६९ ॥ उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः ॥ ७० ॥ युजेरसमासे ॥ ७१ ॥ नपुंसकस्य झलचः ॥ ७२ ॥ इकोऽचि विभक्तौ ॥ ७३ ॥ तृतीयादिषु भाषितपुंस्कं पुंवद्गालवस्य ॥ ७४ ॥ अस्थिदधिसक्थ्यक्ष्णामनङुदात्तः ॥ ७५ ॥ छन्दस्यपि दृश्यते ॥ ७६ ॥ ई च द्विवचने ॥ ७७ ॥ नाभ्यस्ताच्छतुः ॥ ७८ ॥ वा नपुंसकस्य ॥ ७९ ॥ आच्छीनद्योर्नुम् ॥ ८० ॥ शप्श्यनोर्नित्यम् ॥ ८१ ॥ सावनडुहः ॥ ८२ ॥ दृक्स्ववःस्वतवसां छन्दसि ॥ ८३ ॥ दिव औत् ॥ ८४ ॥ पथिमथ्यृभुक्षामात् ॥ ८५ ॥ इतोत्सर्वनामस्थाने ॥ ८६ ॥ थोन्थः ॥ ८७ ॥ भस्य टेर्लोपः ॥ ८८ ॥ पुंसोऽसुङ् ॥ ८९ ॥ गोतो णित् ॥ ९० ॥ णलुत्तमो वा ॥ ९१ ॥ सख्युरसम्बुद्धौ ॥ ९२ ॥ अनङ् सौ ॥ ९३ ॥ ऋदुशनस्पुरुदंसोऽनेहसाञ्च ॥ ९४ ॥ तृज्वत्क्रोष्टुः ॥ ९५ ॥ स्त्रियाञ्च ॥ ९६ ॥ विभाषा तृतीयादिष्वचि ॥ ९७ ॥ चतुरनडुहोरामुदात्तः ॥ ९८ ॥ अम् सम्बुद्धौ ॥ ९९ ॥ ऋत इद्धातोः ॥ १०० ॥ उपधायाश्च ॥ १०१ ॥ उदोष्ठ्यपूर्वस्य ॥ १०२ ॥ बहुलं छन्दसि ॥ १०३ ॥ *

इति सप्तमाध्यायस्य प्रथमः पादः ॥

द्वितीयपादारम्भः ॥

सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु ॥ १ ॥ अतो ल्रान्तस्य ॥ २ ॥ वदव्रजहलन्तस्याचः ॥ ३ ॥ नेटि ॥ ४ ॥ ह्म्यन्तक्षणश्वसजागृणिश्व्येदिताम् ॥ ५ ॥ ऊर्णोतेर्विभाषा ॥ ६ ॥ अतो हलादेर्लघोः ॥ ७ ॥ नेड्वशि कृति ॥ ८ ॥ तितुत्रतथसिसुसरकसेषु च ॥ ९ ॥ एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् ॥ १० ॥ श्र्युकः किति

* पुवोरष्टाभ्यो लोपस्त रधिजभो शप्श्यनोरुपधायाश्लीणि ॥

॥ ११ ॥ सनि ग्रहगुहोश्च ॥ १२ ॥ कृसृभृवृस्तुद्रुस्रुश्रुवो लिटि ॥ १३ ॥ श्वीदितो निष्ठायाम् ॥ १४ ॥ यस्य विभाषा ॥ १५ ॥ आदितश्च ॥ १६ ॥ विभाषा भावादिकर्म्मणोः ॥ १७ ॥ क्षुब्धस्वान्तध्वान्तलग्नम्लिष्टविरिब्धफाण्टबाढानि मन्थमनस्तमः सक्ताविस्पष्टस्वरानायासभृशेषु ॥ १८ ॥ धृषिशसी वैयात्ये ॥ १९ ॥ दृढः स्थूलबलयोः ॥ २० ॥ प्रभौ परिवृढः ॥ २१ ॥ कृच्छ्रगहनयोः कषः ॥ २२ ॥ घुषिरविशब्दने ॥ २३ ॥ अर्देः संनिविभ्यः ॥ २४ ॥ अभेश्चाविदूर्ये ॥ २५ ॥ णेरध्ययने वृत्तम् ॥ २६ ॥ वा दान्तशान्तपूर्णदस्तस्पष्टछन्नज्ञप्ताः ॥ २७ ॥ रुष्यमत्वरसंघुषास्वनाम् ॥ २८ ॥ हृषेर्लोमसु ॥ २९ ॥ अपचितश्च ॥ ३० ॥ ह्रु ह्वरेश्छन्दसि ॥ ३१ ॥ अपरिह्वृताश्च ॥ ३२ ॥ सोमे ह्वरितः ॥ ३३ ॥ ग्रसितस्कभितस्तभितोत्तभितचत्तविकस्ताविशस्तृशंस्तृशास्तृतरुतृतरूतृवरुतृवरूतृवरूत्रीरुज्ज्वलितिक्षरितिक्षमितिवमित्यमितीति च ॥ ३४ ॥ आर्द्धधातुकस्येड्वलादेः ॥ ३५ ॥ स्नुक्रमोरनात्मनेपदनिमित्ते ॥ ३६ ॥ ग्रहोऽलिटि दीर्घः ॥ ३७ ॥ वृतो वा ॥ ३८ ॥ न लिङि ॥ ३९ ॥ सिचि च परस्मैपदेषु ॥ ४० ॥ इट् सनि वा ॥ ४१ ॥ लिङ्सिचोरात्मनेपदेषु ॥ ४२ ॥ ऋतश्च संयोगादेः ॥ ४३ ॥ स्वरतिसूतिसूयतिधूञूदितो वा ॥ ४४ ॥ रधादिभ्यश्च ॥ ४५ ॥ निरः कुषः ॥ ४६ ॥ इण् निष्ठायाम् ॥ ४७ ॥ तीषसहलुभरुषरिषः ॥ ४८ ॥ सनीवन्तर्द्धभ्रस्जदम्भुश्रिस्वृयूर्णुभरज्ञपिसनाम् ॥ ४९ ॥ क्लिशः क्त्वानिष्ठयोः ॥ ५० ॥ पूङश्च ॥ ५१ ॥ वसतिक्षुधोरिट् ॥ ५२ ॥ अञ्चेः पूजायाम् ॥ ५३ ॥ लुभो विमोहने ॥ ५४ ॥ जॄव्रश्च्योः क्त्वि ॥ ५५ ॥ उदितो वा ॥ ५६ ॥ सेसिचि कृतचृतछृदतृदनृतः ॥ ५७ ॥ गमेरिट् परस्मैपदेषु ॥ ५८ ॥ न वृद्भ्यश्चतुर्भ्यः ॥ ५९ ॥ तासि च क्लृपः ॥ ६० ॥ अचस्तास्वत्थल्यनिटो नित्यम् ॥ ६१ ॥ उपदेशेऽत्वतः ॥ ६२ ॥ ऋतो भारद्वाजस्य ॥ ६३ ॥ बभूथाततन्थजगृम्भववर्थेति निगमे ॥ ६४ ॥ विभाषा सृजिदृशोः ॥ ६५ ॥ इडत्यर्तिव्ययतीनाम् ॥ ६६ ॥ वस्वेकाजाद्घसाम् ॥ ६७ ॥ विभाषा गमहनविदविशाम् ॥ ६८ ॥ सनिंससनिवांसम् ॥ ६९ ॥ ऋद्धनोः स्ये ॥ ७० ॥ अञ्जेः सिचि ॥ ७१ ॥ स्तुसुधूञ्भ्यः परस्मैपदेषु

॥ ७२ ॥ यमरमनमातां सक्च ॥ ७३ ॥ स्मिपूङ्रञ्ज्वशां सनि ॥ ७४ ॥ क्रिरश्च पञ्चभ्यः ॥ ७५ ॥ रुदादिभ्यः सार्वधातुके ॥ ७६ ॥ ईशः से ॥ ७७ ॥ ईडजनोर्ध्वे च ॥ ७८ ॥ लिङः सलोपोऽनन्त्यस्य ॥ ७९ ॥ अतो येयः ॥ ८० ॥ आतो ङितः ॥ ८१ ॥ आने मुक् ॥ ८२ ॥ ईदासः ॥ ८३ ॥ अष्टन आ विभक्तौ ॥ ८४ ॥ रायो हलि ॥ ८५ ॥ युष्मदस्मदोरनादेशे ॥ ८६ ॥ द्वितीयायाञ्च ॥ ८७ ॥ प्रथमायाश्च द्विवचने भाषायाम् ॥ ८८ ॥ योऽचि ॥ ८९ ॥ शेषे लोपः ॥ ९० ॥ मपर्य्यन्तस्य ॥ ९१ ॥ युवावौ द्विवचने ॥ ९२ ॥ यूयवयौ जसि ॥ ९३ ॥ त्वाहौ सौ ॥ ९४ ॥ तुभ्यमह्यौ ङयि ॥ ९५ ॥ तवममौ ङसि ॥ ९६ ॥ त्वमावेकवचने ॥ ९७ ॥ प्रत्ययोत्तरपदयोश्च ॥ ९८ ॥ त्रिचतुरोः स्त्रियां तिसृचतसृ ॥ ९९ ॥ अचि र ऋतः ॥ १०० ॥ जराया जरसन्यतरस्याम् ॥ १०१ ॥ त्यदादीनामः ॥ १०२ ॥ किमः कः ॥ १०३ ॥ कु तिहोः ॥ १०४ ॥ क्वाति ॥ १०५ ॥ तदोः सः सावनन्त्ययोः ॥ १०६ ॥ अदस औ सुलोपश्च ॥ १०७ ॥ इदमो मः ॥ १०८ ॥ दश्च ॥ १०९ ॥ यः सौ ॥ ११० ॥ इदोय् पुंसि ॥ १११ ॥ अनाप्यकः ॥ ११२ ॥ हलि लोपः ॥ ११३ ॥ मृजेर्वृद्धिः ॥ ११४ ॥ अचो ञ्णिति ॥ ११५ ॥ अत उपधायाः ॥ ११६ ॥ तद्धितेष्वचामादेः ॥ ११७ ॥ किति च ॥ ११८ ॥ *

इति सप्तमाध्यायस्य द्वितीयः पादः ॥

तृतीयपादारम्भः ॥

देविकाशिंशपादित्यवाड्दीर्घसत्रश्रेयसामात् ॥ १ ॥ केकयमित्रयुप्रलयानां यादेरियः ॥ २ ॥ न य्वाभ्यां पदान्ताभ्यां पूर्वौ तु ताभ्यामैच् ॥ ३ ॥ द्वारादीनाञ्च ॥ ४ ॥ न्यग्रोधस्य च केवलस्य ॥ ५ ॥ न कर्मव्यतिहारे ॥ ६ ॥ स्वागतादीनाञ्च ॥ ७ ॥ श्वादेरिञि ॥ ८ ॥ पदान्तस्यान्यतरस्याम् ॥ ९ ॥ उत्तरपदस्य ॥ १० ॥ अवयवादृतोः ॥ ११ ॥ सुसर्वार्द्धाज्जनपदस्य ॥ १२ ॥ दिशोमद्राणाम् ॥ १३ ॥ प्राचां ग्रामनगराणाम् ॥ १४ ॥ संख्यायाः संवत्सरसङ्ख्यस्य च ॥ १५ ॥ वर्षस्याभविष्यति ॥ १६ ॥ परिमाणान्तस्यासञ्ज्ञाशा-

---

* ञ्चिञ्चि प्रभाविट्सन्यचस्तास्वदातो जराया अष्टादश ।

ण्योः ॥ १७ ॥ जे प्रोष्ठपदानाम् ॥ १८ ॥ हृद्भगसिन्ध्वन्ते पूर्वपदस्य च ॥ १९ ॥ अनुशतिकादीनाञ्च ॥ २० ॥ देवताद्वन्द्वे च ॥ २१ ॥ नेन्द्रस्य परस्य ॥ २२ ॥ दीर्घाच्च वरुणस्य ॥ २३ ॥ प्राचां नगरान्ते ॥ २४ ॥ जङ्गलधेनुवलजान्तस्य विभाषितमुत्तरम् ॥ २५ ॥ अर्द्धात्परिमाणस्य पूर्वस्य तु वा ॥ २६ ॥ नातः परस्य ॥ २७ ॥ प्रवाहणस्य ढे ॥ २८ ॥ तत्प्रत्ययस्य च ॥ २९ ॥ नञः शुचीश्वरक्षेत्रज्ञकुशलनिपुणानाम् ॥ ३० ॥ यथातथयथापुरयोः पर्य्यायेण ॥ ३१ ॥ हनस्तोचिण्णलोः ॥ ३२ ॥ आतो युक् चिण् कृतोः ॥ ३३ ॥ नोदात्तोपदेशस्य मान्तस्यानाचमेः ॥ ३४ ॥ जनिवध्योश्च ॥ ३५ ॥ अर्तिह्रीव्लीरीक्नूयीक्ष्माय्यातां पुग् णौ ॥ ३६ ॥ शाच्छासाह्वाव्यावेपां युक् ॥ ३७ ॥ वो विधूनने जुक् ॥ ३८ ॥ लीलोर्नुग्लुकावन्यतरस्यां स्नेहनिपातने ॥ ३९ ॥ भियो हेतुभये षुक् ॥ ४० ॥ स्फायो वः ॥ ४१ ॥ शदेरगतौ तः ॥ ४२ ॥ रुहः पोऽन्यतरस्याम् ॥ ४३ ॥ प्रत्ययस्थात्कात्पूर्वस्याऽत इदाप्यसुपः ॥ ४४ ॥ न यासयोः ॥ ४५ ॥ उदीचामातः स्थाने यकपूर्वायाः ॥ ४६ ॥ भस्त्रैषाजाज्ञाद्वास्वानञ्पूर्वाणामपि ॥ ४७ ॥ अभाषितपुंस्काच्च ॥ ४८ ॥ आदाचार्य्याणाम् ॥ ४९ ॥ ठस्येकः ॥ ५० ॥ इसुसुक्तान्तात्कः ॥ ५१ ॥ चजोः कु घिण्ण्यतोः ॥ ५२ ॥ न्यङ्क्वादीनाञ्च ॥ ५३ ॥ हो हन्तेर्ञ्णिन्नेषु ॥ ५४ ॥ अभ्यासाच्च ॥ ५५ ॥ हेरचङि ॥ ५६ ॥ सन्लिटोर्जेः ॥ ५७ ॥ विभाषा चेः ॥ ५८ ॥ न क्वादेः ॥ ५९ ॥ अजिव्रज्योश्च ॥ ६० ॥ भुजन्युब्जौ पाण्युपतापयोः ॥ ६१ ॥ प्रयाजानुयाजौ यज्ञाङ्गे ॥ ६२ ॥ वञ्चेर्गतौ ॥ ६३ ॥ ओक उचः के ॥ ६४ ॥ ण्य आवश्यके ॥ ६५ ॥ यजयाचरुचप्रवचर्चश्च ॥ ६६ ॥ वचोऽशब्दसञ्ज्ञायाम् ॥ ६७ ॥ प्रयोज्यनियोज्यौ शक्यार्थे ॥ ६८ ॥ भोज्यं भक्ष्ये ॥ ६९ ॥ घोर्लोपो लेटि वा ॥ ७० ॥ ओतः श्यनि ॥ ७१ ॥ क्सस्याचि ॥ ७२ ॥ लुग्वा दुहदिहलिहगुहामात्मनेपदे दन्त्ये ॥ ७३ ॥ शमामष्टानां दीर्घः श्यनि ॥ ७४ ॥ ष्ठिवुक्लमुचमां शिति ॥ ७५ ॥ क्रमः परस्मैपदेषु ॥ ७६ ॥ इषुगमियमां छः ॥ ७७ ॥ पाघ्राध्मास्थाम्नादाण्दृश्यर्त्तिसर्त्तिशदसदां पिबजिघ्रधमतिष्ठमनयच्छपश्यर्च्छधौशीयसीदाः ॥ ७८ ॥ ज्ञाजनोर्जा

॥ ७९ ॥ ष्वादीनां ह्रस्वः ॥ ८० ॥ मीनातेर्निगमे ॥ ८१ ॥ मिदेर्गुणः ॥ ८२ ॥ जुसि च ॥ ८३ ॥ सार्वधातुकार्द्धधातुकयोः ॥ ८४ ॥ जाग्रोऽविचिण्णल्ङित्सु ॥ ८५ ॥ पुगन्तलघूपधस्य च ॥ ८६ ॥ नाभ्यस्तस्याचि पिति सार्वधातुके ॥ ८७ ॥ भूसुवोस्तिङि ॥ ८८ ॥ उतो वृद्धिर्लुकि हलि ॥ ८९ ॥ ऊर्णोतेर्विभाषा ॥ ९० ॥ गुणोऽपृक्ते ॥ ९१ ॥ तृणह इम् ॥ ९२ ॥ ब्रुव ईट् ॥ ९३ ॥ यङो वा ॥ ९४ ॥ तुरुस्तुशम्यमः सार्वधातुके ॥ ९५ ॥ अस्तिसिचोऽपृक्ते ॥ ९६ ॥ बहुलञ्छन्दसि ॥ ९७ ॥ रुदश्च पञ्चभ्यः ॥ ९८ ॥ अड् गार्ग्यगालवयोः ॥ ९९ ॥ अदः सर्वेषाम् ॥ १०० ॥ अतो दीर्घो यञि ॥ १०१ ॥ सुपि च ॥ १०२ ॥ बहुवचने झल्येत् ॥ १०३ ॥ ओसि च ॥ १०४ ॥ आङि चापः ॥ १०५ ॥ सम्बुद्धौ च ॥ १०६ ॥ अम्बार्थनद्योर्ह्रस्वः ॥ १०७ ॥ ह्रस्वस्य गुणः ॥ १०८ ॥ जसि च ॥ १०९ ॥ ऋतो ङि सर्वनामस्थानयोः ॥ ११० ॥ घेर्ङिति ॥ १११ ॥ आण् नद्याः ॥ ११२ ॥ याडापः ॥ ११३ ॥ सर्वनाम्नस्याड्ढ्रस्वश्च ॥ ११४ ॥ विभाषा द्वितीयातृतीयाभ्याम् ॥ ११५ ॥ ङेराम्नद्याम्नीभ्यः ॥ ११६ ॥ इदुद्भ्याम् ॥ ११७ ॥ औत् ॥ ११८ ॥ अच्च घेः ॥ ११९ ॥ आङो नाऽस्त्रियाम् ॥ १२० ॥*

इति सप्तमाध्यायस्य तृतीयः पादः ॥

चतुर्थपादारम्भः ॥

णौ चङ्युपधाया ह्रस्वः ॥ १ ॥ नाग्लोपिशास्वृदिताम् ॥ २ ॥ भ्राजभासभाषदीपजीवमीलपीडामन्यतरस्याम् ॥ ३ ॥ लोपः पिबतेरीच्चाभ्यासस्य ॥ ४ ॥ तिष्ठतेरित् ॥ ५ ॥ जिघ्रतेर्वा ॥ ६ ॥ उर्ऋत् ॥ ७ ॥ नित्यं छन्दसि ॥ ८ ॥ दयतेर्दिगि लिटि ॥ ९ ॥ ऋतश्च संयोगादेर्गुणः ॥ १० ॥ ऋच्छत्यॄताम् ॥ ११ ॥ शॄदॄप्रां ह्रस्वो वा ॥ १२ ॥ केऽणः ॥ १३ ॥ न कपि ॥ १४ ॥ आपोऽन्यतरस्याम् ॥ १५ ॥ ऋदृशोऽङि गुणः ॥ १६ ॥ अस्यतेस्थुक् ॥ १७ ॥ श्वयतेरः ॥ १८ ॥ पतः पुम्

* देविका देवता स्फायो भुजन्युब्जौ मीनातेरंतोर्दीर्घो विंशतिः ॥

॥ १९ ॥ वच उम् ॥ २० ॥ शीङः सार्वधातुके गुणः ॥ २१ ॥ अयङ्यि क्ङिति ॥ २२ ॥ उपसर्गाद्ध्रस्व ऊहतेः ॥ २३ ॥ एतेर्लिङि ॥ २४ ॥ अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः ॥ २५ ॥ च्वौ च ॥ २६ ॥ रीङृतः ॥ २७ ॥ रिङ् शयग्लिङ्क्षु ॥ २८ ॥ गुणोऽर्त्तिसंयोगाद्योः ॥ २९ ॥ यङि च ॥ ३० ॥ ई घ्राध्मोः ॥ ३१ ॥ अस्य च्वौ ॥ ३२ ॥ क्यचि च ॥ ३३ ॥ अशनायोदन्यधनायाबुभुक्षापिपासागर्द्धेषु ॥ ३४ ॥ न छन्दस्यपुत्रस्य ॥ ३५ ॥ दुरस्युर्द्रविणस्युर्वृषण्यतिरिषण्यति ॥ ३६ ॥ अश्वाघस्यात् ॥ ३७ ॥ देवसुम्नयोर्यजुषि काठके ॥ ३८ ॥ कव्यध्वरपृतनस्यर्चि लोपः ॥ ३९ ॥ द्यतिस्यतिमास्थामित्ति किति ॥ ४० ॥ शाछोरन्यतरस्याम् ॥ ४१ ॥ दधातेर्हिः ॥ ४२ ॥ जहातेश्च क्त्वि ॥ ४३ ॥ विभाषा छन्दसि ॥ ४४ ॥ सुधितवसुधितनेमधितधिष्वधिषीय च ॥ ४५ ॥ दो दद् घोः ॥ ४६ ॥ अच उपसर्गात्तः ॥ ४७ ॥ अपो भि ॥ ४८ ॥ सः स्यार्द्धधातुके ॥ ४९ ॥ तासस्त्योर्लोपः ॥ ५० ॥ रि च ॥ ५१ ॥ ह एति ॥ ५२ ॥ यीवर्णयोर्दीधीवेव्योः ॥ ५३ ॥ सनिमीमाघुरभलभशकपतपदामच इस् ॥ ५४ ॥ आप्ज्ञप्यृधामीत् ॥ ५५ ॥ दम्भ इच्च ॥ ५६ ॥ मुचोऽकर्मकस्य गुणो वा ॥ ५७ ॥ अत्र लोपोऽभ्यासस्य ॥ ५८ ॥ ह्रस्वः ॥ ५९ ॥ हलादिः शेषः ॥ ६० ॥ शर्पूर्वाः खयः ॥ ६१ ॥ कुहोश्चुः ॥ ६२ ॥ न कवतेर्यङि ॥ ६३ ॥ कृषेश्छन्दसि ॥ ६४ ॥ दाधर्तिदर्द्धर्तिदर्द्धर्षिबोभूतुतेतिक्तेऽलर्ष्यापनीफणत्संसनिष्यदत्करिक्रत्कनिक्रदद्भरिभ्रद्दविध्वतो दविद्युतत्तरित्रतः सरीसृपतं वरीवृजन्मर्मृज्यागनीगन्तीति च ॥ ६५ ॥ उरत् ॥ ६६ ॥ द्युतिस्वाप्योः सम्प्रसारणम् ॥ ६७ ॥ व्यथो लिटि ॥ ६८ ॥ दीर्घ इणः किति ॥ ६९ ॥ अत आदेः ॥ ७० ॥ तस्मान्नुड् द्विहलः ॥ ७१ ॥ अश्नोतेश्च ॥ ७२ ॥ भवतेरः ॥ ७३ ॥ ससूवेति निगमे ॥ ७४ ॥ निजां त्रयाणां गुणः श्लौ ॥ ७५ ॥ भृञामित् ॥ ७६ ॥ अर्त्तिपिपर्त्योश्च ॥ ७७ ॥ बहुलं छन्दसि ॥ ७८ ॥ सन्यतः ॥ ७९ ॥ ओः पुयण्ज्यपरे ॥ ८० ॥ स्रवतिशृणोतिद्रवतिप्रवतिप्लवतिच्यवतीनां वा ॥ ८१ ॥ गुणो यङ्लुकोः ॥ ८२ ॥ दीर्घोऽकितः ॥ ८३ ॥ नीग्वञ्चुस्रंसुध्वंसुभ्रंसुकसपतपदस्कन्दाम् ॥ ८४ ॥ नुगतोऽनुनासिकान्तस्य ॥ ८५ ॥ जपजभदहदशभञ्जपशाश्च ॥ ८६ ॥

चरफलोश्च ॥ ८७ ॥ उत्परस्यातः ॥ ८८ ॥ ति च ॥ ८९ ॥ रीगृदुपधस्य च ॥ ९० ॥ रुग्रिकौ च लुकि ॥ ९१ ॥ ऋतश्च ॥ ९२ ॥ सन्वल्लघुनि चङ्परेऽनग्लोपे ॥ ९३ ॥ दीर्घो लघोः ॥ ९४ ॥ अत्स्मृदृत्वरप्रथम्रदस्तृस्पशाम् ॥ ९५ ॥ विभाषा वेष्टिचेष्टयोः ॥ ९६ ॥ ई च गणः ॥ ९७ ॥ *

इति सप्तमाध्यायस्य चतुर्थः पादः ॥

सप्तमाध्यायश्च समाप्तः ॥ ७ ॥

---

* णौच शीङः शाच्छोश्शर्पूर्वाः स्रवति सप्तदश ॥

अथाष्टमाऽध्यायारम्भः ॥

तत्र प्रथमपादारम्भः ॥

सर्वस्य द्वे ॥ १ ॥ तस्य परमाम्रेडितम् ॥ २ ॥ अनुदात्तञ्च ॥ ३ ॥ नित्यवीप्सयोः ॥ ४ ॥ परेर्वर्ज्जने ॥ ५ ॥ प्रसमुपोदः पादपूरणे ॥ ६ ॥ उपर्य्यध्यधसः सामीप्ये ॥ ७ ॥ वाक्यादेरामन्त्रितस्यासूयासम्मतिकोपकुत्सनभर्त्सनेषु ॥ ८ ॥ एकं बहुव्रीहिवत् ॥ ९ ॥ आबाधे च ॥ १० ॥ कर्मधारयवदुत्तरेषु ॥ ११ ॥ प्रकारे गुणवचनस्य ॥ १२ ॥ अकृच्छ्रे प्रियसुखयोरन्यतरस्याम् ॥ १३ ॥ यथास्वे यथायथम् ॥ १४ ॥ द्वन्द्वं रहस्यमर्य्यादावचनव्युत्क्रमणयज्ञपात्रप्रयोगाऽभिव्यक्तिषु ॥ १५ ॥ पदस्य ॥ १६ ॥ पदात् ॥ १७ ॥ अनुदात्तंसर्वमपादादौ ॥ १८ ॥ आमन्त्रितस्य च ॥ १९ ॥ युष्मदस्मदोः षष्ठीचतुर्थीद्वितीयास्थयोर्वान्नावौ ॥ २० ॥ बहुवचनस्य वस्नसौ ॥ २१ ॥ तेमयावेकवचनस्य ॥ २२ ॥ त्वामौ द्वितीयायाः ॥ २३ ॥ न च वाहाहैवयुक्ते ॥ २४ ॥ पश्यार्थैश्चानालोचने ॥ २५ ॥ सपूर्वायाः प्रथमाया विभाषा ॥ २६ ॥ तिङो गोत्रादीनि कुत्सनाभीक्ष्णयोः ॥ २७ ॥ तिङ्ङतिङः ॥ २८ ॥ न लुट् ॥ २९ ॥ निपातैर्यद्यदिहन्तकुविन्नेच्चेच्चण्कच्चिद्यत्रयुक्तम् ॥ ३० ॥ नह प्रत्यारम्भे ॥ ३१ ॥ सत्यम्प्रश्ने ॥ ३२ ॥ अङ्गाप्रातिलोम्ये ॥ ३३ ॥ हि च ॥ ३४ ॥ छन्दस्यऽनेकमपि साकाङ्क्षम् ॥ ३५ ॥ यावद्यथाभ्याम् ॥ ३६ ॥ पूजायां नानन्तरम् ॥ ३७ ॥ उपसर्गव्यपेतञ्च ॥ ३८ ॥ तुपश्यपश्यताहैः पूजायाम् ॥ ३९ ॥ अहो च ॥ ४० ॥ शेषे विभाषा ॥ ४१ ॥ पुरा चपरीप्सायाम् ॥ ४२ ॥ नन्वित्यनुज्ञैषणायाम् ॥ ४३ ॥ किं क्रिया प्रश्नेनुपसर्गमप्रतिषिद्धम् ॥ ४४ ॥ लोपे विभाषा ॥ ४५ ॥ एहि

मन्ये प्रहासे लृट् ॥ ४६ ॥ जात्वपूर्वम् ॥ ४७ ॥ किंवृत्तञ्च चिदुत्तरम् ॥ ४८ ॥ आहो उताहो चाऽनन्तरम् ॥ ४९ ॥ शेषे विभाषा ॥ ५० ॥ गत्यर्थलोटा लृण् न चेत्कारकं सर्वान्यत् ॥ ५१ ॥ लोट् च ॥ ५२ ॥ विभाषितं सोपसर्गमनुत्तमम् ॥ ५३ ॥ हन्त च ॥ ५४ ॥ आम एकान्तरमामन्त्रितमनन्तिके ॥ ५५ ॥ यद्धि-तु परं छन्दसि ॥ ५६ ॥ चनचिदिवगोत्रादितद्धिताऽम्रेडितेष्वगतेः ॥ ५७ ॥ चा-दिषु च ॥ ५८ ॥ चवायोगे प्रथमा ॥ ५९ ॥ हेति क्षियायाम् ॥ ६० ॥ अहेति विनियोगे च ॥ ६१ ॥ चाहलोप एवेत्यवधारणम् ॥ ६२ ॥ चादिलोपे विभाषा ॥ ६३ ॥ वैवावेति च च्छन्दसि ॥ ६४ ॥ एकान्याभ्यां समर्थाभ्याम् ॥ ६५ ॥ यद्वृत्तान्नित्यम् ॥ ६६ ॥ पूजनात्पूजितमनुदात्तं काष्ठादिभ्यः ॥ ६७ ॥ सगति-रपि तिङ् ॥ ६८ ॥ कुत्सने च सुप्यगोत्रादौ ॥ ६९ ॥ गतिर्गतौ ॥ ७० ॥ तिङि चोदात्तवति ॥ ७१ ॥ आमन्त्रितं पूर्वमविद्यमानवत् ॥ ७२ ॥ नामन्त्रिते समाना-धिकरणे सामान्यवचनम् ॥ ७३ ॥ विभाषितं विशेषवचने ॥ ७४ ॥ *

इत्यष्टमाध्यायस्य प्रथमः पादः ॥

द्वितीयपादारम्भः ॥

पूर्वत्रासिद्धम् ॥ १ ॥ नलोपः सुप्स्वरसंज्ञातुग्विधिषु कृति ॥ २ ॥ नमुने ॥ ३ ॥ उदात्तस्वरितयोर्यणः स्वरितोऽनुदात्तस्य ॥ ४ ॥ एकादेश उदात्तेनोदात्तः ॥ ५ ॥ स्वरितो वाऽनुदात्ते पदादौ ॥ ६ ॥ न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य ॥ ७ ॥ नङि सम्बुद्ध्योः ॥ ८ ॥ मादुपधायाश्च मतोर्वोऽयवादिभ्यः ॥ ९ ॥ झयः ॥ १० ॥ संज्ञायाम् ॥ ११ ॥ आसन्दीवदष्ठीवच्चक्रीवत्कक्षीवद्रुमण्वच्चर्मण्वती ॥ १२ ॥ उदन्वानुदधौ च ॥ १३ ॥ राजन्वान् सौराज्ये ॥ १४ ॥ छन्दसीरः ॥ १५ ॥ अनो नुट् ॥ १६ ॥ नाद् घस्य ॥ १७ ॥ कृपो रो लः ॥ १८ ॥ उपसर्गस्यायतौ

* सर्वस्य बहुवचनशेषे अहेति चतुर्दश ॥

॥ १९ ॥ ग्रो यङि ॥ २० ॥ अचि विभाषा ॥ २१ ॥ परेश्च घाङ्कयोः ॥ २२ ॥ संयोगान्तस्य लोपः ॥ २३ ॥ रात्सस्य ॥ २४ ॥ धि च ॥ २५ ॥ झलो झलि ॥ २६ ॥ ह्रस्वादङ्गात् ॥ २७ ॥ इट ईटि ॥ २८ ॥ स्कोः संयोगाद्योरन्ते च ॥ २९ ॥ चोः कुः ॥ ३० ॥ हो ढः ॥ ३१ ॥ दादेर्धातोर्घः ॥ ३२ ॥ वा द्रुहमुहष्णुहष्णिहाम् ॥ ३३ ॥ नहो धः ॥ ३४ ॥ आहस्थः ॥ ३५ ॥ व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः ॥ ३६ ॥ एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः ॥ ३७ ॥ दधस्तथोश्च ॥ ३८ ॥ झलां जशोन्ते ॥ ३९ ॥ झषस्तथोर्धोऽधः ॥ ४० ॥ षढोः कः सि ॥ ४१ ॥ रदाभ्यान्निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः ॥ ४२ ॥ संयोगादेरातो धातोर्यण्वतः ॥ ४३ ॥ ल्वादिभ्यः ॥ ४४ ॥ ओदितश्च ॥ ४५ ॥ क्षियो दीर्घात् ॥ ४६ ॥ श्योऽस्पर्शे ॥ ४७ ॥ अञ्चोऽनपादाने ॥ ४८ ॥ दिवो विजिगीषायाम् ॥ ४९ ॥ निर्वाणोऽवाते ॥ ५० ॥ शुषः कः ॥ ५१ ॥ पचो वः ॥ ५२ ॥ क्षायो मः ॥ ५३ ॥ प्रस्त्योऽन्यतरस्याम् ॥ ५४ ॥ अनुपसर्गात्फुल्लक्षीवकृशोल्लाघाः ॥ ५५ ॥ नुदविदोन्दत्राघाह्रीभ्योऽन्यतरस्याम् ॥ ५६ ॥ न ध्याख्यापॄमूर्च्छिमदाम् ॥ ५७ ॥ वित्तोभोगप्रत्यययोः ॥ ५८ ॥ भित्तं शकलम् ॥ ५९ ॥ ऋणमाऽधमर्ण्ये ॥ ६० ॥ नसत्तनिषत्ताऽनुत्तप्रतूर्तसूर्तगूर्तानि छन्दसि ॥ ६१ ॥ क्विन्प्रत्ययस्य कुः ॥ ६२ ॥ नशेर्वा ॥ ६३ ॥ मो नो धातोः ॥ ६४ ॥ म्वोश्च ॥ ६५ ॥ ससजुषो रुः ॥ ६६ ॥ अवयाः श्वेतवा पुरोडाश्च ॥ ६७ ॥ अहन् ॥ ६८ ॥ रोऽसुपि ॥ ६९ ॥ अम्नरूधरवरित्युभयथा छन्दसि ॥ ७० ॥ भुवश्च महाव्याहृतेः ॥ ७१ ॥ वसुस्रंसुध्वंस्वनडुहां दः ॥ ७२ ॥ तिप्यनस्तेः ॥ ७३ ॥ सिपि धातोरुर्वा ॥ ७४ ॥ दश्च ॥ ७५ ॥ र्वोरुपधाया दीर्घ इकः ॥ ७६ ॥ हलि च ॥ ७७ ॥ उपधायाञ्च ॥ ७८ ॥ न भकुर्छुराम् ॥ ७९ ॥ अदसोऽसेर्दादुदोमः ॥ ८० ॥ एत ईद्बहुवचने ॥ ८१ ॥ वाक्यस्य टेः प्लुत उदात्तः ॥ ८२ ॥ प्रत्यभिवादेऽशूद्रे ॥ ८३ ॥ दूराद्धूते च ॥ ८४ ॥ हैहेप्रयोगे हैहयोः ॥ ८५ ॥ गुरोरनृतोऽनन्त्यस्याप्येकैकस्य प्राचाम् ॥ ८६ ॥ ओमभ्यादाने ॥ ८७ ॥ ये यज्ञकर्मणि ॥ ८८ ॥ प्रणवष्टेः ॥ ८९ ॥ याज्यान्तः ॥ ९० ॥ ब्रूहिप्रेष्यश्रौषड्वौष-

डावहानामादेः ॥ ९१ ॥ अग्नीत्प्रेषणे परस्य च ॥ ९२ ॥ विभाषा पृष्टप्रति-वचने हेः ॥ ९३ ॥ निगृह्यानुयोगे च ॥ ९४ ॥ आम्रेडितम्भर्त्सने ॥ ९५ ॥ अङ्गयुक्तन्तिङाकाङ्क्षम् ॥ ९६ ॥ विचार्यमाणानाम् ॥ ९७ ॥ पूर्वन्तु भाषायाम् ॥ ९८ ॥ प्रतिश्रवणे च ॥ ९९ ॥ अनुदात्तं प्रश्नान्ताभिपूजितयोः ॥ १०० ॥ चिदिति चोपमार्थे प्रयुज्यमाने ॥ १०१ ॥ उपरिस्विदासीदिति च ॥ १०२ ॥ स्वरितमाम्रेडितेऽसूयासम्मतिकोपकुत्सनेषु ॥ १०३ ॥ क्षियाशीः प्रैषेषु तिङाका-ङ्क्षम् ॥ १०४ ॥ अनन्त्यस्यापि प्रश्नाख्यानयोः ॥ १०५ ॥ प्लुतावैच इदुतौ ॥ १०६ ॥ एचोऽप्रगृह्यस्यादूराद्धूतेपूर्वस्यार्द्धस्याऽदुत्तरस्येदुतौ ॥ १०७ ॥ तयो-र्य्वावचि संहितायाम् ॥ १०८ ॥ *

इति अष्टमाध्यायस्य द्वितीयः पादः ॥

तृतीयपादारम्भः ॥

मतुवसो रु सम्बुद्धौ ॥ १ ॥ अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा ॥ २ ॥ आतोटि नित्यम् ॥ ३ ॥ अनुनासिकात्परोऽनुस्वारः ॥ ४ ॥ समः सुटि ॥ ५ ॥ पुमः खय्यम्परे ॥ ६ ॥ नश्छव्यप्रशान् ॥ ७ ॥ उभयथर्क्षु ॥ ८ ॥ दीर्घादटि समान-पादे ॥ ९ ॥ नॄन्पे ॥ १० ॥ स्वतवान् पायौ ॥ ११ ॥ कानाम्रेडिते ॥ १२ ॥ ढो ढे लोपः ॥ १३ ॥ रो रि ॥ १४ ॥ खरवसानयोर्विसर्जनीयः ॥ १५ ॥ रोः सुपि ॥ १६ ॥ भोभगोअघोअपूर्वस्य योऽशि ॥ १७ ॥ व्योर्लघुप्रयत्नतरः शाक-टायनस्य ॥ १८ ॥ लोपः शाकल्यस्य ॥ १९ ॥ ओतो गार्ग्यस्य ॥ २० ॥ उञि च पदे ॥ २१ ॥ हलि सर्वेषाम् ॥ २२ ॥ मोनुस्वारः ॥ २३ ॥ नश्चाऽपदा-न्तस्य झलि ॥ २४ ॥ मो राजि समः क्वौ ॥ २५ ॥ हे मपरे वा ॥ २६ ॥ नपरे नः ॥ २७ ॥ ङ्णोः कुक्टुक् शरि ॥ २८ ॥ डः सि धुट् ॥ २९ ॥ नश्च

* पूर्वत्राचि षढोर्नसत्तैतईचिदित्यष्टौ ॥

॥ ३० ॥ शि तुक् ॥ ३१ ॥ ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम् ॥ ३२ ॥ मय उञो वो वा ॥ ३३ ॥ विसर्जनीयस्य सः ॥ ३४ ॥ शर्परे विसर्जनीयः ॥ ३५ ॥ वा शरि ॥ ३६ ॥ कुप्वोः ≍ क ≍ पौ च ॥ ३७ ॥ सोऽपदादौ ॥ ३८ ॥ इणः षः ॥ ३९ ॥ नमस्पुरसोर्गत्योः ॥ ४० ॥ इदुदुपधस्य चाप्रत्ययस्य ॥ ४१ ॥ तिरसोऽन्यतरस्याम् ॥ ४२ ॥ द्विस्त्रिश्चतुरिति कृत्वोर्थे ॥ ४३ ॥ इसुसोः सामर्थ्ये ॥ ४४ ॥ नित्यं समासेनुत्तरपदस्थस्य ॥ ४५ ॥ अतः कृकमिकंसकुम्भपात्र-कुशाकर्णीष्वनव्ययस्य ॥ ४६ ॥ अधः शिरसी पदे ॥ ४७ ॥ कस्कादिषु च ॥ ४८ ॥ छन्दसि वाऽप्राम्रेडितयोः ॥ ४९ ॥ कः करत्करतिकृधिकृतेष्वनदितेः ॥ ५० ॥ पञ्चम्याः परावध्यर्थे ॥ ५१ ॥ पातौ च बहुलम् ॥ ५२ ॥ षष्ठ्याः पतिपुत्रपृष्ठपारपदपयस्पोषेषु ॥ ५३ ॥ इडाया वा ॥ ५४ ॥ अपदान्तस्य मूर्द्धन्यः ॥ ५५ ॥ सहेः साडः सः ॥ ५६ ॥ इण्कोः ॥ ५७ ॥ नुम्विसर्जनीयशर्व्यवा-येपि ॥ ५८ ॥ आदेशप्रत्यययोः ॥ ५९ ॥ शासिवसिघसीनाञ्च ॥ ६० ॥ स्तौ-तिण्योरेव षण्यभ्यासात् ॥ ६१ ॥ सः स्विदिस्वदिसहीनाञ्च ॥ ६२ ॥ प्राक्सिता-दड्व्यवायेपि ॥ ६३ ॥ स्थादिष्वभ्यासेन चाभ्यासस्य ॥ ६४ ॥ उपसर्गात्सुनो-तिसुवतिस्यतिस्तौतिस्तोभतिस्थासेनयसेधसिचसञ्जस्वञ्जाम् ॥ ६५ ॥ सदिर-प्रतेः ॥ ६६ ॥ स्तम्भेः ॥ ६७ ॥ अवाच्चाऽलम्बनाऽविदूर्ययोः ॥ ६८ ॥ वेश्च-स्वनो भोजने ॥ ६९ ॥ परिनिविभ्यः सेवसितसयसिवुसहसुट्स्तुस्वञ्जाम् ॥ ७० ॥ सिवादीनां वाड्व्यवायेपि ॥ ७१ ॥ अनुविपर्यभिनिभ्यः स्यन्दतेरप्राणिषु ॥ ७२ ॥ वेः स्कन्देरनिष्ठायाम् ॥ ७३ ॥ परेश्च ॥ ७४ ॥ परिस्कन्दः प्राच्यभ-रतेषु ॥ ७५ ॥ स्फुरतिस्फुलत्योर्निर्निविभ्यः ॥ ७६ ॥ वेः स्कभ्नातेर्नित्यम् ॥ ७७ ॥ इणः षीध्वं लुङ्लिटां धोऽङ्गात् ॥ ७८ ॥ विभाषेटः ॥ ७९ ॥ समासेङ्गुलेः सः ॥ ८० ॥ भीरोः स्थानम् ॥ ८१ ॥ अग्नेः स्तुत्स्तोमसोमाः ॥ ८२ ॥ ज्योतिरा-युषः स्तोमः ॥ ८३ ॥ मातृपितृभ्यां स्वसा ॥ ८४ ॥ मातुपितुर्भ्यामन्यतरस्याम् ॥ ८५ ॥ अभिनिसः स्तनः शब्दसञ्ज्ञायाम् ॥ ८६ ॥ उपसर्गप्रादुर्भ्यामस्तिर्यच्परः ॥ ८७ ॥ सुविनिर्दुर्भ्यः सुपिसूतिसमाः ॥ ८८ ॥ निनदीभ्यां स्नातेः कौशले ॥ ८९ ॥

सूत्रं प्रतिष्णातम् ॥ ९० ॥ कपिष्ठलो गोत्रे ॥ ९१ ॥ प्रष्ठोऽग्रगामिनि ॥ ९२ ॥ वृत्तासनयोर्विष्टरः ॥ ९३ ॥ छान्दोनाम्नि च ॥ ९४ ॥ गवियुधिभ्यां स्थिरः ॥ ९५ ॥ विकुशमिपरिभ्यः स्थलम् ॥ ९६ ॥ अम्बाऽम्बगोभूमिसव्यापद्वित्रिकुशेकुशंकङ्गुमञ्जिपुञ्जिपरमेबर्हिर्दिव्यग्निभ्यः स्थः ॥ ९७ ॥ सुषामादिषु च ॥ ९८ ॥ एति संज्ञायामगात् ॥ ९९ ॥ नक्षत्राद्वा ॥ १०० ॥ ह्रस्वात्तादौ तद्धिते ॥ १०१ ॥ निसस्तपतावनासेवने ॥ १०२ ॥ युष्मत्तत्ततक्षुःष्वन्तः पादम् ॥ १०३ ॥ यजुष्येकेषाम् ॥ १०४ ॥ स्तुतस्तोमयोश्छन्दसि ॥ १०५ ॥ पूर्वपदात् ॥ १०६ ॥ सुञः ॥ १०७ ॥ सनोतेरनः ॥ १०८ ॥ सहेः पृतनर्त्ताभ्याञ्च ॥ १०९ ॥ नरपरसृपिसृजिस्पृशिस्पृहिसवनादीनाम् ॥ ११० ॥ सात्पदाद्योः ॥ १११ ॥ सिचो यङि ॥ ११२ ॥ सेधतेर्गतौ ॥ ११३ ॥ प्रतिस्तब्धनिस्तब्धौ च ॥ ११४ ॥ सोढः ॥ ११५ ॥ स्तम्भुसिवुसहां चङि ॥ ११६ ॥ सुनोतेः स्यसनोः ॥ ११७ ॥ सदेः परस्य लिटि ॥ ११८ ॥ निव्यभिभ्योऽड्व्यवाये वा छन्दसि ॥ ११९ ॥ *

इत्यष्टमाध्यायस्य तृतीयः पादः ॥

चतुर्थपादारम्भः ॥

रषाभ्यां नो णः समानपदे ॥ १ ॥ अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेपि ॥ २ ॥ पूर्वपदात् सञ्ज्ञायामगः ॥ ३ ॥ वनं पुरगामिश्रकासिध्रकासारिकाकोटराग्रेभ्यः ॥ ४ ॥ प्रनिरन्तः शरेक्षुप्लक्षाम्रकार्ष्यखदिरपीयूक्षाभ्यो सञ्ज्ञायामपि ॥ ५ ॥ विभाषौषधिवनस्पतिभ्यः ॥ ६ ॥ अह्नोऽदन्तात् ॥ ७ ॥ वाहनमाहितात् ॥ ८ ॥ पानं देशे ॥ ९ ॥ वा भावकरणयोः ॥ १० ॥ प्रातिपदिकान्तनुंविभक्तिषु च ॥ ११ ॥ एकाजुत्तरपदे णः ॥ १२ ॥ कुमति च ॥ १३ ॥ उपसर्गादसमासेपि णोपदेशस्य ॥ १४ ॥ हिनुमीना ॥ १५ ॥ आनि लोट् ॥ १६ ॥ नेर्गदनदपतपदघुमास्यतिह-

* मतुवसोरुम्भिचेदुद्धुपधस्य स्तौतिण्योर्मीरोर्ह्रस्वात्तादावेकोनविंशतिः ।



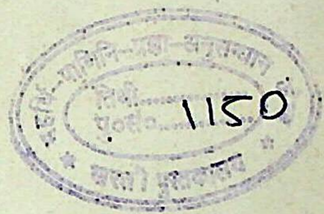
न्तियातिवातिद्रातिप्सातिवपतिवहतिशाम्यतिचिनोतिदेग्धिषु च ॥ १७ ॥ शेषे
विभाषाकखादावषान्त उपदेशे ॥ १८ ॥ अनितेरन्तः ॥ १९ ॥ उभौ साभ्या-
सस्य ॥ २० ॥ हन्तेरत्पूर्वस्य ॥ २१ ॥ वमोर्वा ॥ २२ ॥ अन्तरदेशे ॥ २३ ॥
अयनञ्च ॥ २४ ॥ छन्दस्यृदवग्रहात् ॥ २५ ॥ नश्च धातुस्थोरुषुभ्यः ॥ २६ ॥
उपसर्गाद्बहुलम् ॥ २७ ॥ कृत्यचः ॥ २८ ॥ णेर्विभाषा ॥ २९ ॥ हलश्चेजुप-
धात् ॥ ३० ॥ इजादेः सनुमः ॥ ३१ ॥ वा निंसनिक्षनिन्दाम् ॥ ३२ ॥ न भा-
भूपूकमिगमिप्यायीवेपाम् ॥ ३३ ॥ षात्पदान्तात् ॥ ३४ ॥ नशेः षान्तस्य ॥ ३५ ॥
पदान्तस्य ॥ ३६ ॥ पदव्यवायेऽपि ॥ ३७ ॥ क्षुभ्नादिषु च ॥ ३८ ॥ स्तोः श्चु-
नाश्चुः ॥ ३९ ॥ ष्टुना ष्टुः ॥ ४० ॥ न पदान्ताट्टोरनाम् ॥ ४१ ॥ तोः षि ॥ ४२ ॥
शात् ॥ ४३ ॥ यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा ॥ ४४ ॥ अचोरहाभ्यां द्वे
॥ ४५ ॥ अनचि च ॥ ४६ ॥ नादिन्याक्रोशेपुत्रस्य ॥ ४७ ॥ शरोचि ॥ ४८ ॥
त्रिप्रभृतिषु शाकटायनस्य ॥ ४९ ॥ सर्वत्र शाकल्यस्य ॥ ५० ॥ दीर्घादाचा-
र्याणाम् ॥ ५१ ॥ झलां जश् झशि ॥ ५२ ॥ अभ्यासे चर्च ॥ ५३ ॥ खरि
च ॥ ५४ ॥ वावसाने ॥ ५५ ॥ अणोऽप्रगृह्यस्यानुनासिकः ॥ ५६ ॥ अनुस्वार-
स्य ययि परसवर्णः ॥ ५७ ॥ वा पदान्तस्य ॥ ५८ ॥ तोर्लि ॥ ५९ ॥ उदः
स्थास्तम्भोः पूर्वस्य ॥ ६० ॥ झयो होऽन्यतरस्याम् ॥ ६१ ॥ शश्छोऽटि ॥ ६२ ॥
हलो यमां यमि लोपः ॥ ६३ ॥ झरो झरि सवर्णे ॥ ६४ ॥ उदात्तादनुदात्त-
स्य स्वरितः ॥ ६५ ॥ नोदात्तस्वरितोदयमगार्ग्यकाश्यपगालवानाम् ॥ ६६ ॥
अ, अ ॥ ६७ ॥ *

इत्यष्टमाध्यायस्य चतुर्थः पादः ॥

अष्टमाध्यायश्च समाप्तः ॥

समाप्तमिदं पाणिनीयाष्टकम् ॥

* रषाभ्यां हन्तेर्न पदान्तात्झयः सप्त ॥


1150